Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# केदार-बदरी यात्रा-दर्शन

डॉ० शिवानन्द नौटियाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# केदार-बदरी यात्रा-दर्शन

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc. No....568 (D)
Dated....10.9.09

डॉ० शिवानन्द नौटियाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Dr. R. L.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# KEDAR-BADRI YATRA-DARSHAN

by

Dr. Shivanand Nautiyal

मूल्य : पचास रुपये / संस्करण, १९९१ / प्रकाशक : सुलभ प्रकाशन, १७, अशोक मार्ग, लखनऊ (उ०प्र०)/मुद्रक : रूपाभ प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिन्हें
सम्पूर्ण विश्व महान् योगी के रूप में जानता है
और
जिन्होंने हिमालय की गोद में बसे
केदार-बद्री की पवित्र भूमि में जन्म लेकर
हिमालय का माथा ऊँचा किया है
उन्हीं
**परम योगी स्वामी राम**
**(रामनगर—ऋषिकेश हिमालय)**
**को**
सादर भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# निवेदन

केदार-बदरी, यमुनोत्तरी एवं गंगोत्तरी अंचल के प्रति अगाध श्रद्धा और आकर्षण रखने वाले अनेक प्रकृति-प्रेमियों का आग्रह था कि एक ऐसी पुस्तक होनी चाहिए जिसमें धार्मिक यात्रा का वर्णन तो हो ही, परन्तु उसमें पर्यटकों, ट्रैकरों, प्रकृति-प्रेमियों और सैलानियों के लिए पूर्ण जानकारी हो। यह पुस्तिका इस दिशा में एक लघु प्रयास है।

'केदार-बदरी यात्रा-दर्शन' की पुस्तिका को आपके हाथों में देखकर मुझे इसलिए भी प्रसन्नता हो रही है कि आप इस पुस्तिका के माध्यम से सम्पूर्ण केदारखंड के दर्शन कर सकेंगे। हिन्दू धर्मानुसार वामार्त्त यात्रा का महत्त्व बताया गया है। इसीलिए यात्रा-वर्णन हरिद्वार (हरद्वार) से प्रारम्भ कर यमुनोत्तरी गंगोत्तरी, केदारनाथ और बदरीनाथ तक किया गया है। धार्मिक यात्रियों के लिए जहां संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध करवाई गई है, वहां प्रकृति-प्रेमियों, पर्यटकों और सैलानियों के लिए भी पर्याप्त सूचनाएं यत्र-तत्र संग्रहीत हैं।

यह पुस्तिका आपके हाथों तक पहुंचाने में भाई श्री वीरेन्द्र कुमार, संचालक, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ का विशेष हाथ है। उन्हीं के निरन्तर आग्रह और केदार-बदरी अंचल के प्रति श्रद्धा भाव के फलस्वरूप ही यह पुस्तिका इतनी शीघ्रता से हिन्दी के आम पाठक तक पहुंच पा रही है। अतः इसका सारा श्रेय उन्हीं को देना मैं अपना पावन कर्तव्य समझता हूं।

और अब दूसरा संस्करण भी उन्हीं के सद्प्रयासों से आपके पास पहुंच रहा है। हम अपना सौभाग्य समझते हैं कि इस पुस्तिका को पाठकों ने अपनत्व प्रदान किया जिससे हम इसके दूसरे संस्करण को कुछ नई सूचनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

मुझे बड़े भाई श्री नंदकिशोर नौटियाल सम्पादक : हिन्दी ब्लिट्ज बम्बई का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सदैव मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त होता रहा है। अतः उनका आभार मानना भी, मैं अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूं।

अनेक कष्टों के समय भाई मनमोहन नौटियाल (जनरल मैनेजर प्रीमियर केवल्स बम्बई) ने मुझे सहारा देकर पुनः संकटों को झेलने की प्रेरणा दी है। अतः उनके प्रति आभार प्रकट करना अपना सौभाग्य समझता हूँ। इसी क्रम में जे. बी. नगर अंधेरी (पूर्व) बम्बई के दोनों भाई पं० राधेश्याम पांडे और पं० जी० एन० शर्मा के अपनत्व को भुलाया नहीं जा सकता। जिन्होंने सदैव मेरी सहायता की है—उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूं।

मेरी पत्नी वागेश्वरी और बच्चों (कमल-सोमो, दिव्य-नीरू, शैलजा, विवेक अनु और विशि) का भी मुझे पर्याप्त सहयोग मिला। यदि ये मुझे कार्य करने की सुविधा न देते तो मैं किसी प्रकार भी इस पवित्र काम को नहीं कर सकता था। अतः उन्हें अपनत्व व प्यार के सिवा क्या दूं ?

आशा है, आपको यह प्रयास अच्छा लगेगा। कहीं भूल हो तो उन पर मेरा ध्यान अवश्य आकर्षित करने का कष्ट कर दें।

आपकी हिमालय के इस अंचल की यात्रा मंगलमय हो—ऐसी शुभकामना है।

1, कालीदास मार्ग, लखनऊ —शिवानन्द नौटियाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# तृतीय संस्करण पर आभार

''केदार-बद्री यात्रा दर्शन' का यह तृतीय संस्करण है। पर्यटकों, पर्वतारोहियों धार्मिक-यात्रियों एवं सैलानियों ने इस पुस्तक को इतना पसन्द किया कि इसके दो संस्करण बहुत कम समय में पाठकों के हाथ चले गये। इसकी माँग पाठकों के स्नेह से बढ़ती जा रही है—इसीलिए यह संस्करण आपके हाथ में है।

इस बीच 'कुमाऊँ दर्शन', 'गढ़वाल-दर्शन' और 'हिमाचल-दर्शन' भी छप गये हैं। अब हमारा अगला प्रयास 'कश्मीर दर्शन' और 'नेपाल दर्शन' प्रकाशित करने का है। आप सबका सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहा तो सम्पूर्ण भारत के ऊपर आवश्यक जानकारी देने का विचार है।

'केदार-बद्री यात्रा दर्शन' में कुछ सामग्री और जोड़ने की इच्छा थी, परन्तु; जिस दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गई है उसके उद्देश्य में स्पष्ट अन्तर आ जाता। अतः पाठकों की दृष्टि को प्रमुखता देते हुए—इस पुस्तक में कोई हेर-फेर करना उचित नहीं समझा गया। अतः यह पुस्तक अपने मौलिक रूप में ही कुछ नये चित्रों के साथ आप सबको समर्पित है।

लेखन के कार्य में मुझे मेरी पत्नी श्रीमती बागेश्वरी नौटियाल और बच्चों (कमल-सोमी, दिव्य-नीरू, बिबेक, अनु, भगवती मधवाल, शैलजा मधवाल तथा विशी, शिवी और साक्षी) का विशेष सहयोग मिला है। सबने मुझे घर के कामों से मुक्त किया। तभी मैं कुछ लिख सका—इन्हें अपनत्व के नाते स्नेहाभिवादन के सिवाय क्या दे सकता हूँ।

मेरे प्रकाशक भाई बीरेन्द्र का विशेष आभार इसीलिए मानता हूँ कि इन्होंने मुझे बार-बार याद दिलाकर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया—तभी इतने कम समय में इतनी पुस्तकें प्रकाशित हो सकी हैं।

मुझे विश्वास है कि पर्वतारोहियों, सैलानियों, पदारोहियों, प्रकृति-प्रेमियों और धार्मिक यात्रियों का स्नेह—'केदार-बद्री यात्रा दर्शन' को पूर्ववत् मिलता रहेगा।

पाठकों के सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

वैसाखी
१४ अप्रैल १९९१
१, कालीदास मार्ग, लखनऊ

-स्नेहाधीन आपका
शिवानन्द नौटियाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# क्रम


आह्वान / 9

हरिद्वार / 17

ऋषिकेश / 25

देहरादून / 36

मसूरी से यमनोत्तरी / 40

ऋषिकेश से नरेन्द्र नगर—टिहरीहोते हुए यमनोत्तरी / 45

गंगोत्तरी की ओर / 54

गंगोत्तरी / 64

गोमुख की ओर / 67

केदारनाथ की ओर / 71

गंगोत्तरी से केदारनाथ / 73

ऋषिकेश से केदारनाथ / 81

देवप्रयाग / 84

कोटद्वार से केदार-बदरी यात्रा / 92

श्रीनगर / 98

देवलगढ़ के मन्दिर / 104

सुमाड़ी के मन्दिर / 107

रुद्रप्रयाग से केदारनाथ की ओर / 109

कालीमठ एवं मध्यमहेश्वर की ओर / 111

पंचकेदार / 113

केदारनाथ से बदरीनाथ की ओर / 121

रुद्रप्रयाग से बदरीनाथ की ओर / 127

जोशीमठ से बदरीनाथ की ओर / 135

गोविन्दपाट से फूलों कों घाटी और हेमकुण्ड लोकपाल / 135

बदरीधाम / 139

बदरीनाथ से आगे / 147

पंचबदरी / 150


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# केदार-बदरी यात्रा-दर्शन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# आह्वान

विश्व-प्रसिद्ध पर्वतारोही डॉ० टी० जी० लॉगस्टाफ ने एच० डब्ल्यू० तिलमैन की विश्व-विख्यात पुस्तक 'नन्दादेवी का आरोहण' की भूमिका में सन् 1937 में लिखा है—

"हिम प्रदेशों की छह यात्राएं करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि एशिया के समस्त पर्वतीय क्षेत्रों में गढ़वाल सबसे सुन्दर है। न तो कराकोरम की बीहड़ प्राकृतिक छटा, न एवरेस्ट पर्वत की एकाकी विशालता, न हिन्दूकुश की नाजुक काकेशियन सुषमा और न ही हिमालय के दूसरे भू-भाग गढ़वाल से समता कर सकते हैं। पर्वत श्रृंग एवं घाटियां, वन तथा मखमली घास के मैदान (बुग्याल), पक्षी तथा वन्य जन्तु, तितलियां और फूलों की घाटियां आदि की सम्मिलित छटा एक ऐसे आनन्द की अभिसृष्टि करता है जो अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है। मानव की आवश्यकताओं का जितना उपभोग यहां के पर्वतों से मिलता है, उतना लाभ विश्व के किसी भी अन्य पर्वत से उपलब्ध नहीं होता। भारतीय आर्य जाति के प्रादुर्भाव से ही इन (गढ़वाल के) पर्वतों का नामकरण हो चुका था। भारत का प्राचीनतम इतिहास जब लिखा गया, तभी से गढ़वाल के इन पर्वतीय श्रृंखलाओं का नामकरण हुआ, इसीलिए विश्व के किसी अन्य पर्वतीय क्षेत्र के प्रति मानव की भावात्मक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अभिरुचि इस क्षेत्र से अधिक नहीं मिलती। ये पर्वतीय (गढ़वाल) श्रृंखलाएं देवताओं का निवास-स्थल हैं। इन्हीं क्षेत्रों में देवता निवास करते हैं। इसीलिए गढ़वाल के तीर्थ-स्थान आज भी बीस करोड़ से भी अधिक धार्मिक हिन्दुओं की पवित्र धार्मिक यात्रा का केन्द्र हैं। हिन्दू देवताओं की गरिमा आज भी गढ़वाल में सबसे अधिक और पवित्र रूप से सुरक्षित है।"

**(1) The Ascent of Nanda Devi by H. W. Tilman Cambridge: at University Press G. Britain 1937—3rd para of the**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



foreword, by Dr. T. G. Langstaff.

...After six visits to the snows, I still believe that Garhwal is the most beautiful country of all High Asia. Neither the primitive immensity of the Karakorum, an aloof domination of Mount Everest, the softer Caucasian beauties of Hindkuush, nor any of the many other regions of Himachal can compare with Garhwal, Mountain and Valley, Forest and alp, birds and animals, butterflies and flowers all combine to make a sum of delight unsur-Passed elsewhere. The interest is stronger than in any other mountain region of the world, for these ancietnly named Peaks are written of in the earliest annals of the Indo-Aryan race, They are the home of the Gods. For two hundred million Hindus the shrines of Garhwal still secure supreme merit to the devout Pilgrim."

आज के गढ़वाल मंडल को प्राचीन साहित्य में हिमवन्त, ब्रह्मावर्त, स्वर्गभूमि, तपोभूमि, देवभूमि, बदरिकाश्रम, उत्तराखंड, केदारखंड आदि नामों से पुकारा जाता रहा है। 'गढ़वाल' नाम इसका पन्द्रहवीं शताब्दी में गढ़ों की अधिकता के कारण पड़ा। वैसे ऋग्वेद (4/30/20) में इस क्षेत्र में 100 गढ़ों का होना बताया गया है।

उत्तराखंड व केदारखंड जो आज का 'गढ़वाल मंडल' है, उसका प्रारम्भ मानव की सभ्यता से ही माना जाना चाहिए, क्योंकि इस क्षेत्र का तथा भारत का सांस्कृतिक इतिहास जब हम पढ़ते हैं तो मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर आज की सभ्यता के विकास तक की यात्रा में इस क्षेत्र का सबसे ज्यादा योगदान रहा है। हिमालय और गंगा सदैव से ही भारतीय जनमानस को अपनी ओर खींचती रही हैं। गंगा के नैहर वाले हिमालय क्षेत्र का पुराणों में विशेष महत्त्व वर्णित है। पौराणिक काल के ऋषियों ने हिमालय के भी पांच भाग कर उसके सम्बन्ध में विस्तार से लिखा था—

खंडाः पंच हिमालयस्य कथिता नेपाल-कूर्मांचलो।
केदारोऽथ जलंधरोऽथ रुचिरःकश्मीर-संज्ञोऽन्तिमः॥

अर्थात् नेपाल, कूर्मांचल, केदार, जलन्धर और कश्मीर का क्षेत्र हिमालय के पांच खंडों के अन्तर्गत आता है। काली नदी से पूर्वी क्षेत्र में नेपाल खंड है और काली नदी के पश्चिम से लेकर नन्दाकोट और रामगंगा के पश्चिमी क्षेत्र तक कूर्मांचल अर्थात् कुमाऊं क्षेत्र है। कूर्मांचल की पश्चिमी सीमा से जमुना तक व

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



जमुना का सारा पण्ढर क्षेत्र केदारखंड के अन्तर्गत आता है। केदारखंड की सीमा के विषय में स्कन्दपुराण के अन्तर्गत जो केदारखंड पुराण (40/27-29) है, उसमें इस प्रकार लिखा हुआ है—

पंचशद्योजनायामं त्रिशद्योजन-विस्तृतम्।
इदं वै स्वर्गगमनं न पृथ्वी तां महोविभो ॥
गंगाद्वार मर्यादं श्वेतांतं वरवर्णिनी।
तमसातटतःपूर्व भागे बौद्धाचलं शुभम् ॥
केदार मंडल ख्यातं भूम्यास्तद्भिन्नकं स्थलम्।
वात्सल्यात्तव देवेशि कथितं देशमुत्तमम् ॥

केदारखंड (40/27-29) के उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि केदारखंड के पूर्व में बौद्धाचल पर्वत और पश्चिम में तमसा नदी, उत्तर में श्वेतांत पर्वत और उत्तर पश्चिम में किन्नर प्रदेश (वर्तमान हिमाचल प्रदेश) तथा दक्षिण में गंगा द्वार अर्थात् हरिद्वार तक इसकी (केदारखंड) सीमा थी। आज भी वर्तमान 'गढ़वाल मंडल' की सीमा पौराणिक भूगोल के अनुसार ही मिलती है। अतः गढ़वाल मंडल की वही सीमाएं आज भी हैं जो पौराणिक काल के केदारखंड की सीमाएं थीं।

फिर भी आज के गढ़वाल मंडल और पौराणिक युग के उत्तराखंड व केदार-खंड अथवा प्राचीन बदरिकाश्रम की भौगोलिक सीमा एक जैसी रही होगी, यह स्पष्ट तो नहीं कहा जा सकता, परन्तु केदारखण्ड में जिन-जिन नदियों, पर्वतों, तालों, वनों, प्रयागों तथा तीर्थ-स्थानों का वर्णन आता है उससे पूर्णतः यह बात सिद्ध होती है कि वर्तमान गढ़वाल मंडल प्राचीन सीमा क्षेत्र का हिमवन्त केदारखंड, उत्तराखड, बदरिकाश्रम, स्वर्गभूमि और ब्रह्मावर्त (ब्रह्मपुर) का क्षेत्र रहा है। इस बात की सत्यता पौराणिक साहित्य के अध्ययन से पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है। हिमालय के इस केदारखंड क्षेत्र ने भारतीय जन-जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया। यही एक मुख्य कारण है कि इस क्षेत्र का प्राचीन ऋषियों एवं महान पुरुषों से सीधा सम्बन्ध रहा है। बल्कि यों कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति, धर्म एवं साहित्य को प्रभावित करने वाले देवताओं से लेकर वेद पुराणों के रचयिताओं तक का इस भूमि से निकट का सम्बन्ध रहा है।

महाभारत सभा पर्व (3/15) के अनुसार ब्रह्मा ने हिमशृंग पर्वत पर बिन्दु-सर तालाब के किनारे तप किया था। स्वयम्भू मनु का निवास भी भीष्म पर्व (7/40) के अनुसार इसी बिन्दुसर के तट पर था।

वन पर्व (187/50) के अनुसार दक्ष की पुत्री अदिति के पौत्र वैवस्वत मनु ने बदरिकाश्रम में हजारों वर्ष तपस्या की थी। प्रलय के समय उसने जीव-जन्तुओं, वनस्पति, अन्न आदि को अपनी नौका में रखकर सब की रक्षा की थी और जब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



प्रलय पलावन समाप्त हो गया तो पुनः सृष्टि की रचना इन्हीं बचे हुए जीव जन्तु, बनस्पति और अन्न आदि से उन्हीं के द्वारा हुई थी। भारत के सूर्यवंश तथा चन्द्र वंश का भी इस क्षेत्र से गहरा सम्बन्ध रहा है। मनु के दस पुत्रों में एक इक्षाकु था, इसी से इक्ष्वाकुवंश चला, जो आगे चलकर सूर्यवंश और रघुशवं के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी वंश में मान्धाता, हरिश्चन्द्र, सगर, दशरथ और श्रीराम आदि महान् प्रतापी राजा हुए। अनेक जैन तीर्थंकरों एवं गौतमबुद्ध का इसी बंश से सम्बन्ध रहा है। रघुवंश (2/26 तथा 4/77-79) के अनुसार वशिष्ठ का आश्रम केदारखंड में गंगाजी के किनारे देवदार वृक्षों की छाया में था। नन्दिनी के आशीर्वाद से राजा दिलीप को महान प्रतापी पुत्र रघु की प्राप्ति हुई थी। दिग्विजय के समय इन्हीं महाराजा रघु ने अपना शिविर देवदारु के वन में स्थापित किया था। राम और लक्ष्मण को रावण और मेघनाद की ब्रह्म हत्या के वध से जो दोष लगा था उससे छुटकारा पाने के लिए (केदारखंड 121/24 के अनुसार) उन्होंने कुब्जाम्रक नामक तीर्थ के उत्तरी क्षेत्र में स्थित पर्वत पर तपस्या की थी। कुब्जाम्रक नाम ही ऋषिकेश का नाम है।

वैवस्वत मनु की पुत्री इला से ऐलवंश व चन्द्र वंश की उत्पत्ति मानी जाती है। हरिवंश पर्व (26/6-7) के अनुसार इला का पुत्र पुरूरवा का जन्म गंगाजी के स्रोत प्रदेश (केदारखण्ड) में हुआ था। आगे चलकर इन्हीं पुरूरवा ने उर्वशी अप्सरा से प्रेम सम्बन्ध जोड़ा था। इसी प्रेम गाथा को लेकर महाकवि कालिदास ने एक सुन्दर 'विक्रमोर्वशी' नामक नाटक लिखा था। हरिवंश पर्व के ही अनुसार पुरूरवा ने उर्वशी के साथ केदार क्षेत्र के मन्दाकिनी के तट पर और बदरिकाश्रम में तथा गन्धमादन पर्वत पर बहुत समय विचरण किया था। महाभारत के 'अनुशासन पर्व' के अनुसार पुरूरवा के पुत्र नहुष ने इसी क्षेत्र में यमुना तट पर यज्ञ किया था। इसी वंश श्रृंखला में नहुष के पुत्र ययाति और पौत्र अनु हुए जिनका इस सारे क्षेत्र पर पूर्ण अधिकार था। महाराजा अनु की आठवीं पीढ़ी में प्रतापी राजा उषीनर हुए। उषीनर का शासन केदारबदरी क्षेत्र से लेकर उत्तर पांचाल तक था। वनपर्व (130/21) के अनुसार उषीनर नरेश ने यमुना नदी की दो सहायक नदियों जला और उपजला (रूपणी और सूपणी) के किनारे महान् यज्ञ कर इन्द्र से भी ऊंचा स्थान प्राप्त कर ख्याति अर्जित की थी।

जिस महाराजा भरत के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है, उसका जन्म भी इसी क्षेत्र में मालिनी नदी के (कोटद्वार-गढ़वाल के समीप) किनारे हुआ था। स्वर्ग की अप्सरा मेनका के गर्भ से विश्वामित्र की सन्तान के रूप में जिस शकुन्तला का जन्म हुआ था उसी शकुन्तला ने 'आदि पर्व' (73/17) के अनुसार हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त से गन्धर्व विवाह कर लिया था। शकुन्तला का जन्म भी कण्वाश्रम के पास मालिनी नदी के तट पर इसी क्षेत्र (गढ़वाल) में हुआ था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


महाकवि कालिदास ने जग विख्यात नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' की रचना इसी कथानक पर की थी। इसी शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न होने वाले भरत ने समस्त भारतवर्ष पर शासन किया था। शतपथ ब्राह्मण (12/11-13) के अनुसार महाराजा भरत ने गंगाजी के तट पर 55 और यमुना के तट पर 78 अश्वमेध यज्ञ किये थे। सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर वे महापराक्रमी राजा सिद्ध हुए। इसीलिए उनके नाम पर आज भी हमारे देश का नाम 'भारतवर्ष' है।

भरतवंश में शान्तनु के पौत्र पाण्डु केदारखण्ड के शिवालिक पर्वत के वनों में शिकार खेला करते थे। आदि पर्व (118/48-50) के अनुसार जब पाण्डु बीमार हो गये तो अपनी दोनों पत्नियों—कुन्ती और माद्री को लेकर इसी केदार खण्ड में गन्धमादन पर्वत पास सप्तश्रृंग में पहुंचकर तपस्या करने लगे थे। यह सप्तश्रृंगक्षेत्र आज के बदरीनाथ के समीप वाली फूलों की घाटी और हेम कुण्ड लोकपाल वाली श्रेणी है। इसी के पाद प्रदेश में पाण्डु के पांच पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए और इसी क्षेत्र में पाण्डु की मृत्यु हो जाने पर माद्री पाण्डु के साथ सती हो गयी थी। इस घटना के बाद कुन्ती पांचों पुत्रों को लेकर हस्तिनापुर लौट आयी थी। पौराणिक साहित्य के आधार पर हमें इस क्षेत्र में चार प्रमुख विद्यापीठों के होने का भी ज्ञान होता है। कण्वाश्रम और भारद्वाज आश्रम पहाड़ों की तलहटी में था। कण्वका 'कण्वाश्रम' मालिनी के तट पर था। व्यास का आश्रम गन्धमादन पर्वत में था। आदि पर्व (70/37-40) के अनुसार इन आश्रमों में साहित्य-शिक्षा, कल्प, जन्तु निरुक्त, ज्योतिष एवं व्याकरण आदि विषयों के पढ़ान का उत्तम प्रबन्ध था। महाभारत शान्ति पर्व (334/9-10) तथा वनपर्व (40/1) के अनुसार अर्जुन और कृष्ण नर और नारायण नामक ऋषियों के अवतार थे, जिन्होंने वदरिकाश्रम में रहकर तपस्या की थी।

यही क्षेत्र गांगेय क्षेत्र है। सूर्य पुत्री यमुना और स्वर्ग की सरिता गंगा इसी धरती पर सबसे पहले अवतरित हुईं। संसार के किसी भी देश की संस्कृति में इतना सम्मान एक नदी को नहीं दिया गया है जितना गंगा को भारत में मिला है। गंगा की अनेक सहायक नदियों का यह बदरी-केदार क्षेत्र युग-युगों से भारतीय जनता का मन मोहता रहा है। गंगा के प्रति भारतीय जनता का अपार स्नेह और ममता सदैव से रही है, इसीलिए गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी लिखा है—

गंग सकल करि मंगल मूला।
सब सुख करनि हरनि सब सूला॥

वास्तव में, सम्पूर्ण सनातन हिन्दू जगत गंगा को हर प्रकार आनन्द मंगल देने वाली, समस्त सुखसमृद्धि देने वाली, अनेकों, लौकिक दुखों से छुटकारा करवाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



वाली और अन्त में परम पद दिलाने की शक्ति रखने वाली 'गंगा मैया' को श्रद्धय रूप में युग-युगों से मानता आया है। यह वही गंगा है जिसके प्रति प्रत्येक हिन्दू की यह अभिलाषा होती है कि वह अपने जीवन के अन्तिम क्षण में एक बूंद गंगा के जल को प्राप्त कर स्वर्ग का भागी बन सके। मृत्युलोक से स्वर्ग तक पहुंचाने में यदि किसी में कोई शक्ति है, तो वह गंगा में ही है। इसीलिए प्रत्येक हिन्दू जगत के प्राणी की इच्छा होती है कि वह उस क्षेत्र का दर्शन कर सके—जहां से गंगा निकलती है।

केदार-बदरी क्षेत्र समस्त हिन्दू जगत के लिए इसलिए भी अत्यन्त प्रिय है क्योंकि इस देश की समस्त भावनाओं का समष्टि रूप इसी क्षेत्र में मिलता है। वैष्णवों का बदरीनाथ, शैवों का केदारनाथ, शाक्तों का कालीमठ, सिक्खों का हेमकुण्ड अपने-आप में महत्त्वपूर्ण धार्मिक केन्द्र तो हैं ही, अन्य मतमतान्तरों के तीर्थ क्षेत्र भी इसी पावन भूमि में पड़ते हैं।

यह क्षेत्र जहां अपनी धार्मिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध है वहां यह क्षेत्र समस्त हिमालय की विशिष्ट सुन्दरता के लिए भी विख्यात है। समस्त हिमालय के अंचल की सर्वाधिक प्राकृतिक सुन्दरता अपने आप में अद्भुत है। इस सम्बन्ध में 'देवात्मा हिमालय' के लेखक श्री प्रबोधकुमार सान्याल के कथन का (पृष्ठ-11) उदाहरण देना श्रेयस्कर समझता हूं—'कश्मीर को भू-स्वर्ग कहा गया है किन्तु दोनों आंखें खोलकर जिन्होंने कश्मीर और गढ़वाल की तुलना की है, वे जानते हैं कि गढ़वाल में अनगिनत भू-स्वर्ग बिखरे पड़े हैं। भारत से बाहर के जो भी पर्यटक कश्मीर में स्विटजरलैंड या आल्पस पर्वत वाली आबो-हवा पा जाते हैं वे ही कश्मीर की सत्मुखी प्रशंसा करते हैं। किन्तु कश्मीर हिमालय में देवात्मा की प्रतीति नहीं है। मौज-मजे, घूमने-फिरने, सुयोग-सुविधा और विलास-व्यसन आदि की दृष्टि से कश्मीर आधुनिक पर्यटकों के लिए बेशक अतीव आरामदेह है किन्तु गांगेय ब्रह्मपुर (गढ़वाल) की तो बात ही दूसरी है। यहां आज भी आधुनिक काल की वैज्ञानिक सभ्यता के आत्म श्लाघामय रूप का दर्शन नही होता। यह तो मानो अनादि-अनन्त काल से आधुनिक है। लाखों-करोड़ों सालों से भी अधिक आधुनिक है। अनन्तकाल के एक खण्ड को मानो उसने अपने सर्वांग में समेट रखा है। यहां आने पर आपको दिखाई पड़ेगी भारत की मौलिक प्रतिभा, भारत की आदि संस्कृति, भारत का सर्वकाल जयी ऐक्य मन्त्र। यहां सुख नहीं आनन्द है, आराम नहीं अनन्त मधुर अवकाश है, पर्याप्त मात्रा में आहार नहीं विदुर साग-पात है, वहां भोग है तो यहां त्याग है। सर्वत्यागी साधु सर्वनीति भ्रष्ट भिखारी न हो जाये इसलिए ब्रह्मपुर (गढ़वाल) में पुरुष काली कमली वाले बाबा का आविर्भाव यहां हुआ था। उन्होंने यहां देखा कि जीवमात्र शिव है, नर मात्र नारायण है। गोमुखी गंगोतरी, उत्तरकाशी, अन्नपूर्णा, बूढ़ा केदार, भैरवनाथ व असीवर्णा भागीरथी का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


संगम सर्वत्र ही एक बात है। केदारनाथ, बदरीनाथ, तुंगनाथ, त्रियुगीनाथ, कमलेश्वर, गोपेश्वर, पाण्डुकेश्वर एक ही पत्थर के मन्दिर हैं—सब जगह। किन्तु प्रत्येक मन्दिर की वेदी पर नित्य प्रणाम करती आ रही है युग-युगों से भारतीय महाजनता।"

'देवात्मा हिमालय' के यशस्वी लेखक प्रबोधकुमार सान्याल की इस पुस्तक की भूमिका भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 18 सितम्बर, 1955 में लिखी थी और स्पष्ट लिखा था कि इस पुस्तक के माध्यमं से इस देश के लोग हिमालय के इस अंचल की आकर्षण शक्ति का रहस्य जान सकेंगे। हिमालय का यह केदारखंड अंचल युग-युगों से भारतीय धर्म-प्राण की जनता का तो हृदय सम्राट रहा ही है परन्तु दूसरी ओर प्रकृति-प्रेमियों के लिए भी यह हमेशा स्वर्गिक आनन्द देने वाला क्षेत्र रहा है। युग-युगों से इस क्षेत्र में धार्मिक यात्री और प्रकृति प्रेमी आते रहे हैं। धार्मिक यात्रा के लिए उत्तराखंड गढ़वाल का यह क्षेत्र युग-युगों से आस्थावान धर्म को मानने वालों का अत्यन्त श्रद्धा का क्षेत्र रहा है।

महाभारत में तीर्थ-यात्रा के महत्त्व को विशेष रूप से आंका गया है। तीर्थ-यात्रा धनी एवं निर्धन दोनों के लिए समान और सुलभ बतायी गयी है। यह स्पष्ट किया गया है कि यात्रा का सुफल निम्न भावना से ही प्राप्त किया जा सकता है :

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स कीर्थफलमश्नतु।।
अकोपनश्च राजेन्द्र! सत्यवादी दृढ़व्रतः।
आत्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमुच्यते।।

"अर्थात् जिस व्यक्ति के हाथ, पैर एवं मन संयम से हों, जिसमें विद्या और तपस्या के गुण हों और जिसने अपनी सच्चरित्रता के कारण ख्याति प्राप्त कर ली हो और जिस व्यक्ति ने क्रोध पर विजय प्राप्त कर लिया हो, सत्यवादी हो, दृढ़ निश्चय वाला हो तथा संसार के सभी प्राणियों को अपने ही जैसा समझता हो उसे ही तीर्थ-यात्रा का फल मिलता है।"

वाराहपुराण में भी तीर्थ-यात्रा के सुफल के विषय में लिखा गया है कि जो व्यक्ति प्रतिग्रह नहीं लेता, जो कुछ मिले उसी में सन्तुष्ट रहता है और अहंकार नहीं करता, साथ ही जो पाखण्डरहित अल्पाहारी, जितेन्द्रिय, आसक्तिरहित तथा नयी-नयी मृगतृष्णाओं में नहीं फंसता उसे तीर्थ का फल निश्चित रूप से मिलता है।

'स्मृति समुच्चय' के अनुसार जो मनुष्य काम, क्रोध और लोभ को जीतकर तीर्थ-यात्रा करता है उसे तीर्थ का फल मिलता है और आगे यह भी कहा है कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



संयम-नियम एवं उपरोक्त तीनों बातों पर जो नियंत्रण कर विधि-विधान से यात्रा करता है और स्वयं शरीर से कष्ट उठाता है, उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। स्कन्दपुराण में यह भी लिखा है कि जो व्यक्ति श्रद्धारहित, पापी, नास्तिक, संशयात्मा और तर्क-वितर्क करने वाला हो उसे तीर्थ करने का फल प्राप्त नहीं होता।

अस्तु, धार्मिक तीर्थ-यात्रा में आस्था का विशेष महत्त्व है। आस्थावान व्यक्ति ही तीर्थों के दर्शन और सेवा का वास्तविक सुफल प्राप्त कर सकता है। आस्थावान यात्री इसीलिए आज भी शुभ दिन, शुभ घड़ी, शुभ नक्षत्र का विचार कर तीर्थाटन पर निकलते हैं।

तीर्थाटन पर निकलने पर मन में मोह-ममता का लेशमात्र भी अंश नहीं रहना चाहिए। पद्मपुराण में कहा गया है कि—

हरे ! कृष्ण ! हरे ! कृष्ण ! कृष्ण भक्तवत्सल गोपते।
शरण्यं भगवन विष्णों ! मां पाहि बहु संसृते ॥

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए तथा मन में भगवान का स्मरण करते हुए तीर्थ-यात्रा पर श्रद्धा के साथ चल देना चाहिए तभी वह तीर्थ-यात्रा फलदायक होती है।

तीर्थ-यात्रा में कितनी कम सामग्री अथवा जितने कम साथियों को ले जाया जा सके उतना ही सुखदायक बताया गया है। महाभारत में इनका सुन्दर उल्लेख है। जब युधिष्ठिर तीर्थ-यात्रा पर जाने लगे तो महर्षि लोमश ने उनसे कहा—

लघुर्भव महाराज ! लघु स्वैरं गमिष्यसि। (वन पर्व 92/18)

अर्थात् महाराज आप अपने साथ अधिक बखेड़ा—मनुष्यों और सामग्री का न रखिए और हल्के भार वाले बन जाइए। लघु भार होने से आप इच्छानुसार सरलता से यात्रा कर सकेंगे। लोमश की आज्ञा मानकर युधिष्ठिर ने ऐसा ही किया था।

यह लघुर्भव वाला मूलमंत्र आज भी प्रत्येक देश, युग एवं सभी प्रकार की आर्थिक स्थिति वाले तीर्थ-यात्रियों, पर्यटकों, यायावरों तथा एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने वाले लोगों के लिए गुरुमंत्र के रूप में ग्राह्य है। आज यात्रा के साधन सुलभ हो गए हैं—फिर भी यात्रा में जितना कम सामान और कम साथी होंगे उतनी ही यात्रा सुखद होगी।

शास्त्रों में ऐसा विधान बताया गया है कि तीर्थ के पास पहुंचने पर तीर्थ-यात्री को श्रद्धा से साष्टांग प्रमाण करना चाहिए। वल्कि जिस स्थान से देवस्थान के देवदर्शन (देव-देखणी) हों, वहीं से साष्टांग प्रमाण करना चाहिए। जो यात्री किसी सवारी पर हों—उन्हें देवदर्शनी पर उतरकर कुछ कदम पैदल चलकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



साष्टांग प्रणाम कर ही बढ़ना चाहिए। यदि किसी कारणवश 'देव दर्शनी' पर प्रणाम न किया गया हो तो तीर्थ में पहुंचने पर सबसे पहले साष्टांग प्रणाम करना चाहिए।

तीर्थ में पहुंचने पर सबसे पहले वस्त्र सहित स्नान करना चाहिए और पश्चात् अपनी श्रद्धा के अनुसार पूजा-अर्चना आदि करनी चाहिए। क्योंकि तीर्थ-व्रत आदि श्रद्धा एवं विश्वास पर ही फलदायक होते हैं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों (स्मृतिसार-समुच्चय, कुलार्णव मंत्रमहार्णव आदि) में कहा गया है कि मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, वैद्य और गुरु में जैसी श्रद्धा होती है वैसा ही फल मिलता है—

मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धि र्भवति तादशी ॥

उत्तराखंड (गढ़वाल) के तीर्थों और प्राकृतिक सुषमा के स्थानों तक पहुंचने के लिए हरिद्वार (हरद्वार) से यात्रा प्रारम्भ करना शास्त्र-सम्मत बताया गया है।

## हरिद्वार

हमारे शास्त्रों में बदरीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वरम् और द्वारिका चार धामों का स्थान सर्वोपरि माना गया है। इन धामों के पश्चात् सप्तपुरियों का विशेष महत्त्व अंकित किया गया है। इन सप्तपुरियों में हरिद्वार भी एक पुरी मानी गयी है जिसका पुराना नाम मायापुरी है। इन सप्तपुरियों को मोक्षदायनी माना गया है—

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैताः, मोक्षदायिकाः ॥

हरिद्वार को गंगा द्वार भी कहा गया है क्योंकि गंगा के सर्वप्रथम दर्शन मैदानी क्षेत्र में इसी नगर—हरिद्वार में होते हैं। यहीं से उत्तराखंड की स्वर्गभूमि का प्रवेश द्वार शुरू हो जाता है इसलिए हरिद्वार को 'स्वर्गद्वार' के नाम से भी जाना जाता है। वास्तव में 'हरिद्वार' या 'हरद्वार' भी इस पवित्र नगर के लिए उपयुक्त नाम है क्योंकि भगवान् बदरी विशाल की धरती के लिए इस नगर से द्वार खुलते हैं इसलिए इस नगर का नाम 'हरिद्वार' भी सार्थक है। साथ ही शिव की समस्त क्रीड़ाभूमि केदारखंड है। उस महादेव केदारनाथ (हर) की प्यारी भूमि केदारखंड और केदारनाथ के लिए भी इसी नगर से मार्ग जाता है, इसलिए इस प्राचीन मायापुरी का नाम 'हरद्वार' होना भी इसी तरह पूर्णतः सार्थक और उपयोगी है। अर्थात् केदारनाथ 'हर' तथा बदरीनाथ 'हरि' के लिए इसी नगर से प्रवेश द्वार है—इसीलिए इस नगर का नाम 'हरद्वार' अथवा 'हरिद्वार' दोनों दृष्टियों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh,Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



सार्थक है। भारत में जिन प्रमुख चार तीर्थ-स्थानों पर हर बारहवें वर्ष में, पूर्ण कुम्भ और 6 वर्ष में अर्ध कुम्भ होता है उनमें हरिद्वार का अपना विशिष्ट स्थान है। हर दिन यदि किसी तीर्थ में गंगा के दर्शन और गंगा सहित देवताओं की पूजा होती है। तो वह 'हरिद्वार' अथवा 'हरद्वार' है। अतः इस दृष्टि से भी 'हरिद्वार' अथवा 'हरद्वार' का स्थायी महत्त्व है।

हिमालय के सुन्दर पर्वत यहीं से आरम्भ हो जाते हैं जो घने वृक्षों से आच्छादित दिखाई देते हैं। हिमालय की तलहटी में समुद्र तल से 294 मीटर की ऊंचाई पर पवित्र पावनी गंगा के दाहिने किनारे पर 'हरिद्वार' अथवा 'हरद्वार' तीर्थ स्थित है। हरिद्वार (हरद्वार) के तीन ओर शिवालिक पर्वत की सुन्दर-सुन्दर पहाड़ियां इस नगर को घेरे हुए हैं। गंगा की निर्मल और शीतल जलधारा वेग के साथ इस तीर्थ में बहती हुई आगे बढ़ती है। पद्म पुराण में हरिद्वार की महिमा के विषय में इस प्रकार कहा गया है—

स्वर्गद्वारेण तत्तुल्यं गंगा द्वारं न संशयः,
तत्राभिषेकं कुर्वीत कोटि तीर्थे समाहितः,
लभते पुण्डरीकं च कुलं चैव समुद्धरेत,
तत्रैक रात्रिवासेन गो सहस्र फलं लभेत्।

हरिद्वार स्वर्ग का द्वार है जो इस तीर्थ में स्नान करता है उससे करोड़ों तीर्थों का फल मिलता है। भगवान् की प्राप्ति के साथ-साथ वह अपने सारे वंश का भी उद्धार कर देता है। जो हरिद्वार (गंगाद्वार) में एक रात निवास कर लेता है उसे हजारों गोदान करने के समान फल मिलता है। मायापुरी अर्थात् आज के हरिद्वार का युगों-युगों से विशेष महत्त्व रहा है। हमारे प्राचीन पौराणिक साहित्य में इस नगर के प्रमुख स्थलों के विषय में इस प्रकार कहा गया है—

गंगाद्वारे कुशावर्ते विल्वके नील पर्वते।
स्नात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते॥

अर्थात् गंगाद्वार में हर की पैड़ी, कुशावर्त, विल्वकेश्वर, नील पर्वत और कनखल हरिद्वार के प्रमुख तीर्थों के अन्तर्गत माने गये हैं। इसके सम्बन्ध में बताया गया है कि इन स्थानों पर स्नान करने से और इनके दर्शन करने से दूसरा जन्म नहीं होता है।

### हर की पौड़ी

हरिद्वार का विशेष आकर्षण स्थल 'हर की पैड़ी' है। नारदीयपुराण में कहा गया है कि इस स्थान पर दक्ष तथा देवों ने योगेश्वर भगवान् विष्णु का साक्षात्कार किया था इसीलिए इस स्थान का नाम हरि तीर्थ (हरि की पैड़ी) पड़ा। इस स्थान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



के महत्त्व का वर्णन अनेक प्राचीन पुस्तकों में इस प्रकार से भी मिलता है कि राजा श्वेत ने ब्रह्मा को अपनी तपस्या से प्रश्न किया था और ब्रह्मा से इस प्रकार का वर प्राप्त कर लिया था कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव इस स्थान पर एक साथ रहेंगे। तभी से इसका नाम ब्रह्मकुंड पड़ गया। ब्रह्म कुंड में ही गंगाजी के समीप विष्णु चरण-पादुका के मन्दिर में भीतर चरण चिह्न भी बने हुए हैं। बाहर विष्णु भगवान् की पूजा होती है। हरिद्वार में सबसे बड़ा तीर्थ ब्रह्म कुंड है। यहां कुम्भ के समय साधुओं का विशिष्ट स्नान होता है। सन्ध्या के समय जब गंगा की आरती होती है उस समय यहां का दृश्य देखने योग्य होता है। गंगा की पवित्र लहरों में जलते हुए दीपकों को जब प्रवाहित किया जाता है तो दूर-दूर तक वह झिलमिल-झिलमिल करते हुए अद्भुत दृश्य उपस्थित करते हैं। संध्या समय गंगा की आरती हजारों नर-नारियों के द्वारा जब की जाती है तो गंगा के ब्रह्म कुंड के सामने वाला दृश्य देखते ही बनता है। यह भी कहा जाता है कि गंगा का स्वागत ब्रह्माजी ने इसी स्थल पर किया था। तभी से इस स्थान का नाम 'ब्रह्म कुंड' पड़ गया। गंगा दशहरा पर यहां का दृश्य और भी आकर्षक हो जाता है। गंगा की भव्य आरती की जाती है। फूलों से लदे दोनों पर दीपक जलाकर गंगा में दीप मालाएं चढ़ाई जाती हैं। गंगा के पाट दूर-दूर तक दीपकों से भरे रहते हैं। जो भी कुछ सत्य हो परन्तु यह सही है कि गंगा के किनारे शीतल जल-धारा में स्नान करने पर प्रत्येक व्यक्ति को यहां अपार शान्ति मिलती है। 'हरि की पैड़ी' पर गंगा मन्दिर, शंकराचार्य मन्दिर, लक्ष्मीनारायण मन्दिर, गंगाधर मन्दिर और नव ग्रह आदि के मन्दिर 'ब्रह्म कुंड' के पास ही हैं। इन मन्दिरों से लगे विशाल लम्बे-चौड़े घाट पर एक बाजार-सा लगा रहता है, जहां सब प्रकार की वस्तुएं मिलती हैं। 'ब्रह्म कुंड' के दक्षिण की ओर गऊघाट है। यहां स्नान करने से गोदान के बराबर पुण्य होने का महत्त्व बताया गया है।

## कुशावर्त

गऊघाट से दक्षिण की तरफ कुशावर्त घाट है। यहां पर दत्तात्रेय ने तपस्या की थी। कहते हैं कि वे तप में लीन थे तो गंगा की एक प्रचण्ड धारा ने उनके कुश, डण्डा और कमण्डल को बहा दिया था। परन्तु उनके तप से वे सब चीजें गंगा की जलधारा के साथ वहीं पर चक्कर खाने लगी थीं। दत्तात्रेयजी गंगा पर कुपित हो गये और शाप देने के लिए तैयार हो गये, तभी ब्रह्मा आदि देवता उन्हें शान्त करने के लिए वहां पहुंचे। उस समय से इस घाट का नाम कुशावर्त घाट पड़ गया। यात्री यहां पर श्राद्ध और पित्र तर्पण आदि करते हैं। कहते हैं कि यहां पर पितरों को पिण्ड दान करने से उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## श्रवणनाथ मन्दिर

श्रवणनाथ बहुत पहुंचे हुए सिद्ध महात्मा थे। कुशावर्त घाट के दक्षिण में उनका यह मन्दिर महन्त शान्तानन्द के द्वारा बनवाया गया था। यहां पर एक सुन्दर शिव मन्दिर का निर्माण हुआ है। आज वहां पर बड़ा भारी पुस्तकालय, औषधालय, अन्न क्षेत्र और 'जय भारत साधु महाविद्यालय' भी स्थापित है। इस महाविद्यालय में आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है।

## रामघाट

यहां पर बल्लभ सम्प्रदाय के श्री महाप्रभुजी की बैठक है। एक जयपुर हाउस भी यहां बना हुआ है।

## विष्णुघाट

रामघाट के दक्षिण की ओर है। कहते हैं कि यहां पर भगवान् विष्णु ने तप किया था। आज इस क्षेत्र में सब्जी मंडी लगती है।

## भैरों अखाड़ा

यह अखाड़ा जूना अखाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर भैरोंजी की विशाल मूर्ति स्थापित है। यहां सदैव अखंड दीपक जलता रहता है। इसकी बहुत बड़ी मान्यता है।

## मायादेवी

यहां पर भैरवी त्रिमस्तकी देवी दुर्गाजी की मूर्ति है जिसके एक हाथ में त्रिशूल और एक हाथ में नर-मुण्ड है। साधकों का यह महत्त्वपूर्ण सिद्ध पीठ है।

## गणेश मन्दिर

गणेशजी की विशाल मूर्ति यहां पर स्थापित है। महाराष्ट्र की ओर से आने वाले यात्रियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है।

## नारायणी शिला

पन्नालाल भल्ला इण्टर कॉलिज के पास यह शिला है। इस स्थान पर नारायण बलि और पिण्ड दान विशेष रूप से होता है। आश्विन के महीने में पितृ अमावस्या के दिन यहां सबसे बड़ा मेला लगता है।

## मनसा देवी का मन्दिर

मनसा देवी हरिद्वार का प्रसिद्ध मन्दिर है। जिसके दर्शन करने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। मनसा देवी का मन्दिर हरिद्वार के ठीक ऊपर पर्वत की चोटी पर स्थित है। यहां के लिए रज्जु मार्ग भी बन गया है और मोटर मार्ग भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



इसके समीप तक पहुंच गया है। मनसा देवी की यात्रा करने वालों के मन की इच्छा पूर्ण होती है । ऐसा सर्वत्र विश्वास है।

### विल्वकेश्वर

हरिद्वार स्टेशन से शहर के रास्ते पर ललिता रोड पर जो पक्का रोड बना है वहां से विल्वकेश्वर को रास्ता जाता है। विल्व नामक पर्वत की तलहटी में महादेव का मन्दिर है। यहां से एक फर्लांग की दूरी पर गौरी कुण्ड है। यहां पार्वतीजी ने तपस्या की थी । इसी स्थल पर एक गुफा है । इसमें बंगाल के प्रसिद्ध सन्त बल्कुल ने भी तपस्या की थी। आज भी इस गुफा में उनकी संगमरमर की मूर्ति स्थापित है। इस गुफा के अन्दर शिवधारा नाम की नदी है जो ललिता रोड में गंगा से मिल जाती है । बंगाली यात्री अधिकतर विल्वकेश्वर के और भेलपत्र के दर्शन करने जाते हैं ।

### नीलधारा

गंगा की नहर के बाहर नील पर्वत के नीचे वाली गंगा की धारा को नील-धारा कहते हैं। नीलधारा ही वास्तव में गंगा की प्रधान धारा है । नीलधारा में स्नान करने के पश्चात् नीलेश्वर महादेव के दर्शन करने का बड़ा माहात्म्य है । पर्वत क्षेत्र में पर्वत चोटी पर नीलेश्वर महादेव का मन्दिर है। कहते हैं कि शिव के नील नामक एक भक्त ने इस स्थान पर शिव की तपस्या की थी—इसीलिए इस पर्वत का नाम नील पर्वत पड़ गया है।

### चण्डी देवी का मन्दिर

नील पर्वत के शिखर पर चण्डी देवी का मन्दिर है। चण्डी देवी के मन्दिर की चढ़ाई 4 कि० मी० की है। चण्डी देवी के मन्दिर में जाने के लिए बीच रास्ते में कामराज पुत्र कौल सम्प्रदाय का काली मन्दिर है। चण्डी देवी के पुजारी दिन में मन्दिर में रहते हैं और रात में वापस लौट आते हैं । कहते हैं कि यहां रात्रि में शेर आता है । हरिद्वार का चण्डी चौदस का मेला दूर-दूर तक विख्यात है।

इसके साथ ही चण्डी मन्दिर के पास पहाड़ के दूसरी ओर हनुमानजी की माता अंजनी देवी का 'अंजनी देवी' मन्दिर भी है।

चण्डी देवी के मन्दिर के नीचे गंगा के किनारे गौरी-शंकर का मन्दिर है। यह घनघोर जंगल में है, जहां जंगली जानवर चलते-फिरते रहते हैं ।

### कनखल

हरिद्वार के समीप कनखल और ज्वालापुर का विशेष महत्व है। कनखल में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



दक्ष प्रजापति दक्षेश्वर महादेव का मन्दिर है। शिवरात्रि के अवसर पर यहां बहुत बड़ा मेला लगता है। कहते हैं कि दक्ष प्रजापति ने यहां पर शिव के ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी। यहां से कुछ दूरी पर 'सती कुण्ड' है जहां पर महादेव की प्रथम पत्नी सती ने देह-त्याग किया था। दक्षेश्वर महादेव के अलावा यहां शीतला देवी और हनुमान का मन्दिर भी है। कनखल युग-युगों से भारतीय जनमानस का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसी स्थान से महाकवि कालिदास ने अपनी रचना मेघदूत में गन्तव्य तक पहुंचने के लिए मेघ को इस नगर के बाद से अलका तक रास्ता बताया था।

## ज्वालापुर

ज्वालापुर भी हरिद्वार का एक प्रमुख क्षेत्र है। यहां अनेक आश्रम हैं और अनेक महन्तों की गद्दियां हैं। अधिकांश पण्डों का निवास इसी ज्वालापुर में हैं जिसके कारण यहां काफी चहल-पहल रहती है।

## भीम गोड़ा

हर की पैड़ी से ऋषिकेश जाने वाले मार्ग पर तीन किलोमीटर दूरी पर भीम गोड़ा स्थित है। उत्तराखण्ड स्वर्गभूमि की ओर जाते समय भीम ने यहां तपस्या की थी और अपने गोड़ अर्थात् घुटने टेक दिए थे। जिससे यहां एक कुण्ड बन गया था। इसी से इसका नाम भीम गोड़ा पड़ा था। उत्तराखण्ड की ओर जाने वाले यात्री हर की पैड़ी के बाद भी भीम गोड़ा जाकर स्नान तथा पूजन करना अत्यावश्यक समझते हैं।

## सप्तस्रोत

भीम गोड़ा से तीन किलोमीटर की दूरी पर सप्तस्रोत नामक तीर्थ है। यहां पर सात ऋषि तप कर रहे थे। गंगाजी इस रास्ते से जब आगे बढ़ने लगी तो उन्होने तप करने वाले ऋषियों के प्रति यह अनादर समझा कि मैं अगर एक ही ओर से आगे बहती हूं तो इन ऋषियों का अपमान होगा। इसलिए सब ऋषियों को प्रसन्न करने के लिए इस स्थान पर गंगा को हर ऋषि के तप करने वाले स्थान तक जाने के लिए सात धाराओं में विभक्त होना पड़ा। इसलिए गंगा की यहां पर सात धाराएं बन गईं। अतः सप्तक्षेत्र का बहुत बड़ा माहात्म्य है। गोस्वामी गणेशदत्तजी ने यहां संस्कृत महाविद्यालय, सप्तऋषियों का मन्दिर, अन्न क्षेत्र और मालवीयजी की मूर्ति आदि का निर्माण करवाया है। पंजाब महावीर दल सनातन धर्म सभा ने गोस्वामी गणेश दत्त की यादगार में उनकी संगमरमर की मूर्ति यहां पर स्थापित की है। यह स्थान अत्यन्त रमणीक और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



दर्शनीय है।

इसके अतिरिक्त हरिद्वार में साधु बेला, शारदा भवन, रामकृष्ण मिशन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, गुरुकुल विश्वविद्यालय, धर्मार्थ आश्रम, विष्णु भवन, मनोकामना सिद्धि मन्दिर, मानव कल्याण आश्रम कनखल, भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स, गोरखनाथ गुफा, काल भैरव मन्दिर, गीता भवन, देशरक्षक औषधालय, ऋषि आनन्द निकेतन, श्री गंगा सभा और बेलगिरि आश्रम आदि ऐसे कुछ स्थान हैं जिनका कार्य धार्मिक क्षेत्र में प्रशंसनीय है। इसके अलावा भी बहुत-से ऐसे महन्त और साधु-संन्यासी हैं, जो हरिद्वार में रहकर भारतीय साहित्य, संस्कृति और धर्म का प्रचार निरन्तर करते चले आ रहे हैं।

हरिद्वार में भैरो अखाड़ा, निरंजनी अखाड़ा, निरवाणी अखाड़ा, निर्मला अखाड़ा, उदासीन अखाड़ा और पंचायती आदि कई अखाड़े हैं। जिनका चुनाव प्रबन्ध लोकतन्त्र के तरीके से हर पांचवें साल होता है। इस चुनाव में महन्त आदि भाग लेते हैं। कुम्भ के समय पर यही लोग साधुओं की जमातों का साही निकालने का प्रबन्ध करते हैं।

धर्म, संस्कृति और साहित्य आदि की अभिवृद्धि के लिए हरिद्वार में कई अन्य क्षेत्र हैं, जिनमें सप्तऋषि, मणिद्वीप निर्धन निकेतन, गरीबदासीय धर्मशाला, विधाता मण्डल गुरुमण्डल और भोलागिरि क्षेत्र हैं, जिनमें संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों को दोनों समय भोजन मुफ्त दिया जाता है। बिड़ला हाउस में केवल खाने की मुफ्त व्यवस्था है।

हरिद्वार एक ऐसा पावनतम तीर्थस्थल है, जो समस्त भारतवर्ष के मुख्य-मुख्य स्थानों से रेल आदि से जुड़ा हुआ है। यहां प्रतिदिन हजारों लोग गंगा स्नान करने आते हैं। इस नगर का क्षेत्रफल तेरह वर्ग किलोमीटर है। यात्रा का समय एक वर्ष भर है। यहां पर भारत-भर के यात्री समय-समय पर आते रहते हैं। जिनके रहने-खाने आदि की व्यवस्था ठीक समय पर हो जाती है। यहां पर सरकारी भवनों में भी ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था है। पर्यटक विश्राम गृह बस अड्डा, हरिद्वार वन विभाग विश्राम भवन, रानीपुर हरिद्वार सार्वजनिक निर्माण विभाग निरीक्षण भवन, भीम गोड़ा मार्ग प्रमुख आवासीय भवन हरिद्वार में उपलब्ध हैं।

आज यात्री अधिक सुख-सुविधा में रहना चाहते हैं। होटलों की भी यहां कमी नहीं है। कुछ विशिष्ट होटल इस प्रकार से हैं—गुरुदेव होटल, स्टेशन के पास उपमा होटल, सब्जीमण्डी; अलका होटल, गऊ घाट; होटल हरनिवास, विष्णुघाट; यात्री निवास न्यू गंगा टाकीज होटल, होटल सवेरा निर्मल छावनी, राजहोटल विष्णु घाट, पैलेस होटल—श्रवणनाथ नगर, आनन्द निवास ट्रस्ट बिल्डिंग निरंजनी अखाड़ा रोड हरिद्वार आदि कई होटल हैं। जहां तीर्थ-यात्रियों को हर सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा हरिद्वार में समस्त भारतवर्ष के धर्म-परायण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



एवं आस्थावान लोगों के द्वारा अनेकों धर्मशाखाएं निर्मित की गई हैं जिनमें रहने की सुन्दर व्यवस्था है । उनमें से कुछ धर्मशालाएं इस प्रकार हैं—

पंचायती मारवाड़ी, नानकीदेवी, लखनऊवाली, सिंधी धर्मशाला, धामपुर वाली सेठ खुशीराम, सेठ सूरजमल, वृन्दावन, अमृतसरवाली, पिसोरियन, नृसिंह भवन, पालीवाल, किशोरीलाल, बीकानेर, झंडूमल तेलूराम धर्मशाला, शिकारपुर सिंधी, विलासपुर, डिप्टी नन्दकिशोर, खिलन्दीवाई, बदरीबावला, टोपीवालों की धर्मशाला, रामघाट, संतरानदास, भगीरथजी, मुजफ्फरनगर, जम्मू-कश्मीर, छपरावाली, भिवानीवाली, भोलागिरी, दिल्लीवाली, कलकत्तावाली, धामन वाली मद्रासी, गांधी हरिजन, नाइयों वाली धर्मशाला, महावीर दल, काशीराम, गंगाश्रम लुधियाना, सेठ मुरलीमल, बसन्तीदेवी, धन्नदेवी खन्ना, सुखनचन्द्र, लकड़ीवाली, हवेली कनखल, किशनदयाल, सुच्छ जम्बू, वानप्रस्थ, मोहन आश्रम, शम्भू आश्रम, कुटी कमलदास, रामानन्द धर्मशाला, आनन्द आश्रम, जम्बूवाली, कपूरथला, सूरजमल, कांगड़ा मन्दिर, जस्साराम, मिश्र चांदमल, पंजाव सिंधक्षेत्र निहकल आश्रम, गौरीशंकर आश्रम, दुर्गाघाट प्रताप भवन, दरगाह, गीता आश्रम, गुजारीमल देहली, गोकुलधाम, सेवकपंथी, जगत सिंह और गोकुलदास, गढ़वाली धर्मशाला, बालकृष्ण पोद्दार, जोगीबाड़ा गांधी हरिजन धर्मशाला, भोलागिरी आदि अन्य प्रमुख धर्मशालाएं हैं । इनके अतिरिक्त अन्य छोटी-छोटी धर्मशालायें भी हैं ।

बाबा काली कमली की धर्मशाला सबसे प्रसिद्ध और उपयोगी धर्मशाला है ।

हरिद्वार में उत्तर प्रदेश टूरिस्ट विभाग का भी कार्यालय है तथा गढ़वाल विकास निगम का भी एक कार्यालय है । गढ़वाल मोटर ओनर्स यूनियन का भी कार्यालय हैं जहां से सीधे गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, केदारनाथ और बदरीनाथ को मोटरें जाती हैं । इसी तरह से यहां पर टैक्सी सेवा भी है जिससे यहां से इधर-उधर शहर में और अन्य क्षेत्रों में जाया जा सकता है । हरिद्वार का दूसरा किनारा गढ़वाल जनपद है । यहां चीला का सुन्दर वन है । हरिद्वार से वन मार्ग होते हुए, कोटद्वार तक बस जाती है । इसी मार्ग में मालिनी नदी के तट पर ऋषि कण्व का कण्वाश्रम है । यह वही आश्रम है जहां कण्व ऋषि का आश्रम था और शकुन्तला के गर्भ से भरत का जन्म हुआ था । इसी के ऊपर महाकवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् नामक नाटक लिखा । कण्वाश्रम में ठहरने के लिए पर्यटन विभाग का बंगला है और इसी के पास संस्कृत महाविद्यालय तथा आश्रम है । कण्वाश्रम के ठीक ऊपर पहाड़ पर महावगढ़ है । यहां प्राचीन शिव मन्दिर है । इसी महावगढ़ से केदारनाथ, बदरीनाथ चौखम्भा आदि हिमालय की चोटियां दिखाई देती हैं । हरिद्वार से सहारनपुर, देहरादून क्षेत्र में तो जा ही सकते हैं । देहरादून के मार्ग से भी यमुनोत्तरी की यात्रा की जाती है और बहुत-से यात्री

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मसूरी होकर जाते हैं परन्तु हमारा उद्देश्य तो आपको ऋषिकेश की ओर भी ले जाना है। तो आइए, अब हम ऋषिकेश की ओर चलें। हरिद्वार से ऋषिकेश चौबीस किलोमीटर की दूरी पर है। यात्रा बस, रेल व टैक्सी से की जा सकती है। हरिद्वार से ऋषिकेश का मार्ग अत्यन्त घने वन से गुजरता हुआ जाता है जो प्रत्येक यात्री का मन अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि आप देहरादून जाना चाहें तो रेल से या बस से भी जा सकते हैं। जैसे-जैसे हरिद्वार से ऋषिकेश की ओर आपकी गाड़ी आपको ले जाने लगती है वैसे-वैसे आप स्वर्गभूमि उत्तराखण्ड की ओर पदार्पण करने लगते हैं और उत्तराखण्ड की भूमि आपका स्वागत करने के लिए कदम-कदम पर तैयार रहती है।

## ऋषिकेश

पवित्र पावनी गंगा नदी के दाहिनी ओर स्थित प्राचीन ऋषियों का प्यारा नगर 'ऋषिकेश' युग-युगों से भारत की जनता का मन अपनी ओर आकर्षित करता चला आ रहा है। ऋषिकेश के सम्बन्ध में स्कन्दपुराण में कथा आती है कि भगवान् विष्णु ने मधु और कैटभ नामक दैत्यों का संहार कर ऋषियों को साधना करने के लिए इस स्थान की भूमि को उपलब्ध कराया था। एक दूसरी कथा के अनुसार रैम्य मुनि एक आम के वृक्ष के नीचे भगवान विष्णु की तपस्या में लीन थे। जब भगवान् विष्णु उधर से निकले तो रैम्य मुनि की कठोर तपस्या से अत्यधिक प्रभावित हुए। भगवान् विष्णु ने ऋषि को दर्शन दिया और प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा। रैम्य ऋषि कुबड़े थे। विष्णु भगवान् ने कहा, "हे मुनि! तुमने इस स्थान पर अपनी इन्द्रियों का दमन कर मेरे दर्शन की जो इच्छा की है, मैं तुमसे अत्यधिक प्रसन्न हूं। आम के वृक्ष के नीचे कुब्ज होकर जो तुमने तपस्या की है उसके फलस्वरूप इस तीर्थ का नाम 'कुब्जाम्रक' होगा और मैं इस स्थान पर 'ऋषिकेश' नाम से विख्यात होऊंगा। इस स्थान का नाम 'ऋषिकेश' आश्रम भी होगा।" भगवान विष्णु ने आगे कहा कि "मुनिवर! तुम्हारी इच्छा को पूर्ण कर आश्वासन देता हूं कि त्रेता युग में दशरथ कुमार भरत इस स्थान पर तपस्या करेंगे और कलियुग में यहां पर भरत के नाम पर मेरा अस्तित्व रहेगा।" उन्होंने आगे कहा, "हे मुनि श्रेष्ठ! इस स्थान पर जो मेरी पूजा सतयुग में वाराह रूप में, त्रेता में कार्तवीर्य रूप में, द्वापर में वामन रूप में और कलियुग में भरत के रूपमें करेंगे, उन्हें निसन्देह मुक्ति प्राप्त होगी।"

इस स्थान के विषय में प्राचीन समय से कई एक कथाएं और भी मिलती हैं। एक कथा के अनुसार भगवान राम और लक्ष्मण ने रावण और मेघनाद के वध से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



लगी हुई ब्रह्म-हत्या के पाप से छुटकारा पाने के लिए इस तीर्थ के ऊपर स्थित पवित्र ऋषि पर्वत पर तप किया था। एक कहानी के अनुसार लक्ष्मण ने सौ वर्ष तक केवल कमल के फूलों और फलों का ही आहार कर तपस्या की थी।

ऋषिकेश का धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है। पौराणिक साहित्य के पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि यहां अनेक प्राचीन ऋषि-मुनियों के प्रसिद्ध आश्रम विद्यमान थे। महान् पूर्ण साहित्य वेत्ता व्यास का भी इस नगर से सम्बन्ध रहा। वशिष्ठ, परशुराम, विश्वामित्र एवं भारद्वाज ऋषियों का यह क्षेत्र कर्मभूमि के रूप में विख्यात रहा है। धृतराष्ट्र से लेकर पांडवों तक इस भूमि से इनका गहरा सम्बन्ध रहा है। भगवान् बुद्ध भी इस पवित्र नगर तक आए थे। ययाति की दसवीं पीढ़ी में उत्पन्न होने वाले महाराजा उषीनर का इस सम्पूर्ण क्षेत्र में राज्य फैला हुआ था। ऋषिकेश के समीप वाले चंडी पर्वत को महाराजा उषीनर के नाम से आज भी उषीनर पर्वत नाम से जाना जाता है।

ऋषिकेश के ऐतिहासिक विवरण से ज्ञात होता है कि यह स्थान पौराणिक युग से भारतीय जनता की आस्था का सबसे बड़ा केन्द्र रहा है। इस पवित्र स्थल से स्वायम्भू मनु, महाराजा दक्ष एवं मान्धाता, भगीरथ, नहुष, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि राजपुरुषों का यहां सीधा सम्बन्ध रहा है। इस क्षेत्र में वशिष्ठ, विश्वामित्र और भारद्वाज सरीखे मुनि श्रेष्ठ रहे हैं।

ऋषिकेश पौराणिक समय से ही वैदिक धर्म का विशेष गढ़ रहा है। परन्तु कालान्तर में इस नगर में बौद्ध, जैन, शैव शाक्त आदि धर्मों का भी विशेष प्रभाव पड़ा। नाथ सम्प्रदाय और तांत्रिक साधना का भी यहां दबाव पड़ता रहा है। ऋषिकेश, सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का एक ऐसा नगर है जिसमें हम आज सभी मतों पर विश्वास करने वालों के यहां आश्रम बने हुए देखते हैं। धर्म-प्राण हिन्दुओं के आश्रमों का तो यह प्रमुख केन्द्र है ही परन्तु आज यहां ईसामसीह के गिरजाघर से लेकर सिक्खों के गुरुद्वारे भी मिलते हैं। ऋषिकेश की जानकारी प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस नगर के प्रमुख आश्रमों की जानकारी पहले प्राप्त करें।

ऋषिकेश नगर की जानकारी करने से पूर्व इसकी स्थिति को समझना भी आवश्यक है। यह नगर कई भागों में बंटा हुआ है और सभी भागों को मिलाकर ऋषिकेश ही कहलाता है। परन्तु वास्तव में देखा जाए तो ऋषिकेश के कई भाग हैं जो प्रशासकीय दृष्टि से भी अलग-अलग जिलों में आते हैं। ऋषिकेश देहरादून जिले का एक भाग है। ऋषिकेश का एक भाग मुनि-की-रेती है जो अलग टाउन एरिया है और ऋषिकेश नगर से ही मिला हुआ है। यह चन्द्रभागा नदी के पार वाला क्षेत्र है। यह जिला टेहरी गढ़वाल के प्रशासन में आता है। गंगा पार गीता भवन, परमार्थ निकेतन वाला क्षेत्र पौढ़ी गढ़वाल के प्रशासन में आता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



ऋषिकेश में सबसे प्राचीन और आकर्षण का केन्द्र भरत मन्दिर है। यह मन्दिर प्राचीन काल का मन्दिर माना जाता है। इस मन्दिर की ख्याति दूर तक है। भरत मन्दिर ट्रस्ट के ही माध्यम से यहां कई विद्यालय चलते हैं। इसकी व्यवस्था बहुत अच्छे ढंग से की जाती है और दर्शनार्थियों के लिए हर प्रकार की सुविधायें मन्दिर की ओर से उपलब्ध करवाई जाती हैं। आजकल श्री अशोक प्रपन्न शर्मा इस ट्रस्ट के सर्वेसर्वा हैं। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व के कारण इस ट्रस्ट के द्वारा कई संस्थाएं चल रही हैं।

भरत मन्दिर के साथ लक्ष्मण मन्दिर, वाराह मन्दिर, वीरभद्रेश्वर मन्दिर, पातालेश्वर मन्दिर, सत्यनारायण, सोमेश्वर, काली मन्दिर, चित्रगुप्त, महेशानी भुवनेश्वर आदि मन्दिर ऐसे सिद्धपीठ हैं जिनका प्रभाव बहुत अधिक है। भरत जी ने यहीं पर तपस्या की थी। उनका भरत मन्दिर है। राम के तपस्या-स्थल पर रघुनाथ मन्दिर है और जिन स्थलों पर लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने तपस्या की थी उन स्थलों पर आज भी लक्ष्मण और शत्रुघ्न के मन्दिर स्थापित हैं। भगवान् विष्णु की तपस्या स्थली—'रैम्य मुनि' ने जिस स्थल पर तपस्या की थी—यहीं पर है। वहीं पर 'कुब्जाम्रक' कुन्ड स्थापित है। वीरभद्रेश्वर का मन्दिर शिव के गण के रूप में सबसे अधिक प्रभावशाली मन्दिर माना जाता है।

इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण ऋषिकेश क्षेत्र में कुछ ऐसे मन्दिर हैं, जिनका उल्लेख करना अतिआवश्यक है। ऐसे मन्दिरों में चन्द्रेश्वर महादेव, पुष्कर, गोपाल मन्दिर, भैरव मन्दिर, कैलाश आश्रम, शंकराचार्य मन्दिर, शिवानन्द आश्रम का शिव मन्दिर, पंचदेव मन्दिर, कैलाशानन्द मिशन का तेरह मंजिला मन्दिर, रानी विद्यावती का मन्दिर है। पंचमुख हनुमान मन्दिर, रामेश्वर मन्दिर, स्वर्गाश्रम मन्दिर, परमार्थ निकेतन स्थित मन्दिर, गीताभवत स्थित मन्दिर, ओंकारानन्द सरस्वती का दुर्गा मन्दिर, महेश योगी का शंकराचार्य मन्दिर, फलाहारी बाबा का मन्दिर, तिरुपति बाला मन्दिर, धर्मराज मन्दिर, हरिहर मन्दिर, बिट्ठल आश्रम मन्दिर, नीलकण्ठ महादेव मन्दिर, वेंकटेश्वर मन्दिर, मनोकामना सिद्ध हनुमान मन्दिर और सोमेश्वर मन्दिर के अलावा हिमकुण्ड गृह आदि ऐसे मन्दिरों का क्षेत्र है जिनके दर्शनों के लिए दूर-दूर से दर्शनार्थी और भक्त-जन आते रहते हैं। इन सभी मन्दिरों में त्रिवेणी घाट का सबसे अधिक महत्त्व है, यहां पर लोग स्नान करना और इस कुण्ड का चरणामृत लेना कभी नहीं भूलते हैं।

ऋषिकेश धार्मिक संस्थाओं का भी नगर है। यदि हम इन संस्थाओं का वर्णन न करें तो ऐसा लगेगा कि हमने ऐसी परोपकारी संस्थाओं के प्रति अन्याय किया है। कुछ धार्मिक संस्थाएं इस प्रकार हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## बाबा काली कमली वाला पंचायती क्षेत्र

उत्तराखण्ड की यात्रा में बाबा काली कमली वाले का बहुत बड़ा योगदान है। शायद ही कोई ऐसा तीर्थ-स्थान होगा जहां काली कमली वाली पंचायती क्षेत्र की कोई धर्मशाला न हो। धार्मिक यात्राओं में यात्रियों की सुविधा का सबसे पहले ध्यान इसी क्षेत्र के संस्थापक स्वामी विशुद्धानन्दजी ने किया था। सन् 1880 में बाबा काली कमली वाले ने इस क्षेत्र की स्थापना की थी। स्वामी विशुद्धानन्द जी काली कमली ओढ़े रहते थे। इसीलिए काली कमली वाले बाबा के नाम से वह विख्यात हुए। उनका जन्म सन् 1831 में पंजाब के जलालपुर कीकना जिला गूजरांवाला में हुआ था। बत्तीस वर्ष की अवस्था में इन्होंने संन्यास ले लिया। उत्तराखण्ड के प्रति इनका विशेष मोह था। यात्रियों की कठिनाइयों को वह भली-भांति जानते थे। इसीलिए इन्होंने तीर्थ-यात्रा के मार्गों पर हर चट्टी पर धर्मशालाएं बनवाईं। उनके बाद बाबा रामनाथ ने उनके कार्य का भार सम्भाला। रामनाथजी के बाद मनीराम ने बाबा काली कमली के इस महत्त्वपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाया। आज इस संस्था की ओर से प्रतिदिन दो हजार आदमियों के लिए भोजन, वस्त्र का दान होता है और चालीस स्थानों पर साधुओं के लिए सदाव्रत बंटता है। ऋषिकेश के दो कुष्ठ आश्रम इसी संस्था द्वारा चलाये जाते हैं। गोशाला की स्थापना करके अपाहिज गायों की रक्षा का भार भी यह संस्था संभालती है; ऋषिकेष में इस संस्था द्वारा वाचनालय, पुस्तकालय, अनाथालय, सत्संग भवन, संस्कृत विद्यालय, आठ अस्पताल, आयुर्वेद विद्यालय, अनेकों मन्दिर और पचासी धर्मशालाएं संचालित की जाती हैं। धर्मार्थ क्षेत्र में काली कमली वाला क्षेत्र सबसे पुरानी और महत्त्वपूर्ण संस्था है।

## पंजाब सिंध क्षेत्र

बाबा काली कमली पंचायती क्षेत्र के बाद ऋषिकेश का यह सबसे बड़ा क्षेत्र है। इसकी अनेकों शाखाएं हैं। बाबा काली कमली की तरह इसने भी यात्रियों की सुविधा के लिए अनेक तीर्थों में धर्मशालाएं बनवाई हैं। इस क्षेत्र के द्वारा सत्संग, गोशाला, अन्य क्षेत्र, संस्कृत विद्यालय और अनाथालयों का प्रबन्ध किया जाता है।

## स्वर्गाश्रम ट्रस्ट

यह ट्रस्ट भी अनेक परोपकारी कार्य कर रहा है। तीर्थ-यात्रियों की सुविधा के लिए यह संस्था बाबा काली कमली पंचायती क्षेत्र की तरह कार्य कर रही है।

## कैलाशानन्द मिशन ट्रस्ट

तेरह मंजिल का कैलाश मन्दिर इस ट्रस्ट का सबसे बड़ा आलीशान मन्दिर है। स्वामी कैलाशानन्दजी ने इस ट्रस्ट की स्थापना 1954 में की थी। तपोवन,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



टैक्सी स्टैण्ट और लक्ष्मण झूला के पास यह भवन बना है। यहां पर इस ट्रस्ट का प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चलता है।

दि डिवाइन लाइफ सोसाइटी, गुरुद्वारा हिम कुण्ड कमेटी, दसनामी अखाड़ा भरत मन्दिर ट्रस्ट, रामेश्वरम् ट्रस्ट, नागरिक समिति लक्ष्मण झूला और अवधूत वेश बारह पंथी युगी महासभा आदि ऐसी संस्थाएं हैं जो यात्रियों के लिए और मानव समाज के निर्माण के लिए तथा भारतीय संस्कृति के उत्थान के लिए बहुत प्रसंशनीय कार्य कर रही हैं। इसके साथ ही अनेक ऐसी संस्थाएं हैं जो मनुष्य के चरित्र के उत्थान के कार्य में लगी हुई हैं।

ऋषिकेश ऐसा अद्भुत आध्यात्मिक नगर है जिसके रमणीक क्षेत्र में अनेकों निर्माणकारी कार्य किये जा रहे हैं। यह कार्य युग-यूगों से विभिन्न प्रकार के आश्रमों के माध्यम से हुए हैं जो आज भी अनेक आश्रमों के माध्यम के किये जा रहे हैं। ऋषिकेश के कुछ प्रमुख आश्रमों का उल्लेख करना भी अत्यावश्यक है—

### शिवानन्द आश्रम

आज भारतवर्ष का मुख्य आकर्षण का केन्द्र ऋषिकेश का शिवानन्द आश्रम हो गया है। इस आश्रम में देश के ही नहीं अपितु अनेकों विदेशों के भारतीय विद्या को जानने के इच्छुक शिक्षार्थी आते हैं। सन् 1936 में स्वामी शिवानन्द जी ने इस आश्रम की स्थापना की थी। तीन सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक स्वामी शिवानन्द भारतीय योग-दर्शन, योग-वेदान्त आदि भारतीय विद्याओं के जाने-माने विद्वान रहे हैं। इस आश्रम में समस्त भारतीय विद्याओं के पढ़ने-पढ़ाने की व्यवस्था है। यहां विशाल पुस्तकालय है। स्वयं आश्रम से पुस्तकें, हिन्दी व अंग्रेजी में मासिक पत्रिकाएं निरन्तर प्रकाशित होती हैं। इस आश्रम से विभिन्न प्रकार की सेवाएं की जाती हैं। यही कारण है कि आज विश्व में समस्त भारतीय विद्याओं की सम्पूर्ण जानकारी का यह प्रमुख केन्द्र है। गरीब छात्रों और अनेक कठिनाई में पड़े हुए लोगों की सहायता के लिए इस आश्रम ने अपना एक विशिष्ट कोष स्थापित किया है।

### स्वर्गाश्रम

काली कमली पंचायती क्षेत्र की ओर से स्वर्गाश्रम की स्थापना स्वामी आत्म-प्रकाशजी ने की थी। इस आश्रम में 100 कुटियों का निर्माण साधु तथा यात्रियों के लिए किया गया है। इस आश्रम में संस्कृत का विद्यालय है-जिसमें छात्रों को संस्कृत का अध्ययन निःशुल्क कराया जाता है और भोजन भी निःशुल्क दिया जाता है। स्वर्गाश्रम का पुस्तकालय बहुत सुन्दर है। गंगा के बाएं तट पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



स्वर्गाश्रम बहुत आकर्षक क्षेत्र है। यात्री, गंगा के पार मुनि-की-रेती के पास से शिवानंद झूला पुल को पारकर जाते हैं। इस आश्रम का निर्माण ऐसे स्थल पर हुआ है और इसका वातावरण इतना शान्त और सुखद है कि जो भी इसमें पहुंचता है वह अपने आपको सचमुच में स्वर्ग के सुख के समान पाता है। इस आश्रम की ओर से भी कई धर्मशालाएं बनवायी गयी हैं और कई अन्य क्षेत्र चलाये जा रहे हैं। आज ऋषिकेश का यह सबसे बड़ा परोपकारी आश्रम है।

**परमार्थ निकेतन**

यह आश्रम भी स्वर्गाश्रम की ही ओर गंगा के बाएं तट पर बड़े अद्भुत ढंग से बनाया हुआ है। इस परमार्थ निकेतन का घंटाघर दूर से ही यात्रियों को अपनी ओर समय का संकेत करता हुआ आकर्षित करता है। इस परमार्थ निकेतन की स्थापना स्वामी सुखदेवानन्दजी ने की थी। संस्कृत के उच्च अध्ययन के लिए इस परमार्थ निकेतन में भी निःशुल्क शिक्षा, भोजन, आवास एवं छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। यहां 600 कमरों की एक अतिथिशाला भी है। प्रतिदिन परमार्थ निकेतन में प्रवचन सत्संग होता है। इस आश्रम में भारत के सभी देवी-देवताओं तथा महापुरुषों के चित्र अंकित किये गए हैं। अन्य आश्रमों की तरह यहां भी अन्न क्षेत्र और रोगियों के लिए अस्पताल आदि की व्यवस्था है। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार और प्रसार के लिए परमार्थ निकेतन की ओर से परमार्थ नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन होता है।

**वेद निकेतन धाम**

परमार्थ निकेतन के बाद हरिद्वार की तरफ वेद-निकेतन धाम है। इस वेद निकेतन धाम के संस्थापक मुनीषानन्द महाराजजी हैं। इस धाम की विशेषता यह है कि यहां विशेषकर एक नये आध्यात्मिक नगर की स्थापना की गयी है। यहां 108 गुफाएं बनी हुई हैं जिनमें योगाभ्यास करवाया जाता है। यहां योग की प्रदर्शनी की जाती है। इस धाम में 501 कमरे हैं जो विशेषकर विद्यालय, चिकित्सालय, पुस्तकालय, वेदमन्दिर, मुद्रणालय के काम में आते हैं। यहां भागीरथ कुण्ड भी बना हुआ है। यहां की योग प्रदर्शनी में अनेक अद्भुत वस्तुओं का प्रदर्शन किया जाता है। जैसे पानी में तैरते हुए पत्थर और 9 इंच के गोलाकार कागज के पत्रों पर दुर्गासप्तसती की कथा और रामायण लिखी हुई मिलती है।

**महर्षि ध्यानपीठ**

वेद निकेतन से हरिद्वार की तरफ आगे महर्षि योगी का ध्यानपीठ है। इस आश्रम की विशेषता यह है कि चौरासी सिद्धों की याद में यहां चौरासी गुफाएं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



बनायी गयी हैं । इसके अतिरिक्त जमीन के अन्दर भी सौ से अधिक गुफाओं का निर्माण किया गया है । जिन गुफाओं में महर्षि योगी साधकों को योग की साधना का पाठ पढ़ाते हैं । उनके ध्यानपीठ में भारत से अधिक विदेशों के शिष्य होते हैं । इस ध्यानपीठ में भी संस्कृत विद्यालय है जहां शिक्षा और भोजन एवं वस्त्र की निःशुल्क व्यवस्था है ।

**गीताश्रम**

गीता का प्रचार अधिक-से-अधिक करने हेतु इस आश्रम की स्थापना स्वामी वेदव्यास आनन्दजी द्वारा हुई थी । गंगा के बाएं किनारे पर स्वर्गाश्रम के बराबर ही गीताश्रम स्थित है । इस आश्रम के द्वारा ऋषिकुल विद्यालय, गीता पुस्तकालय तथा मुद्रणालय और गीता धर्म प्रचार आदि कई मन्दिर निर्मित किये गए हैं । साधकों एवं अनुयायियों के लिए सुन्दर अतिथिशाला गीताश्रम में है । गीता से सम्बन्धित गीता सन्देश के लिए मासिक पत्रिकाएं निकलती हैं और सदैव प्रवचन और सत्संग होते रहते हैं ।

**दुर्गा मन्दिर**

स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती द्वारा मुनि-की-रेती में स्थापित दुर्गा मन्दिर आजकल विशेष महत्त्व का आश्रम है । मां दुर्गा के भक्तों की यहां बहुत भीड़ रहती हैं । विदेशी भक्त भी यहां बहुत हैं । एक विदेशी कुमारी विश्वरूपा को सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती कंठाग्र है । उसका सस्वर शुद्ध पाठ बड़े-बड़ों को आश्चर्य में डाल देता है । ओंकारानन्द सरस्वती नीलायम नाम से उनका एक अच्छा विद्यालय चल रहा है । देव प्रयाग में एक डिग्री कॉलेज भी चलाया जा रहा है ।

स्वामी ओंकारानंद इस समय सबसे अधिक प्रख्यात संन्यासी हैं जिनकी देश व विदेश में सबसे अधिक ख्याति है । दुर्गा मन्दिर की कल्पना उन्हीं की है । जिसे स्वामी विश्वेश्वरानंद ने नई शक्ति दी है । स्वामी विश्वेश्वरानंद जैसे कर्मठ संन्यासी के द्वारा दुर्गा मन्दिर का धार्मिक एवं संस्कृतिक कार्य बड़े कौशल से चल रहा है । स्वामी विश्वेश्वरानंद इस संस्था के प्राण हैं ।

**शान्ति सेवाश्रम**

लक्ष्मण झूला के पास गंगा के बाएं किनारे पर यह आश्रम है । रामानन्द सम्प्रदाय के फलाहारी बाबा ने इस शान्ति सेवाश्रम की स्थापना की थी । यहां सदाव्रत चलता है । छात्रों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है ।

**अमृतधारा आश्रम**

तपोवन नामक स्थान पर नाथ सम्प्रदाय के योगी धड़ीनाथ ने इसकी स्थापना की थी । इसमें गोरखनाथ सम्बन्धित नाथ संप्रदाय की शिक्षा दी जाती है । विशेष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



अवसरों पर यहां अन्न क्षेत्र चलता है ।

## हरिहर पीठ आश्रम

1008 स्वामी हरिहरानन्दजी ने इसकी स्थापना लक्ष्मण झूले के बाएं तट पर की थी । यहां पर पुस्तकालय, सत्संग भवन, अन्न क्षेत्र, अतिथि निवास और योग प्रशिक्षण केन्द्र हैं ।

## साईं आश्रम

साईं आश्रम भी तपोवन नामक स्थान पर कोठीनुमा भवन पर स्थित है। यह सभी प्रकार की आधुनिक सुख-सुविधाओं से सम्पूर्ण आश्रम है । सत्य साईं के अनुयायी इसमें साधना करते हैं । यहां रहने, खाने और ठहरने की उत्तम व्यवस्था है ।

## कैलाश आश्रम

इस आश्रम में शंकराचार्य के अनुयायी दसनामी सम्प्रदाय के विद्वान संन्यासी रहते हैं । सम्वत् 1937 में इसकी स्थापना स्वामी धनराज गिरि ने की थी । इस आश्रम के शंकराचार्य का मन्दिर, संन्यासी निवास, दर्शन विद्यालय, पुस्तकालय और चैतन्य भवन देखने लायक हैं । इस आश्रम की मुख्य विशेषता यह है कि यह मुनि-की-रेती में मुख्य सड़क के किनारे पर स्थित है । यहां पर उच्चकोटि के संन्यासी रहते हैं । यह आश्रम अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए भी विख्यात है ।

## योग श्रीपीठ

मुनि-की-रेती में ही स्वामी श्रीओम तीर्थ ने इसकी स्थापना की थी । 'दिव्यानन्द' नामक योग सम्बन्धी पत्रिका यहां से प्रकाशित होती है । योग के प्रशिक्षणार्थियों के लिए यहां अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था है ।

## योग निकेतन

योग श्रीपीठ के समीप ही योग निकेतन भी मुनि-की-रेती में स्थित है । इसकी स्थापना बालब्रह्मचारी स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी ने की थी । इस आश्रम में हठयोग आसन, प्राणायाम मुद्रा आदि का बहुत सुन्दर ज्ञान कराया जाता है । इस योग निकेतन की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें विश्व में आदर पा चुकी हैं । जिनमें आत्मविज्ञान, ब्रह्मज्ञान, निर्गुणब्रह्म, हिमालय का योगी और बहिरंग योग आदि प्रमुख हैं । यह एक ऐसा योग निकेतन है जिसमें सैकड़ों भारतीय तथा विदेशी योग के साधक शास्त्रीय योग पद्धति को जानने के लिए और प्रशिक्षण लेने के लिए यहां आते हैं । योग निकेतन में योग मन्दिर, यज्ञ धर्मशाला, पुस्तकालय और निवास भवन बहुत अच्छे हैं ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



### स्वामी राम का हिमालय योग केन्द्र

हिमालय के अंचल गढ़वाल में पैदा हुए स्वामी राम ने ऋषिकेश स्थित पशु-लोक में अपना एक योग केन्द्र स्थापित किया है। स्वामी राम विश्व के अनेक देशों में योग की शिक्षा देने के लिए जाते हैं। वे अपने विदेशी साधकों को हिमालय क्षेत्र में ले जाकर योग की उच्च शिक्षा प्रदान करते हैं। नेपाल में भी उनका एक योग केन्द्र बनने वाला है। यहां भी साधकों को रहने और साधना करने का अत्यन्त अच्छा प्रबन्ध है। स्वामी राम ने योग सम्बन्धी अनेक पुस्तकें अंग्रेजी और हिन्दी में लिखी हैं, जिनका इस समय विश्व में विशेष महत्त्व समझा जा रहा है।

इसके अतिरिक्त ऋषिकेश में अनेक साधकों के केन्द्र हैं जहां अनेक आश्रम स्थित हैं। भारतीय संस्कृति और धर्म की विभिन्न शाखाओं के उपासक यहां देखे जा सकते हैं। गंगा के किनारे विदेशों से आये हुए जहां अनेक साधक हैं—वहां अपार शान्ति की खोज में आने वाले हिप्पी बन्धु भी ऋषिकेश में गंगा के किनारे मस्ती से लेटे हुए मिल जाते हैं !

ऋषिकेश समस्त भारतवर्ष के प्रमुख नगरों से रेल और मोटर मार्गों से जुड़ा हुआ है। यहां जितने भी लोग भारतवर्ष से आते हैं उनके रहने-ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था है। फिर भी यात्रा में आने वाले विभिन्न क्षेत्र के यात्रियों की सुविधा के लिए यहां पर कुछ सूचनाएं देना उपयुक्त रहेगा। ऋषिकेश में गढ़वाल विकास निगम की ओर से रहने और यात्रा में जाने के लिए पर्याप्त व्यवस्था का प्रबन्ध है। यहां कुछ प्रमुख विश्रामगृह इस प्रकार हैं—

**1. वन विभाग का विश्रामगृह**

यह मुनि-की-रेती में स्थित है। क्षेत्रीय वनाधिकारी टेहरी की अनुमति से यहां ठहरने की आज्ञा प्राप्त की जा सकती है।

**2. सार्वजनिक निर्माण विभाग**

यहां सभी सुविधाओं से युक्त कमरे हैं, यह ऋषिकेश में स्थित है। अधिशासी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग ऋषिकेश से इसमें ठहरने की स्वीकृति प्राप्त की जा सकती है।

**3. टूरिस्ट विश्रामगृह मुनि-की-रेती**

यह गढ़वाल मण्डल विकास निगम द्वारा संचालित किया जाता है। यहां रहने की विशेष सुविधा है। गढ़वाल विकास मण्डल के ऋषिकेश स्थित स्थानीय मैनेजर या जनरल मैनेजर से यहां ठहरने की व्यवस्था की जा सकती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## 4. तिरुपति देव स्थानम्

यह बहुत सुन्दर स्थान है और यहां भी टूरिस्टों के ठहरने के लिए और यात्रियों को ठहरने के लिए सुन्दर प्रबन्ध किया गया है। यहां के मैनेजर से सम्पर्क किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ऋषिकेश में बहुत से ऐसे स्थान हैं जहां रहने की उत्तम व्यवस्था है।

धर्मशालाएं ऋषिकेश में भी बहुत हैं। धार्मिक यात्री जो उत्तराखंड गढ़वाल के चारों धामों की यात्रा करने निकलते हैं, उन्हें प्रायः धर्मशालाओं में स्थान मिल जाता है। अब इन धर्मशालाओं में भी आधुनिक सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करवा दी गयी हैं। कुछ धर्मशालाओं के नाम इस प्रकार हैं—

बाबा काली कमली वाला पंचायती क्षेत्र की पंचायती धर्मशाला ऋषिकेश में है, जहां रहने की अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था है। शिवानन्द आश्रम धर्मशाला, गीता भवन धर्मशाला, गोपाल कुटी धर्मशाला, जीवानी माई धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, रुक्मणी धर्मशाला, अवधूत आश्रम धर्मशाला, जयपुर वाली धर्मशाला, सहारनपुर वाली धर्मशाला, भगवान् आश्रम धर्मशाला, भजन आश्रम धर्मशाला, परमार्थ निकेतन धर्मशाला, पंजाब सिंध धर्मशाला, पुष्कर मन्दिर धर्मशाला, खुर्जावाली धर्मशाला, दिल्ली वाली धर्मशाला, सिंधी धर्मशाला, विट्ठल आश्रम धर्मशाला, मनभरी धर्मशाला, जयराम अन्नक्षेत्र धर्मशाला, नेपाली क्षेत्र धर्मशाला आदि अनेकों धर्मशालायें ऋषिकेश में हैं। जिनमें रहने की सुन्दर व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त अनेक और भी धर्मशालाएं हैं, जहां रहने की उत्तम व्यवस्था है। निरन्तर यहां धर्मशालाएं अनेकों धार्मिक लोगों के द्वारा बनाई जा रही हैं।

ऋषिकेश में धर्मशालाएं और विश्राम घरों के अतिरिक्त कुछ प्रमुख होटल भी हैं जिनमें से कुछ होटलों के नाम इस प्रकार हैं—

लक्ष्मणा झूला होटल, चोटीवाला होटल, इन्द्रलोक होटल, जनता लाज होटल और मेनका होटल इत्यादि। बसेरा और नटराज यहां के तीन सितारा और पांच सितारा होटल हैं जिनमें आधुनिक सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

होटलों की सुविधा के साथ बैंकों की और औषधालयों आदि की सुन्दर व्यवस्था है। ऋषिकेश अब एक विशाल धार्मिक, औद्योगिक और आधुनिक व्यावसायिक नगर के रूप में दिनों-दिन बदल रहा है। यहां भारतीय स्टेट बैंक, यूनियन बैंक आफ इण्डिया, को-आपरेटिव बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, पंजाब-सिंध बैंक खुल गये हैं, जहां से औद्योगिक विकास के लिए पर्याप्त सुविधाएं हो गई हैं। बैंकों के अलावा डाक और तारघर आदि की भी सुन्दर व्यवस्था है। चिकित्सा आदि की भी सुन्दर व्यवस्था है। आधुनिक विज्ञान का एक मन्दिर ऋषिकेश में आई॰ डी॰ पी॰ एल॰ दवाइयों का कारखाना है जो रूस की सहायता से स्थापित किया गया है। पशुलोक सेवा का एक अन्य ढंग का मन्दिर बन रहा है जो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



जल विद्युत मिलेगी।

ऋषिकेश का सबसे अधिक आकर्षण का केन्द्र लक्ष्मण झूला है। युग-युगों से भारतीय जनता के मन को आकर्षित करने वाली रामायण की कथा का इस पुल से सम्बन्ध है। कथा इस प्रकार है कि राम ने जब सीता को वनवास दिया तो लक्ष्मण, सीता को इसी पुल के समीप छोड़ने गये थे। ऐसी भी कथा है कि लक्ष्मण ने यहां पर तपस्या की थी। युग-युगों से इस पुल के प्रति भारतीय धर्मप्राण जनता का अगाध स्नेह बना हुआ चला आ रहा है। पहले यहां पर जूट की रस्सियों का पुल था। सन् 1889 में लोहे की रस्सियों का पुल बनाया गया। आज जो यह पुल यहां पर विद्यमान है वह तब से इसी प्रकार से लोहे का झूला पुल बनता चला आ रहा है। लक्ष्मण झूला से पौड़ी गढ़वाल की ओर बारह किलोमीटर की दूरी पर सुन्दर मनोहारिणी पर्वत श्रृंखला पर महादेव नीलकण्ठ का मन्दिर है। नीलकण्ठ महादेव की चोटी से हिमाच्छादित हिमालय की चोटियां अत्यन्त सुन्दर दिखाई देती हैं।

ऋषिकेश में यात्री जब इन सब स्थानों को देख लेता है और प्रकृति के साथ गंगा की निर्मल जल-धाराओं के साथ मन की शान्ति प्राप्त कर लेता है तो उसे उत्तराखण्ड की स्वर्गभूमि की ओर बढ़ने की लालसा निरन्तर होने लगती है और जिस उद्देश्य से वह उत्तराखण्ड की तीर्थयात्रा के लिए घर से चला होता है, उसको पूर्ण करने के लिए वह तत्पर हो जाता है।

ऋषिकेश से उत्तराखण्ड की यात्रा के लिए जैसा हमने पीछे भी कहा है कि धार्मिक यात्रा वामार्त होकर की जाती है। यहीं पर प्रत्येक धार्मिक यात्री को यह निर्णय लेना होता है कि वह कौन-सी अपनी यात्रा पहले आरम्भ करे। यों तो आजकल ऋषिकेश से सीधे बदरीनाथ और केदारनाथ की यात्रा होने लगी है परन्तु हमारा उद्देश्य तो उत्तराखण्ड के चारों धामों की यात्रा शास्त्र विधि के अनुसार करना है। इसलिए हम सबसे पहले ऋषिकेश से यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ बदरीनाथ की यात्रा का वर्णन प्रस्तुत करते हैं—

जो यात्री उत्तराखण्ड के सौन्दर्य के उपासक हों और पर्याप्त खर्चा कर सकते हों उन लोगों से हमारा आग्रह है कि देहरादून होकर यमुनोत्तरी का रास्ता टैक्सी से या अपनी निजी कार से लें, क्योंकि देहरादून भी उत्तराखण्ड गढ़वाल का एक बहुत महत्त्वपूर्ण नगर है और यहां से भी यमुनोत्तरी के लिए अति सुन्दर नगर मसूरी होकर मार्ग जाता है। जिसका सौन्दर्य अपने आप में अतुलनीय है। अतः इस मार्ग पर यदि यात्री या प्रकृति प्रेमी जायें तो सबसे उत्तम रहेगा।

यों तो जैसा हमने पहले कहा है कि ऋषिकेश से यात्री देव प्रयाग जायें और देव प्रयाग में स्नान और पिण्डदान करने के बाद टेहरी होकर यमुनोत्तरी की ओर जायें तो यह धार्मिक दृष्टि से उत्तम मार्ग है। परन्तु आजकल मोटर मार्ग बन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



जाने के बाद इस मार्ग से बहुत कम यात्री, बल्कि कुछ कट्टर धर्मावलम्बी ही इस मार्ग का अवलम्बन करते हुए टेहरी, धरासू, बड़कोट होकर यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी केदारनाथ, बदरीनाथ की यात्रा करते हैं। अन्यथा कोई नहीं जाता। यहां पर तीसरा रास्ता टेहरी होकर यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी का है। इसलिए हम तीनों रास्तों का विवरण यात्रियों के लाभार्थ दे रहे हैं।

पहला मार्ग ऋषिकेश से देहरादून, मसूरी, बड़कोट होकर यमुनोत्तरी जाने के लिए हैं। दूसरा मार्ग ऋषिकेश से यमुनोत्तरी जाने के लिए नरेन्द्रनगर, चम्बा, धरासू, होते हुए है। तीसरा मार्ग ऋषिकेश से लक्ष्मण झूला, वशिष्ठ गुफा, व्यासी, साकनीधार होते हुए देव प्रयाग, देवप्रयाग से टेहरी, टेहरी से धरासू और धरासू से बड़कोट, बड़कोट से सयानाचट्टी, सयाना चट्टी से हनुमान चट्टी, हनुमान चट्टी से फूल चट्टी, फूलचट्टी से जानकी चट्टी, जानकी चट्ठी से यमुनोत्तरी जाने के लिए है। इस रास्ते में धार्मिक भावना वाले लोग देवप्रयाग में, गंगा में स्नान करने के बाद यमुनोत्तरी की तरफ जाते हैं परन्तु अब यह रास्ता पूरी तरह से बन्द-सा हो गया है।

जब मोटर मार्ग नहीं था उस समय भी ऋषिकेश से देहरादून मसूरी के मार्ग से यमुनोत्तरी जाने वाले यात्री और प्रकृति-प्रेमी कई होते थे। ऋषिकेश या हरिद्वार से रेल द्वारा देहरादून और देहरादून से मसूरी मोटर से जाते थे। मसूरी से कॉणाताल होकर आगे बढ़ते थे। मसूरी से जबरखेत, सावाखोली होकर एक रास्ता धरासू को, उत्तरकाशी को और टेहरी को जाता था। मसूरी से रास्ता अत्यन्त सुन्दर देवदारों के वृक्षों के मध्य से होकर जाता था। प्रकृति-प्रेमी इसी मार्ग से होकर धरासू निकलते थे और तब आगे बढ़ते थे।

आपको सबसे पहले प्रकृति के अनोखे क्षेत्र मसूरी के मार्ग से यमुना नदी के किनारे-किनारे चलने वाले मार्ग से उत्तराखण्ड के यमुनोत्तरी धाम की यात्रा पर ले चलते हैं।

## देहरादून

हरिद्वार में गंगा की आरती उतारने और पितरों का श्राद्ध करने के पश्चात् उत्तराखंड की यात्रा की ओर जाने वाले धार्मिक यात्रियों से लिए शास्त्रानुसार वामार्त यात्रा का मार्ग देहरादून होकर यमुनोत्तरी का भी है। अनेक यात्री सीधे-हरिद्वार से ही देहरादून रेल से, बस से, टैक्सी से या अपनी निजी गाड़ियों से चले जाते हैं और कुछ यात्री ऋषिकेश से बस, टैक्सी या अपनी कारों से देहरादून पहुंचते है।

देहरादून गढ़वाल मंडल की [illegible] घाटी के मध्य स्थित अत्यन्त सुन्दर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



नगर है। चारों ओर से शाल, शीशम और अन्य कई प्रकार के वृक्षों से देहरादून नगर आरक्षित है।

सन् 1699 में गुरु रामराय ने इस सुन्दर घाटी में डेरा डाला था। मुगल बादशाह औरंगजेब ने तत्कालीन गढ़वाल नरेश फतेहशाह से अनुरोध किया था कि वे इस स्थान को गुरु रामराय को अपने गुरुद्वारा बनाने के लिए दानस्वरूप दे दें। गढ़वाल नरेश फतेहशाह ने मुगल बादशाह की सिफारिश पर पांच गांवों की जागीर को (वर्तमान देहरादून नगर की भूमि को) गुरु रामराय को दानस्वरूप दे दिया था। गुरु का डेरा पड़ने से इस स्थान का नाम डेरादून से देहरादून हो गया। आज देहरादून उत्तर प्रदेश का ही नहीं समस्त भारतवर्ष का एक सबसे अच्छा और उन्नतिशील नगरों में गिना जाता है।

गंगा-यमुना की जलधाराओं के मध्य में स्थित देहरादून अपनी प्राकृतिक सुन्दरता और स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु के लिए समस्त भारतवर्ष में सबसे अधिक विख्यात और प्रशंसनीय नगर है।

देहरादून में गुरु रामराय का झंडा और गुरुद्वारा प्रसिद्ध हैं। देहरादून के लोग ही नहीं अपितु समस्त क्षेत्र के लोग दरबार के इस झंडे का सम्मान करते हैं। गुरु रामराय महाराज की गद्दी के माध्यम से महन्त श्री इन्दिरेश चरण दास जी द्वारा देहरादून में कई विद्यालय निःशुल्क संचालित किए जाते हैं। यही नहीं हिमाचल प्रदेश और गढ़वाल जिलों के कई स्थानों पर भी महन्तजी द्वारा निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है। गुरु रामराय की गद्दी के माध्यम से जितनी भी सामाजिक सेवा हो सकती है, उसको वर्तमान महन्त श्री इन्दिरेश चरण दासजी हर क्षेत्र में कर रहे हैं। अपने कार्यों के लिए विख्यात महन्त इन्दिरेश चरणदास जी महान विद्वान भी हैं। साधारण जीवन जीने वाले महन्त जी मानव सेवा में सबसे अधिक विश्वास मानते हैं।

देहरादून के प्रसिद्ध बाजारों में पल्टन बाजार, मोती बाजार, लक्ष्मण चौक राजपुर रोड, चकराता रोड, रायपुर रोड आदि प्रसिद्ध हैं। देहरादून का डालन वाला क्षेत्र बेंगलौर नगर की याद ताजा करवा देता है।

देहरादून की वन अनुसंधानशाला चकराता रोड पर स्थित है। इसका सारा क्षेत्र ग्यारह सौ एकड़ में फैला हुआ है। इस अनुसंधानशाला में वनस्पति विज्ञान-संग्रहालय और अनेक प्रकार के वन सम्बन्धी प्रयोगात्मक वन लगे हुए हैं। फारेस्ट रिसर्च का यह एशिया में सबसे बड़ा केन्द्र है। वन सम्बन्धी जानकारी देने वाला यह रिसर्च सेन्टर देहरादून की शान है।

देहरादून का भारतीय सैनिक अकादमी का केन्द्र भी अपने आप में एक बहुत भारी आकर्षण है। यह भारत की गौरवमयी संस्था है जहां भारत की सेना के कमाण्डरों को शिक्षा दी जाती है। यह संस्थान भी चकराता रोड पर स्थित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



सर्वे ऑफ इण्डिया का सबसे बड़ा मुख्यालय देहरादून में है। इसका एक केन्द्र हाथी बड़कला और दूसरा रायपुर रोड पर स्थित है। सर्वे के विषय में इस संस्था ने विश्व में अपना कीर्तिमान स्थापित किया है।

आधुनिक युग में ऊर्जा का बड़ा महत्त्व है। देहरादून की ओ० एन० जी० सी० अपने आप में एक बहुत बड़ी संस्था है। इस संस्था के माध्यम से समस्त देश में तेल, गैस के केन्द्रों का अध्ययन किया जाता है।

इसके अलावा भारतवर्ष के अनेक सर्वेक्षण सम्बन्धी कार्यों का मुख्य केन्द्र देहरादून है, जिसमें रायपुर की आर्डीनेन्स फैक्टरी से लेकर भू-वैज्ञानिक क्षेत्रों तक के कई केन्द्र हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में अनेक डिग्री कॉलेज और बच्चों के कई महत्त्वपूर्ण संस्थान हैं जैसे दून स्कूल आदि। महिलाओं के अनेक शिक्षा-केन्द्र और टेक्निकल उद्योग केन्द्र भी है। यहां के विद्यालय सर्वोत्तम माने जाते हैं जिनमें दूर-दूर से विद्यार्थी पढ़ने आते हैं।

ऐसे प्रमुख केन्द्रों के अलावा देहरादून में कुछ प्राकृतिक और धार्मिक स्थान भी हैं जिनका अपना एक विशिष्ट महत्त्व है।

### सहस्रधारा

यह देहरादून नगर से चौदह किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

यहां पहाड़ की कन्दरा में कैल्सियम की हजारों धाराएं निरन्तर बहती रहती हैं। इन हजारों धाराओं के नाम से ही इसका नाम 'सहस्रधारा' पड़ा है। कन्दरा के बाहर कैल्सियम के पानी की बूंदें जब फूल-पत्तियों पर पड़ती हैं तो उनका आवरण दूसरे प्रकार का हो जाता है तथा वे दूर से पत्थर के समान दिखाई देने लगती हैं।

सहस्रधारा के पास ही दूसरे किनारे पर एक अन्य स्रोत है जहां से जल फूटता रहता है। यह गन्धक धारा है। सहस्रधारा में आने वाले सभी लोग इस पानी को पीते हैं। रक्त विकार रोगी यहां प्राकृतिक चिकित्सा के लिए पहुंचते हैं और इस जल में नहाते रहते हैं। लौटते समय लोग बोतलों में गन्धक के इस पानी को ले जाते हैं। रविवार के दिन या छुट्टी के दिन यहां मेला-सा लगा रहता है। अब यहां विश्रामगृह बना दिया गया है। गढ़वाल विकास निगम की बसों के द्वारा 'देहरादून दर्शन' कार्यक्रम के अन्तर्गत सहस्रधारा भी सम्मिलित है।

### टपकेश्वर

देहरादून से पांच किलोमीटर की दूरी पर टपकेश्वर महादेव का मंदिर है जहां दूर-दूर से लोग दर्शन करने आते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इसके अलावा यहां दर्शनीय स्थानों में नौ किलोमीटर दूर रावसंकेव का भी

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। देहरादून से चवालीस किलोमीटर की दूरी पर डाक-पत्थर नामक एक नया औद्योगिक नगर बन रहा है, जहां से हमें बिजली प्राप्त होती है। डाक-पत्थर से 6 किलोमीटर आगे कालसी है। अशोक की प्रसिद्ध लाट अभी भी अशोक की याद दिलाती है। कालसी से आगे चकरौता है। देहरादून जिले का यह नगर अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।

देहरादून में गढ़ी के पास गोरखा रेजीमेंट का सबसे बड़ा केन्द्र और मुख्यालय है। मिलिट्री का बहुत बड़ा अस्पताल भी यहीं स्थित है। इसी केन्द्र से आगे टपकेश्वर का शिव मन्दिर है।

देहरादून में रहने के लिए अनेक शानदार होटल हैं। साथ ही हर विभाग के शानदार विश्रामगृह हैं। इसके अतिरिक्त गढ़वाल विकास मंडल की ओर से भी पर्याप्त व्यवस्था है। सिंचाई विभाग के भी यहां कई अपने विश्रामगृह हैं। धर्मशालाएं भी देहरादून में अनेक हैं, जिनमें जैन धर्मशाला और अग्रवाल धर्मशाला मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैं।

देहरादून में खाने, रहने और घूमने आदि में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है। देहरादून का चावल और लीचियां बहुत प्रसिद्ध हैं। अब तो देहरादून आम के लिए भी प्रसिद्ध हो गया है। कटहल का भी वहां पर्याप्त क्षेत्र है।

देहरादून की रमणीक धरती के दर्शन करने के बाद हम आपको मसूरी की ओर ले चलते हैं। मसूरी से यमुनोत्तरी की यात्रा सरल और सुगम है। इस यात्रा में आपको नीचे लिखी दूरियों को पार करना होगा, तब आप यमुनोत्तरी पहुंच सकेंगे।

| स्थान | ऊंचाई (मीटर में) | दूरी कि० मी० (एक स्थान से दूसरे स्थान तक) | दूरी कुल कि० मी० |
|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 |
| देहरादून | 701 | —— | —— |
| मसूरी | 1921 | 36 | 36 |
| केमटी फाल्स | 1524 | 12 | 48 |
| यमुना ब्रिज | 772 | 16 | 64 |
| डामटा | 1372 | 25 | 89 |
| नौगांव | 1524 | 28 | 117 |
| बड़कोट | 1828 | 11 | 128 |
| सयानाचट्टी | 1982 | 29 | 157 |
| हनुमानचट्टी | 2134 | 05 | 162 |
| फूलचट्टी | 2561 | 05 | 167 |
| जानकीचट्टी | 2576 | 02 | 169 |
| यमुनोत्तरी | 3323 | 07 | 175 |

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



देहरादून से जब आप मसूरी की ओर राजपुर रोड पर चढ़ते हैं तो दिलाराम बाजार से आगे बस, टैक्सी या आपकी अपनी गाड़ी प्रकृति की सुन्दर गोद में दौड़ती हुई और आपको रिझाती हुई मसूरी की ओर ले जाती है। देहरादून से आप राजपुर पहुंचते हैं तो यहां आपको रामतीर्थ आश्रम, शहंशाह आश्रम, सिद्धानन्द आश्रम और रामकृष्ण आश्रम के दर्शन होते हैं। देहरादून से बारह किलोमीटर की दूरी पर राजपुर है। यह कई आश्रमों एवं सुन्दर काटेजों वाला स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। राजपुर से दस किलोमीटर आगे पैदल मार्ग 'पर्वतों की रानी' का क्षेत्र शुरू हो जाता है। देहरादून से जब आप मसूरी की ओर जाते हैं तो प्रकृति मसूरी की अद्भुत छटा आपको अपनी ओर आकर्षित करती हुई अपने में समेटती चली जाती है। आप जब देहरादून से रात में मसूरी देखते हैं तो लगता है कि आकाश का एक छोर टूटकर यहां गिर पड़ा है। मसूरी की ओर सांप के समान मुड़ती हुई सड़कों को पार करते हुए जब आप देहरादून से मसूरी पहुंचते हैं तो आपको लगता है कि हम धरती से स्वर्ग के अंचल में आ पहुंचे हैं। मसूरी से रात्रि के समय देहरादून की जगमगाहट ऐसी लगती है मानो आकाश का एक छोर वहां टूटकर बिखर गया हो।

## मसूरी से यमुनोत्तरी

मसूरी भारत के सुन्दरतम नगरों में से एक सुन्दर नगर है। मसूरी अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, स्वच्छन्दता और विभिन्न प्रकार के मनोरंजनों के लिए प्रसिद्ध हैं। अलौकिक प्राकृतिक छटा के कारण ही मसूरी को 'पर्वतों की रानी' के नाम से सारे देश में जाना जाता है। ग्रीष्म ऋतु में मसूरी का आनन्द और यहां की जलवायु बहुत सुखदायी होती है। यहां स्वास्थ्य-लाभ के लिए और छुट्टी बिताने के लिए समस्त भारत एवं विदेशों के लोग जाते हैं। प्रकृति-प्रेमियों के लिए वर्ष भर यह नगर आकर्षण का केन्द्र बना रहता है। मसूरी नगर के विभिन्न क्षेत्रों में नृत्य, स्केटिंग, घुड़सवारी, थिएटर, संगीत, प्रदर्शनी, सिनेमा आदि मनोरंजनों के आयोजन होते रहते हैं। मसूरी में पहाड़ के ऊपर-नीचे इधर-उधर अनेक प्रकार के बंगले व मकान बने हैं, जो बांज और देवदार के वृक्षों के मध्य बहुत सुन्दर लगते हैं। यहां से देहरादून की घाटी की ओर नजर डालने से बहुत सुन्दर दृश्य दिखायी देते हैं। मसूरी से ऋषिकेश हरिद्वार एवं गंगा के दर्शन भी साफ-साफ हो जाते हैं। मसूरी से पिछली तरफ देखने से हिमालय के अद्भुत दृश्यों के दर्शन भी होते हैं। मसूरी के पीछे यमुना नदी भी साफ दिखायी देती है। गंगा और यमुना यहां पर जो आस-पास दिखायी देती हैं लगता है कि बहुत नजदीक कहीं मिल जायेंगी ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



परन्तु यहां समीप दिखायी देने वाली दोनों नदियां समस्त उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों व नगरों की परिक्रमा कर अन्त में प्रयागराज इलाहाबाद में सरस्वती से जाकर अपना संगम करती हैं।

गर्मियों में मसूरी जितनी रमणीय है उतनी ही शीतकाल में भी आकर्षक है। मसूरी का हिमपात अपने आप में विलक्षण सौन्दर्य का आगार है। मसूरी के हिमपात को देखने के लिए देश के दूर-दूर किनारों से लोग दिसम्बर से फरवरी तक के महीनों में यहां आते हैं। यहां तो बर्फ कहीं-कहीं मार्च के महीनों में भी गिरती है, परन्तु दिसम्बर से लेकर फरवरी तक तो यहां हिमपात निश्चितप्राय ही होता है। मसूरी की सारी नगरी जब बर्फ की सफेद चादर से ढक जाती है तो यहां का प्रत्येक कण-कण अपनी शोभा को दुगुणित कर देता है। चांदनी रातों में हिमपात की सुन्दरता और भी सुन्दर दिखायी देती है। चांदनी रात में गिरते हुए हिमपात के फुहारों को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे शशिदेव कृपालु होकर अपनी विशाल झोली से रजत रूपहली चांदनी को धरती पर बिखेर रहे हैं। दिन के समय में जब हिम की फुहारें पड़ती हैं तो लगता है सम्पूर्ण पर्वत-शृंखला अपने ऊपर रुई के फाहे ओढ़े जा रही है। ऐसे समय प्रकृति-प्रेमी गिरती हुई बर्फ का आनन्द लेने सड़कों पर निकल पड़ते हैं और बर्फ की गेंद बनाकर उससे खेलते हैं। बर्फ के अनेकों खेल यहां होते हैं, इसलिए भी यदि कहा जाए कि मसूरी केवल बसन्त ऋतु से लेकर ग्रीष्म ऋतु तक का आकर्षण नगर नहीं है बल्कि सम्पूर्ण वर्ष का सौन्दर्य प्रदान करने वाला आधुनिक नगर बन गया है तो किसी प्रकार की अतिशयोक्ति न होगी। इस नगर में अब वर्ष-भर पर्यटक, प्रकृति-प्रेमी और पैदल भ्रमणार्थी निरन्तर आते रहते हैं।

देहरादून से 36 किलोमीटर की दूरी पर 1921 मीटर की ऊँचाई पर मसूरी का नगर स्थित है। इस नगर की सुन्दरता का आकर्षण इतना अधिक है कि कई शैलानी देहरादून से राजपुर होकर पैदल मार्ग से ही मसूरी पहुंचते हैं। अन्य क्षेत्रों से भी आने वाले कई प्रकृति-प्रेमी मसूरी को प्राकृतिक सुषमा के दर्शन करने सीधे अपने-अपने अन्य साधनों से भी पहुंचते हैं।

सन् 1826 में कैप्टन यंग नामक अंग्रेज ने लंढौर में मसूरी की सबसे पहले स्थापना की थी। पहले पहल अंग्रेजी सेना का सेनीटोरियम मसूरी के लंढौर नामक क्षेत्र में बनाया गया था। आज जहां सम्पूर्ण पर्वतों की रानी मसूरी का नगर स्थित है उस सारे क्षेत्र को अंग्रेजों ने गढ़वाल के महाराजा से केवल 1120 रुपये देकर लीज पर लिया था। यह सम्पूर्ण क्षेत्र गढ़वाल राज्य के अन्तर्गत था जो बाद में अंग्रेजों के अधीन आ गया और कालान्तर में देहरादून जिले का एक भाग बना। सन् 1873 में मसूरी नगरपालिका का गठन हुआ था। तभी से इस नगर के प्रति आकर्षण बढ़ता चला गया। सन् 1880 में अफगानिस्तान के भूतपूर्व

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



अमीर याकूब खां को अंग्रेजों ने यहां नजरबन्द किया था। सन् 1884 से मसूरी में भारतवर्ष से बड़े-बड़े राजाओं से लेकर नवाबों तक ने अपने ग्रीष्म-कालीन अवकाश के लिए रमणीय भवन बनाने आरम्भ कर दिये थे और तब से समस्त भारतवर्ष का यह नगर ग्रीष्मकाल का आरामगाह बनता चला गया। यहां कई अच्छे स्कूल और विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का भी निर्माण होता रहा। आज मसूरी की ये सभी संस्थायें भारत की प्रसिद्ध संस्थाओं में से हैं। इस संस्थाओं में आई० ए० एस० ट्रेनिंग कॉलेज से लेकर बच्चों के विद्यालय तक शामिल हैं।

मसूरी के दर्शनीय स्थलों में गनहिल, लालटिब्बा, कैमेल्स बैंक रोड, म्युनिसिपल गार्डन, मौसी प्रपात, केमटी प्रपात और हार्डी प्रपात के साथ-साथ विनोग पर्वत श्रेणी अत्यन्त आकर्षक है। मसूरी के बाजारों में लंढौर कुलड़ी, लाईब्रेरी, (गान्धी चौक) आदि प्रसिद्ध बाजार हैं। गनहिल परिटिब्बा तथा लालटिब्बा, डियोहिल से बदरीनाथ, केदारनाथ, श्रीकण्ठ, नन्दादेवी, बन्दरपूंछ (यमुनोत्तरी) के भव्य दृश्य दिखाई देते हैं। यहीं से देहरादून और गंगा-यमुना का भी अत्यन्त सौन्दर्यमयी क्षेत्र दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। देवदार के घने और ऊंचे वृक्षों के मध्य रंग-बिरंगे फूल इस नगर की शोभा हैं। म्यूनिसिपल गार्डन सुन्दरता के लिए विख्यात है। विनोम नाम की वैधशाला शहर से 9 कि० मी० दूर मसूरी से पश्चिम की ओर है. यहां से भी देहरादून की सुन्दर घाटी गंगा नदी की प्यारी दृश्यावली और दूसरी ओर यमुना नदी की अद्भुत छटा देखने योग्य है।

मसूरी की सुन्दरता उसके प्यारे झरनों के कारण भी है। केमटीफाल इस क्षेत्र का सबसे मनोरम प्रपात है। मसूरी से 12 कि० मी० दूर 1350 मीटर की ऊंचाई पर केमटीफाल शैलानियों का मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। ऊंची पहाड़ की चोटियों को चीरती हुई तीन मोटी-मोटी जलधारायें यहां से नीचे निरन्तर गिरती रहती हैं। इन जलधाराओं के नीचे कुण्ड-सा बन गया है जिसमें शैलानी नहाते हैं।

केमटीफाल की तरह ही भट्टा प्रपात भी एक बहुत सुन्दर झरना है। इस झरने की विशेषता यह है कि यहां पानी के बड़े-बड़े तालाब हैं जिनका जल एक नहर से सीढ़ियों द्वारा बड़ी सुन्दरता से लाया गया है। देश के कई झरनों की तरह इस झरने के जल को भी एक स्थान पर इकट्ठा करके तथा विशेष ऊंचाई से नीचे गिराया गया है। इस प्रपात से देहरादून और मसूरी के लिए बिजली पैदा की जाती है।

केमटीफाल और भट्टा की भांति मसूरी में मौसी प्रपात अत्यन्त दर्शनीय झरना है। घनी हरियाली से आच्छादित तथा तंग घाटी में मौसी प्रपात अपनी सुन्दरता बिखेरता हुआ निरन्तर बहता रहता है। इसी तरह हार्डी प्रपात भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



अपने कठिन मार्ग के कारण हार्डी नाम से विख्यात हुआ है। यह प्रपात भी मौसी प्रपात से मिलता-जुलता है। यह प्रपात विनिसेन्ट हिल के दक्षिण पश्चिमी ढलान पर स्थित है।

मसूरी का आजकल का मुख्य आकर्षण रोप-वे भी है। शहर के मध्य से रोप-वे में बैठकर शैलानी गनहिल की 2142 मीटर की चोटी पर पहुंचते हैं, यहां से हिमालय का अद्भुत सौन्दर्य सब को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। एक ओर गंगा दूसरी ओर यमुना की मनोहारी घाटियां दर्शकों को अपनी ओर बरबस खींच लेती हैं। दूर पर्वतीय अंचल में हिमालय की बर्फ से ढकी पहाड़ की चोटियां दर्शकों का मन मोह लेती है। मसूरी की हैपीवेली घने वृक्षों के मध्य घूमने का एक सुन्दर क्षेत्र है। इस वेली में महान पंडित राहुल सांकृत्यायन रहते थे। तिब्बतीय लोगों का एक नगर भी मसूरी में बुद्ध संस्कृति और तिब्बती कला का अदभुत केन्द्र बना है। मसूरी की सुन्दरता ग्रीष्मकाल के दिनों में जहां अत्यन्त प्रभावकारी होती है शरदकाल में भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में पीछे नहीं रहती।

मसूरी के अद्भुत सौन्दर्य वाले प्रकृति के रमणीय क्षेत्र का आनन्द लेते हुए हम केमटीफाल होकर यमुनापुल की ओर चलते हैं।

मसूरी से केमटीफाल की तरफ जैसे हम बढ़ते जाते हैं प्रकृति के मध्य मन और भी प्रसन्न होने लगता है। स्थान-स्थान पर पिकनिक पर आये हुए लोगों के दर्शन होते हैं। देहरादून से 64 किलोमीटर और केमटीफाल से 16 किलोमीटर की दूरी पर यमुना नदी का पुल है। इस पुल से एक मार्ग कालसी की ओर जाता है और दूसरा रास्ता यमुना के किनारे-किनारे बडकोट की तरफ बढ़ता है। हमें बड़कोट की ओर ही जाना है। इस मार्ग में सबसे पहले हमें नैनबाग नामक स्थान मिलता है। यहां पर अस्पताल तथा राजकीय इन्टर कालेज है। यह इस क्षेत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता है। जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, हमें पाण्डव कालीन लाखा मण्डल की याद आने लगती है। जैसे ही हम कुंवा के पास पहुंचते हैं, ठीक सामने यमुना नदी के पार 1100 मीटर की ऊंचाई पर लाखा मण्डल गांव दिखायी पड़ता है। मोटर मार्ग से यमुना नदी को पार करने के बाद लाखा मण्डल लगभग एक-डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लाखा मण्डल गांव के उत्तर में पहाड़ की एक विस्तृत गुफा है जिसकी ओट में 'लाक्षा गृह' आज भी विद्यमान है। कहते हैं कि इसी गुफा के अन्दर से एक सुरंग गयी हुई है जिसके रास्ते से पाण्डव बच निकले थे। लाखा मण्डल का मुख्य आकर्षण यहां के मन्दिर हैं। इन मन्दिरों में शिव, पांचों पाडवों, विष्णु और परशुराम के मन्दिर मुख्य हैं। लाखा मण्डल कला और संस्कृति का केन्द्र है। यहां के मन्दिरों की स्थापना के सम्बन्ध में जालन्धर नरेश चन्द्रगुप्त की पत्नी ईश्वरा का एक शिलालेख यहां मिलता है। इस शिलालेख से पाण्डवकालीन संस्कृति का ज्ञान होता है। देहरादून से 89 किलो-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मीटर की दूरी पर डामटा नामक उभरता हुआ एक सुन्दर नगर है। यहीं से सीमान्त जिला उत्तरकाशी की सीमा प्रारम्भ हो जाती है। डामटा से आगे चलते ही जौनसार-बाबर की सांस्कृतिक झलक स्पष्ट दिखाई देती है। डामटा से कुंवा पहुंचते-पहुंचते यमुना का दृश्य मनमोहक हो जाता है।

## नौगांव

देहरादून से 117 किलोमीटर और डामटा से 28 किलोमीटर की दूरी पर अत्यन्त सुन्दर घाटी में नौगांव नामक उत्तरकाशी का नगर स्थित है। नौगांव हरी-भरी घाटी में फल-फूलों से लदी हुई धरती के मध्य विशेषकर सेबों के लिए प्रसिद्ध है। नौगांव से एक रास्ता पुरोला की तरफ जाता है। पुरोला उत्तरकाशी की एक नयी तहसील का सुन्दर नगर है। पुरोला लगभग 5000 फीट की ऊंचाई पर यमुना नदी की सहायक कमल नदी के किनारे सुन्दर चौरस घाटी म बसा हुआ है। चीड़ के वनों से ढकी हुई पहाड़ों की चन्द्राकार चोटियां अपनी सुन्दरता को लेकर पुरोला की सुन्दरता बढ़ाती हैं। यहां का रामासेराई का धान बहुत प्रसिद्ध है। इसी क्षेत्र से एक मार्ग जरमोला की चोटी होते हुए टौन्स की घाटी के लिए और दूसरा मार्ग कालसी के पहाड़ को पार कर यमुना की घाटी की ओर जाता है।

नौगांव की सुन्दर धरती और सेबों के बागों को पार करते हुए लम्बे-लम्बे चीड़ों के वनों के मध्य होते हुए बॉज और बुरॉस के घने जंगलों के बीच जाते हुए नौगांव से 11 किलोमीटर की दूरी पर प्रकृति का अत्यन्त सौन्दर्यशाली नगर बड़कोट में पहुंचते हैं। देहरादून से बड़कोट 128 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बड़कोट ही वह स्थान है जहां पर ऋषिकेश से आरम्भ होने वाली यात्रा के यात्री भी नरेन्द्र नगर, टेहरी, धरासू होकर बड़कोट पहुंचते हैं।

बड़कोट से आगे यमुनोत्तरी जाने से पूर्व अधिक उत्तम यह है कि हम ऋषिकेश से बड़कोट तक की यात्रा का भी संक्षिप्त वर्णन यात्रियों एवं पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत करें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## ऋषिकेश से नरेन्द्र नगर टेहरी होते हुए यमुनोत्तरी

ऋषिकेश से नरेन्द्र नगर होकर यमुनोत्तरी जाने का विवरण इस प्रकार है—

| स्थान | ऊंचाई मीटर में | दूरी एक स्थान से दूसरे स्थान तक कि० मी० | कुल दूरी किलोमीटर |
|---|---|---|---|
| ऋषिकेश | 340 | ... | ... |
| नरेन्द्र नगर | 1067 | 16 | 16 |
| चम्बा | 1524 | 46 | 62 |
| टेहरी | 770 | 21 | 83 |
| धरासू | 1036 | 37 | 120 |
| ब्रह्मखाल | 1158 | 15 | 135 |
| बड़कोट | 1828 | 40 | 175 |
| सयाना चट्टी | 1982 | 29 | 204 |
| हनुमान चट्टी | 2134 | 5 | 209 |
| फूल चट्टी | 2561 | 5 | 214 |
| जानकी चट्टी | 2676 | 2 | 216 |
| यमुनोत्तरी | 3323 | 6 | 222 |

ऋषिकेश से बड़कोट तक 175 किलोमीटर का मार्ग है और बड़कोट से यमुनोत्तरी 47 किलोमीटर है।

ऋषिकेश से 2 किलोमीटर जाने के बाद मुनि-की-रेती नामक स्थान पर मार्ग दो भागों में विभक्त हो जाता है। दाहिनी तरफ का मोटर मार्ग केदारनाथ, बदरीनाथ अर्थात् देव प्रयाग की ओर जाता है और बायीं तरफ का पर्वतीय क्षेत्र की तरफ मुड़ने वाला मार्ग यमुनोत्तरी-गंगोत्तरी की ओर मुड़ जाता है। यमुनोत्तरी गंगोत्तरी की ओर जाने के लिए हमें इसी पर्वतीय अंचल के पर्वतीय मार्ग से बढ़ना है। हमारा मार्ग घने और हरे सुन्दर वन क्षेत्र के मध्य से ऊंचाई पर बढ़ता ही जाता है। 16 किलोमीटर की दूरी पर नरेन्द्र नगर नाम का नगर प्रकृति की सुन्दर सुखद गोद में प्रत्येक यात्री का मन अपनी ओर खींच लेता है। यह टेहरी गढ़वाल की राजधानी है और इसको टेहरी गढ़वाल के महाराजा नरेन्द्रशाह ने सन् 1920 में बसाया था। नरेन्द्र नगर से जैसे ही हम आगे बढ़ते हैं पहाड़ की चोटी के ऊपर कुंजापुरी नामक देवस्थल है। यहां से 9 किलो मीटर की दूरी पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



यह स्थित है। कहते हैं कि यहां पर सती के अंग धरती पर गिरे थे। यहां प्रतिवर्ष मेला लगता है। हजारों धार्मिक यात्री तथा पर्यटक इस स्थान पर पहुंचते हैं। यहां से हिमालय के भव्य दर्शन होते हैं।

### चम्बा

इस मार्ग पर पर्वत की श्रृंखला पर चम्बा नामक बहुत सुन्दर नगर स्थित है। चम्बा नरेन्द्र नगर से 46 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ग्रीष्मऋतु में यहां का मौसम अत्यन्त सुखकारी और मनोहारी होता है। यहां से बन्दरपूंछ की चोटी साफ दिखायी देती है। चम्बा से 55 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ की चोटी-चोटी होते हुए मसूरी के लिए एक रास्ता जाता है। अर्थात् चम्बा से 55 किलोमीटर की दूरी पर मसूरी स्थित है। मसूरी का चम्बा मार्ग अत्यन्त रमणीय मार्ग है। इसी मार्ग पर 21 मिलोमीटर जाने के बाद सुरकण्डा देवी का मन्दिर एक पहाड़ की चोटी पर है। इस मार्ग पर अखरोट एवं सेबों के सुन्दर बाग लगे हुए हैं।

### दोबाटा

चम्बा से 17 किलोमीटर की दूरी पर दोबाटा नाम का एक छोटा-सा उभरता हुआ नगर है। यहीं से दाहिनी तरफ का रास्ता टेहरी नगर और बायीं तरफ का रास्ता गंगोत्तरी-यमुनोत्तरी की तरफ मुड़ जाता है। यहां से टेहरी नगर चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां से वे ही लोग टेहरी जाते हैं जो या तो पेट्रोल लेते हैं या भोजन आदि की व्यवस्था करते हैं अन्यथा दोबाटा से ही धरासू की ओर लोग मुड़ जाते हैं।

### टेहरी

टेहरी नगर चारों ओर पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ बहुत सुन्दर नगर है। इस नगर की स्थापना, 28 दिसम्बर, 1815 को महाराजा सुदर्शनशाह ने श्रीनगर से अपनी राजधानी को हटाकर टेहरी स्थानान्तरित, की थी। टेहरी में गढ़वाल के राजाओं का पुराना महल चनाखेत नामक स्थान पर स्थित है। प्रसिद्ध घण्टाघर और उसके निकट ही सुमन पुस्तकालय है। टेहरी नगर में अनेक धार्मिक स्थान हैं। यहां एक वदरीनाथ का मन्दिर है जिसे टेहरी की राजमाता गुलेरिया ने वनवाया था। नर्वदेश्वर महादेव, सत्येश्वर महादेव और दक्षिणकाल आदि मन्दिर भी यहां के प्रसिद्ध मन्दिर हैं। इसी नगर में स्वतन्त्रता सेनानी श्रीदेवी सुमन ने 84 दिन के आमरण अनशन के उपरान्त अपनी इहलीला समाप्त की थी। सुमन की स्मृति में भी टेहरी में प्रतिवर्ष स्मृति दिवस मनाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



जाता है। भागीरथी और भिलंगना के संगम पर प्रतिवर्ष मकरसक्रान्ति का बहुत बड़ा मेला लगता है। इसी संगम पर सन् 1948 में शहीद नागेन्द्र सकलानी और मोलू भरदारी का आखिरी संस्कार किया गया था। ये टेहरी की आजादी के श्रीदेव सुमन की तरह महान् स्वतन्त्रता सेनानी थे जो सामन्ती गोलियों का शिकार हुए थे।

प्रसिद्ध वेदान्तवेत्ता स्वामी राम ने यहीं भिलंगना में जल समाधि ली थी। उनका कार्य क्षेत्र सिमलासू टिहरी में ही था।

भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा भागीरथी पर एक बहुत बड़ा बांध टेहरी नगर के पास बनाया जा रहा है। कुछ वर्षों में जब यह बांध बनकर तैयार हो जायेगा तो इससे सम्पूर्ण टेहरी नगर तथा उसके आसपास के क्षेत्र जलमग्न हो जायेंगे। टेहरी का सौन्दर्य सदा-सदा के लिए समाप्त हो जायेगा। जिन लोगों ने टेहरी को आंखों से देखा है वे आने वाली पीढ़ियों को यहां की कथा सुनाया करेंगे।

टेहरी चारों ओर से जाने वाले मार्गों का संगम स्थल है। यहां पर देवप्रयाग, श्रीनगर, उत्तरकाशी, तिलवाड़ा तथा ऋषिकेश से आने वाली गाड़ियां आकर संगम बनाती हैं। टेहरी से दोबाटा केवल 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

### धरासू

टेहरी से 4 किलोमीटर पुन: उसी मार्ग पर आकर दोबाटा में जब पहुंचते हैं तो समतल भूमि के मार्ग से होकर भागीरथी के किनारे-किनारे धरासू के मार्ग पर चल पड़ते हैं। यह यात्रा अत्यन्त आनन्ददायक, रोमांचक और निरापद है। मार्ग में पड़ने वाले मुख्य स्थान सिराई, भल्डियाना, छाम और नगुड़ हैं। दोबाटा से धरासू की दूरी 41 किलोमीटर है। धरासू में खुरामोला नदी भागीरथी में आकर मिलती है। धरासू से लगभग 2 किलोमीटर आगे चलने पर भागीरथी की तरफ बढ़ने वाला रास्ता गंगोत्तरी की तरफ चला जाता है और बायीं तरफ खुरमोला घाटी की ओर मुड़ने वाला रास्ता यमुनोत्तरी की तरफ मुड़ जाता है। खुरमोला घाटी अत्यन्त रमणीय है। गंगोत्तरी के यात्री सीधे भागीरथी के किनारे-किनारे उत्तरकाशी की ओर चले जाते हैं। यमुनोत्तरी के यात्री धरासू के इस मोड़ से ही खुरमोला घाटी के सुन्दर सड़क की ओर मुड़ जाते हैं।

### ब्रह्मखाल

ब्रह्मखाल एक अत्यन्त रमणीक स्थान पर स्थित कुछ दुकानों का उभरता हुआ सा नगर है। धरासू से 15 किलोमीटर और ऋषिकेश से 135 किलोमीटर की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



दूरी पर स्थित है । बड़कोट की ओर अत्यन्त घने वनों के मध्य मार्ग आगे बढ़ता है तो मार्ग में देवदार, बांज, बुरांस और चीड़ आदि के घने वनों के दर्शन होते हैं । यह मार्ग 2286 मीटर की उंचाई पर राड़ी के डांडे को पार कर दूसरी तरफ पहाड़ों के घने जंगल के मध्य से उतरता हुआ 1828 मीटर की ऊंचाई पर बड़-कोट में पहुंच जाता है । मार्च और मई के मध्य में यह सारा जंगल बुरांस के फूलों से लदा रहता है । बड़कोट ब्रह्मखाल से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । बड़कोट ब्रह्मखाल के बीच का क्षेत्र प्रकृति का अनोखा क्षेत्र है । अप्रैल से लेकर नवम्बर के मध्य तक यह सम्पूर्ण घाटी अत्यन्त सौन्दर्य से भरी रहती है । जून से लेकर मध्य सितम्बर तक यहां सेब, नासपाती, अखरोट आदि अधिक संख्या में मिलते हैं । बड़कोट में सभी प्रकार की सुविधायें उपलब्ध होती हैं । यह वही नगर है जहां से देहरादून से मसूरी होकर यमुनोत्तरी के लिए रास्ता मिलता है और यहीं से ऋषिकेश या टेहरी आदि नगरों के लिए रास्ता मिलता है और तब यहीं पर सभी तरफ से रास्ते आकर मिलते हैं । चाहे वह किसी रास्ते से आए परन्तु सभी रास्तों के मिलने के कारण सभी लोग यहीं से होकर जाते हैं ।

बड़कोट के सम्बन्ध में एक प्राचीन कथा कही गई है । राजा सहस्त्रबाहु और जमदग्नि की पत्नी सगी बहनें थीं । वर्तमान बडकोट राजा सहस्त्रबाहु की राजधानी थी । आज भी यहां एक प्राचीन किले का अवशेष मिलता है । बड़कोट से 11 किलोमीटर के आगे यमुनोत्तरी के रास्ते पर थान नामक ग्राम है । यही थान नामक ग्राम ऋषि जमदग्नि की तपस्या स्थली थी । एक समय राजा सहस्त्रबाहु ने अपनी जनप्रियता को बढ़ाने के लिए एक महायज्ञ किया जिसमें रेणुका और जमदग्नि को भी आमन्त्रित किया था । इस यज्ञ में राजा सहस्त्रबाहु ने बहुत धन आदि दान किया । यज्ञ की समाप्ति के बाद जमदग्नि रेणुका के साथ अपनी तपस्या स्थली ग्राम थान वापस पहुंचे । नारी में ईर्ष्या स्वाभाविक होती है । रेणुका ने अपने पति जमदग्नि से कहा कि हमको भी ऐसा ही यज्ञ करना चाहिए । जमदग्नि ऋषि ने अपनी पत्नी को बहुत समझाया कि हम तो तपस्यालीन वनवासी हैं हमको दूसरों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए परन्तु रेणुका नहीं मानी । अन्त में ऋषि जमदग्नि ने इन्द्र से कामधेनु और कल्पवृक्ष की एक टहनी मांगी । इन्द्रदेव ने काम-धेनु गाय और कल्पवृक्ष की साख ऋषि के आश्रम में पहुंचा दी । यज्ञ बड़े धूम-धाम से हुआ । इस यज्ञ की विशेषता यह थी कि गरीबों को धनधान्य तो मिला ही परन्तु नेत्रहीनों को आंखें, बधिरों को कान, गूंगों को वाणी और अपुत्रों को पुत्र को भी मिल गए । इस यज्ञ में राजा सहस्त्रबाहु अपनी पत्नी के साथ आए थे । जब बड़कोट लौटने लगे तो उन्होंने कामधेनु गाय और कल्पवृक्ष की साख को ले जाने के लिए आग्रह किया क्योंकि उनका यज्ञ जमदग्नि के यज्ञ के सामने फीका पड़ चुका था । जमदग्नि ऋषि ने कहा यह कामधेनु गाय मैंने सात दिन के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मांगी थी, यह हम आपको दे नहीं सकते परन्तु कल्पवृक्ष की साख आप ले सकते हैं। सहस्रबाहु ने क्रोधित होकर कामधेनु गाय को खोल दिया। गाय तो उसी समय आकाश को उड़ गयी। सहस्रबाहु ने क्रोध में आकर जमदग्नि ऋषि का सिर तलवार से काट डाला।

कहते हैं कि जमदग्नि का पुत्र उस समय देशाटन पर था। अतः रेणुका अपने मृतक पति के साथ इसी स्थान पर जलकर सती हो गई। कहते हैं कि ऋषियों ने सिरविहीन मूर्ति को लेकर रेणुका सहित थान गांव में जमदग्नि के मन्दिर की स्थापना कर डाली थी। आज भी थान गांव में जमदग्नि का प्राचीन मन्दिर स्थापित है। मन्दिर के चारों तरफ अनेकों मूर्तियां इधर-उधर पड़ी हुई हैं। यहीं पर एक नींबू के आकार का पेड़ भी खड़ा है जिसे ग्रामवासी उसी कल्पवृक्ष की साख का अंग मानते हैं और कहते हैं कि अपने पति की मृत्यु के बाद रेणुका ने इस पेड़ को शाप दे दिया था कि हे कल्पवृक्ष! आज से तुम मनोकामना का वरदान देना बन्द कर दोगे।

राजा सहस्रबाहु के नगर बड़कोट से आगे यमुना के किनारे-किनारे जब हम यमुनोत्तरी की ओर चल पड़ते हैं इसी बीच में हमें जमदग्नि का ग्राम थान भी मिलता है और तब आता है सुन्दर सयाना चट्टी।

**सयाना चट्टी**

सयाना चट्टी बड़कोट से 29 किलोमीटर दूर स्थित है। मार्ग अत्यन्त रमणीय है। यमुना नदी के किनारे-किनारे प्रकृति के भव्य सौन्दर्य के साथ जो यमुना घाटी की सुन्दरता है वह अन्यत्र देखने को कहीं नहीं मिलती है। बड़कोट से 7 किलोमीटर की दूरी पर गंगानी और गंगानी से 9 किलोमीटर की दूरी पर कुठनौर की सुन्दर चोटियां भी यात्रियों का मन अपनी ओर खींचने में पर्याप्त सहायक होती हैं। अधिकांश शैलानी इन्हीं स्थानों पर रुककर प्रकृति का आनन्द लेते हैं। बड़कोट और सयानी चट्टी के बीच की यह दो चोटियां थान ग्राम की तरह अपने अपने महत्त्व के लिए प्रसिद्ध हैं। यहां रहने के लिए और ठहरने के लिए पर्याप्त व्यवस्था है।

**हनुमान चट्टी**

सयाना चट्टी से 6 किलोमीटर की दूरी पर बहुत सुन्दर स्थान पर हनुमान चट्टी स्थित है। यहां पर रहने के लिए वन विभाग का आश्रम भवन तथा गढ़वाल विकास निगम का पर्यटक लॉज है। हनुमान चट्टी के पास हनुमान गंगा और यमुना का संगम होता है।

अभी तक इसी चट्टी तक मोटर मार्ग से जाया जा सकता है। इसके बाद यमुनोत्तरी तक की यात्रा पैदल ही करनी होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



**जानकी चट्टी**

हनुमान चट्टी से थोड़ी-सी चढ़ाई के साथ-साथ फूल चट्टी के मार्ग को पार करते हुए जानकी चट्टी 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

घने वृक्षों के मध्य ठण्डी हवा और प्रकृति के पशु-पक्षियों की चहचाहट सुनते हुए मार्ग की थकावट दूर होती रहती है। हनुमान चट्टी से जब यात्री जानकी चट्टी पहुंचते हैं तो यात्रियों को अत्यन्त उत्साह के दर्शन होने लगते हैं।

जानकी चट्टी यमुनोत्तरी यात्रा का अत्यन्त प्रसिद्ध चट्टियों वाला स्थान है। यमुनोत्तरी की यात्रा में यही एक ऐसी चट्टी है जो ठहरने के लिए अन्तिम पड़ाव का कार्य करती है। यात्री जानकी चट्टी से प्रायः प्रातःकाल यमुनोत्तरी जाते हैं और पुनः लौटकर जानकी चट्टी आते हैं।

जानकी चट्टी में भगवान् नारायण का मन्दिर है और गरम जल का स्रोत है। भगवान् नारायण के इस पवित्र स्थान के कारण जानकी चट्टी को अधिकांश लोग 'नारायणी पुरी' भी कहते हैं। यात्रा के दौरान यात्रियों के लिए यहां पोस्ट-आफिस, पुलिस आदि की व्यवस्था रहती है। कुछ दुकानें खुल जाती हैं, घोड़े तथा डण्डियों की भी पूरी व्यवस्था रहती है। जानकी चट्टी से 7 किलोमीटर की दूरी पर यमुनोत्तरी स्थित है। इसी मार्ग पर यमुनोत्तरी के पण्डों का ग्राम खरसाली एक किलोमीटर की दूरी पर पड़ता है। यहां उनियाल जाति के ब्राह्मण हैं जो पूजा करते हैं। खरसाली यमुनोत्तरी से 6 किलोमीटर की दूरी पर रह जाता है। खरसाली में भी-सोमेश्वर का मन्दिर है। खरसाली का सौन्दर्य देखने योग्य है

जानकी चट्टी से यमुनोत्तरी का मार्ग चढ़ाई का मार्ग है। चट्टानों के मध्य होकर रास्ता जाता है परन्तु प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य के साथ यात्री यमुनोत्तरी के दर्शन करने के लिए इस क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ते चले जाते हैं। जैसे ही साढ़े छः किलोमीटर की दूरी समाप्त होती है, आधा किलोमीटर का मार्ग अत्यन्त मनोहारी हो जाता है। बर्फ से ढका हुआ हिमालय और यमुनोत्तरी का अद्भुत सौन्दर्य वाला स्थान सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

केदारखण्ड अर्थात केदारखण्ड के चारों धामों में से यमुनोत्तरी धाम हिमालय की बन्दरपूंछ महाश्रृंग के पश्चिमी किनारे पर कालिन्दी पर्वत के पाद प्रदेश में 4421 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यमुनोत्तरी से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर पतित पावनी यमुना नदी का उद्गम स्थल है।

यमुनोत्तरी के चारों ओर दूर-दूर तक फैली हिमालय की धवल शिखरावली प्रत्येक यात्री के मन को मोह लेती है। यहां का दृश्य मनोहर है। चारों ओर हिमालय की हिमाच्छादित शिखरावली चीड़ के हरे वन व नीचे कल-कल करती कालिन्दी की शीतल धारा मन को आकर्षित करती है। यमुनोत्तरी के पास यमुना की धारा उत्तरवाहिनी हो गयी है इसीलिए इसका नाम यहां पर यमुनोत्तरी पड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



गया है। यमुनोत्तरी का प्राकृतिक सौन्दर्य अद्भुत है। हमारे प्राचीन शास्त्रों से लेकर अंग्रेज यात्रियों तक ने इस क्षेत्र का वर्णन बहुत श्रद्धा से किया है। वास्तव में यमुनाघाटी और यमुना क्षेत्र का जो रमणीय सौन्दर्य है वह अपने आप मे बे-मिसाल है।

यमुनोत्तरी के मन्दिर के कपाट बैसाख शुक्ल तृतीया तिथि को खुलते हैं और कार्तिक मास में दीपावली के बाद, यम द्वितीया की तिथि को बन्द होते हैं। खरसाली ग्राम के पण्डे यमुनोत्तरी के वस्त्राभूषणों को लेकर 6 महीने तक गांव में ही यमुना की पूजा करते हैं।

यमुनोत्तरी मन्दिर में काले संगमरमर की मूर्ति यमुना और श्वेत संगमरमर की मूर्ति गंगा की स्थापित है। गंगा और यमुना को बहनें माना जाता है। यमुनोत्तरी की मूर्ति के नीचे कृष्ण और यमराज की मूर्तियां स्थापित हैं। मन्दिर के पास ही पहाड़ की चट्टान के अन्दर दो कुण्ड हैं। सबसे गरम पानी का कुण्ड सूर्य कुण्ड' कहलाता है। इसका तापमान 194.7 फारेनहाइट रहता है। इस पानी में यात्री चावल, आलू आदि डालते हैं जो थोड़ी देर में पककर ऊपर आ जाता है। यही है यहां का प्रसाद। यमुनोत्तरी का प्रसाद इसी जल में पका हुआ चावल माना जाता है। इस कुण्ड से दो धारायें निरन्तर फव्वारे के रूप में उठती हैं। इसी के पास गौरीकुण्ड नाम का एक और कुण्ड है जो अपेक्षाकृत कम गरम रहता है। उसी में यात्री नहाते हैं। सूर्यकुण्ड के पास ही एक शिला है जिसको दिव्य शिला कहते हैं। इसकी पूजा का अत्यन्त महत्त्व है। तप्तकुण्ड और यमुना की शीतलधारा का यमुनोत्तरी में सबसे अधिक महत्त्व है। यहां की धरती में इसका जो विलक्षण प्राकृतिक सौन्दर्य दिखायी देता है। इसका भी लोगों पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

यमुनोत्तरी से 6 किलोमीटर की दूरी पर एक सप्तऋषिकुण्ड है जिसका महत्त्व विशेष माना जाता है।

यमुना की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कूर्मपुराण (अध्याय 37, श्लोक 1-4) के अनुसार इस प्रकार कथा कही गई है कि सूर्य की संज्ञा और छाया नाम की दो पत्नियां थीं। संज्ञा से गंगा और छाया से यमुना और यमराज उत्पन्न हुए। इस तरह से गंगा, यमुना सौतेली बहनें तथा यम और यमुना खास भाई-बहन हैं। केदारखण्ड के अनुसार संज्ञा प्रजापति की पुत्री और छाया संज्ञा की संवर्णा थी। संज्ञा से वैवस्वत मनु, यम और यमुना उत्पन्न हुए और छाया संवर्णा से मनु (जो आठवें मनु होंगे) तथा श्यामलांग शनेश्चर (यम) उत्पन्न हुए। आगे कथा इस प्रकार आती है कि एक बार यम ने बाल्य भाव से अपनी माता छाया को लात मार दी और छाया ने शाप दे दिया। विवस्वान (सूर्य) ने भी छाया के शाप का समर्थन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि यम को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



पापियों के शासन की बागडोर अपने हाथ लेनी पड़ी। धर्म (न्याय) के शासन के फलस्वरूप वह धर्मराज कहलाए। उधर सूर्य ने अपनी पुत्री यमुना को भी तीनों लोकों की भलाई के लिए पितरों को दे दिया।

केदारखण्ड में एक दूसरी कथा इस प्रकार भी कही गई है कि जब राजा भगीरथ हिमालय में काले जल के सरोवर के पास गंगा की स्मृति कर रहे थे तो उन्हें दो युवतियां दिखाई दीं। भगीरथ ने उनसे परिचय पूछा। उन दोनों युवतियों ने उत्तर दिया कि एक श्वेतावर्ण गंगा है और दूसरी अश्वेतवर्णा युवती यमुना है जो समस्त पापों को नाश करने वाली है। गंगा ने बतलाया कि मैं हिमालय से दस धाराओं में निकलती हूं। इसमें मुख्य धारा तुम्हारे (भगीरथ के) साथ चलेगी जो गंगा कहलायेगी। हिमालय में इसका उद्गम स्थान गोमुख है। दूसरी धारा यमुना है जो यमुनोत्तरी से निकलेगी और आगे चलकर मुझमें (गंगा में) मिल जाएगी। बायीं ओर कृष्णवर्णा यमुना और दायीं ओर श्वेतवर्णा गंगा प्रवाहित होती हैं। यह दोनों जिन प्रमुख गंगोत्तरी और यमुनोत्तरी नाम तीर्थों से बहती हैं वह सब सिद्धियों को प्रदान करने वाली हैं। केदारखण्ड (अध्याय 39, श्लोक 34-35) में इसका उल्लेख है।

केदारखण्ड (अध्याय 204, श्लोक 19-21) में यमुनोत्तरी के माहात्म्य को इस प्रकार कहा गया है कि श्वेत पर्वत के उत्तर की ओर यमुनोत्तरी का उद्गम स्थान है। वहीं से सूर्य से उत्पन्न यमुना नदी प्रवाहित होती है जो सबके पापों को नष्ट करती है। जो मनुष्य यमुनोत्तरी अर्थात् तप्तकुण्ड में स्नान करते हैं वह जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। यमुनोत्तरी के उत्तर की ओर कोटि रत्नों से भरा हुआ पर्वत है, जहां कुबेर ने रत्नों की वर्षा की थी। पौराणिक कथा के अनुसार यमुनोत्तरी में सिर्फ स्नान करने मात्र से ही मुक्ति मिल जाती है। जो व्यक्ति यमुना के दर्शन करके यमुनोत्तरी में रात्रि विश्राम करते हैं उनके सारे पाप धुलकर राख हो जाते हैं। यमुनोत्तरी का यह वही स्थान है जहां अग्निदेव ने तपस्या की थी और उन्हें दिग्पाल की उपाधि प्राप्त हुई थी। यहीं वह तप्त कुण्ड है जहां आज भी लोग कपड़े में चावल बांधकर डाल देते हैं, जो थोड़ी देर में पककर ऊपर आ जाता है, जो यहां का प्रसाद कहा जाता है। यमुनोत्तरी मन्दिर ही प्राचीन सिद्धि नामक तीर्थ है, यहां पर यम ने तप कर 'लोक पाल' पद प्राप्त किया था। इससे बढ़कर सौन्दर्यशाली और मुक्तिदायिनी क्षेत्र दूसरा नहीं बताया गया है। यमुनोत्तरी में अन्य केदारखण्ड के धामों की अपेक्षा आवासीय सुविधाओं की कमी है। यहां बहुत थोड़े भवन हैं और बस्ती भी थोड़ी ही है। यमुनोत्तरी के मन्दिर के पास कुण्ड तथा तप्त कुण्डों से लगे हुए छत वाले दो खुले हुए पूजा के स्थान हैं तथा ठहरने के स्थान के वृक्ष हैं। काली कमली की धर्मशाला है। कुछ यहां के पण्डों की धर्मशालाएं बनवाई हुई हैं। बाकी घास-फूस के छप्पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



बने हुए हैं। अधिकांश यात्री यहां रात्रि-विश्राम सुविधाओं के अभाव में नहीं करते। गढ़वाल मण्डल विकास निगम द्वारा अब यहां पर एक पर्यटक गृह बनाने की योजना है। देखें, यह कब तक पूर्ण होता है। स्थानाभाव और अव्यवस्था के कारण भले ही अधिकांश यात्री यहां नहीं रुकते परन्तु प्रकृति के प्रेमी और साधक लोग यमुनोत्तरी में ही रहकर प्रकृति का सही आनन्द उठाना अधिक उपयोगी समझते हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि यमुना नदी के मुख्य स्रोत यमुनोत्तरी से 6 किलोमीटर की दूरी पर बन्दरपूंछ के पश्चिम ढाल पर स्थित है। यह श्रेणी हनुमान गंगा और टौन्स नदी की जल विभाजक श्रेणी भी है। बहुत से प्रकृति-प्रेमी सैलानी तथा पर्वतारोही बन्दरपूंछ पर्वतश्रेणी पर यहीं से जाते हैं। यहां से बन्दरपूछ जाने के लिए दो मार्ग हैं। पहला मार्ग यमुनोत्तरी से यमुना के तट से होकर खरसाली, हिमरिही, टीगाधार, वीणाधार, जखौला होते हुए बन्दरपूंछ है। यात्रियों के लिए पहला मार्ग आसान है।

यमुनोत्तरी में स्नान और दर्शन करने के बाद यात्री गंगोत्तरी के दर्शन करने की अभिलाषा करते हैं। वास्तव में गंगा और यमुना के मिले स्रोतों के बीच में दण्ड पर्वत जल-विभाजक के रूप में खड़ा है। पैदल यात्री यमुनोत्तरी से पहाड़ को पार करते हुए गंगोत्तरी पहुंचते हैं। इस मार्ग में अनेक घास के मैदान और फूलों की घाटियां पड़ती हैं। स्वामी रामतीर्थ इसी छाया पथ से यमुनोत्तरी से गंगोत्तरी तीन दिन में पहुंचे थे। उन्होंने अपने वर्णन में छाया मार्ग की जो विवेचना की है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस निर्जन वन प्रदेश में कई ऐसी गुफाएं हैं जिनमें रात बिताई जा सकती है। स्वामी रामतीर्थ को जंगलों में पशु चराते हुए गांव के लोगों से इस मार्ग का पता मिला था। स्वामी रामतीर्थ ने इस क्षेत्र में पड़ने वाले अनेक प्रकार के फूलों का वर्णन किया है। सौ-दो सौ प्रकार के एक ही प्रकार के फूल होने का उल्लेख उन्होंने अपनी इस यात्रा में किया है। गोगल, धूप, यमीरा, मीठा, तैलिया, सालिम मिश्री, बनफसा, बनवासा, गुल-लाला, गुलबहार आदि अनेक प्रकार की औषधि वाले पौधों का भी उन्होंने वर्णन किया कि इस मार्ग में ऐसे पौधे असंख्य भरे पड़े हैं। यमुनोत्तरी से गंगोत्तरी वाले क्षेत्र के बुग्याल का वर्णन करते हुए स्वामी रामतीर्थ ने कहा है कि यह क्षेत्र का पंवाली बुग्याल से अधिक ऊंचे तथा अधिक मनोहर हैं। प्राकृतिक क्षेत्र सौन्दर्य यहां बिखरा पड़ा है। आज भी बहुत से साधु, संत और पर्वतारोही इसी छाया-पथ से यमुनोत्तरी से गंगोत्तरी जाते हैं।

परन्तु आज की सुख-सुविधा वाली दुनिया में यात्री लोग भी प्रकृति के ऐसे कठोर मार्गों में चलना उपयुक्त नहीं समझते। आज तो मोटर यातायात सुलभ हो जाने के कारण यात्री इसी प्रकार के मोटर मार्ग से यात्रा करना अधिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


उपयोगी और सुखद समझते हैं। इसलिए गंगोत्तरी के लिए हमें पुनः बड़कोट तक और फिर बड़कोट से धरासू तक इसी मार्ग से लौटना होगा। यमुनोत्तरी से गंगोत्तरी जाने के लिए धरासू आना ही पड़ता है और तब हम डुण्डा, उत्तरकाशी होकर गंगोत्तरी के रास्ते पर आ जाते हैं। वैसे पुराने समय में यात्री यमुनोत्तरी से खरसाली, हनुमान चट्टी, डण्डोला, जगन्नाथ चट्टी, गंगनाणी, राड़ी, सिजक्यारा, ब्रह्मखाल (क्यूली) कल्याणी होते हुए धरासू डुण्डा होकर उत्तरकाशी जाते थे। जगन्नाथ के पास जिसे यमुना चट्टी भी कहते हैं यमुना पार एक मील पर बीपगांव में मारकण्डेय तीर्थ है। इसका बहुत बड़ा महत्त्व है। यहीं पर गरम पानी का झरना है।

इस तरह से हमारी यात्रा यमुनोत्तरी से गंगोत्तरी की ओर बढ़ती है। हम पुनः वापस धरासू से गंगोत्तरी की ओर अपनी यात्रा को आरम्भ करते हैं।

## गंगोत्तरी की ओर

यमुनोत्तरी से धरासू 102 किलोमीटर और ऋषिकेश से 120 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यमुनोत्तरी से लौटते समय धरासू के पास डुण्डा की ओर जहां पर मुख्य सड़क से मार्ग मिलता है वहीं से उत्तरकाशी की ओर मुड़ जाना पड़ता है। धरासू तक आने की कोई आवश्यकता नहीं है। भागीरथी के किनारे धरासू से 14 किलोमीटर की दूरी पर डुण्डा नामक एक उभरता हुआ नगर मिलता है। डुण्डा ब्लाक का मुख्यालय है, यहां पर पर्वतीय ऊन उद्योग का प्रशिक्षण केन्द्र भी है। डुण्डा में आवास और चिकित्सा आदि की सुन्दर व्यवस्था है। यहां से 3 किलोमीटर की दूरी पर नाकुरी नामक अत्यन्त रमणीक स्थान है जहां पर वन विभाग का विश्राम गृह है। डुण्डा से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर रेणुका देवी का मन्दिर है। कहते हैं यहीं पर परशुराम ने अपनी माता रेणुका की हत्या की थी और उन्हें अपने पिता जगदग्नि के द्वारा जीवित भी करवा दिया था। डुण्डा से जैसे ही आगे मार्ग जाता है अत्यन्त रमणीक धरती के दर्शन हो जाते हैं और यहां (डुण्डा) से 12 किलोमीटर की दूरी पर अत्यन्त सुन्दर नगरी उत्तरकाशी के दर्शन होते हैं। उत्तरकाशी वारणावत पर्वत के पाद प्रवेश में उत्तरकाशी असीवर्णा की संगमस्थली पर स्थित है। कहते हैं कि यहां पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवता सदा निवास करते हैं। इसका गढ़वाली नाम बाडाहाट है। ऐसा कहा जाता है कि उत्तरकाशी के पास पहले गंगा उत्तर वाहिनी होकर बहती थी। झाला नाम के गांव के पास टेणी नाम के पहाड़ के गिर जाने के कारण गंगा का रास्ता रुक गया। जब गंगा का बांध टूटा तो गंगा ने वर्तमान रुख उत्तर से पूर्व की ओर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



बना लिया। उसी पूर्व क्षेत्र पर आज वारणावत शिखर के नीचे उत्तराभिमुख उत्तरकाशी बसा हुआ है। स्कन्द पुराण के केदारखण्ड में श्री विश्वनाथ के मन्दिर और शक्तिस्तम्भ के विषय में कहा गया है कि यह क्षेत्र सौम्य काशी है जो वारणावत पर्वत के पाद प्रदेश में स्थित है। प्राचीन काल का 'श्री सम्प्रदाय' का 'श्रीक्षेत्र' यही नगर है। उत्तरकाशी के शक्ति के मन्दिर में आज भी एक प्राचीन यंत्र है। भगवान् परशुराम ने यहीं पर अपने शिष्यों को 'श्रीविद्या' की शिक्षा दी थी। परशुराम मन्दिर के मुख्य द्वार पर आज भी बभ्रुवाहन आदि का चित्र उत्कीर्ण है। बरबरीक (बभ्रुवाहन) परशुरामजी के श्री विद्या संप्रदाय में दीक्षित शिष्य था। उत्तरकाशी से नैऋत्य कोण में महर्षि जगदग्नि आश्रम के स्थान पर रेणुकाजी की मनोहर मूर्ति प्रतिष्ठित है।

परशुरामजी शैव थे। परशुरामजी द्वारा ही 'श्री सम्प्रदाय' की स्थापना इसी उत्तरकाशी में की गयी थी। कहते हैं कि शैव उत्तरकाशी से विस्थापित होकर काशी की ओर गये थे। उत्तरकाशी के प्रतिष्ठित देव सोम हैं। पुराणों में इस क्षेत्र को सौम्य काशी कहा गया है। बाड़ाहाट उत्तरकाशी में मकरसक्रान्ति के दिन प्राचीन समय से एक विशाल मेला लगता है। लोक मान्यता के अनुसार प्राचीन काल में किसी देवासुर संग्राम के अवसर पर यहां केदारखण्ड के देवगण एकत्रित हुए थे। आज भी उन देवताओं की डोलियां प्रतिवर्ष यहां एकत्रित होती हैं। आज भले ही इन डोलियों में भण्डेर, भैरों, हमीर अनेक आदि स्थानीय देवताओं की डोलियां आती हैं परन्तु प्राचीन काल में इनका किसी न किसी रूप में अस्तित्व रहा होगा। पर्वतीय अंचल के इस क्षेत्र में प्रत्येक गाँव का एक ग्राम देवता, प्रत्येक क्षेत्र का एक क्षेत्रपाल माना जाता है। इन्हीं देवताओं की मान्यता के आधार पर प्रतिवर्ष उत्तरकाशी में ग्राम देवता से लेकर क्षेत्रपाल, भूमिपाल तथा इष्टदेव आदि देवताओं की डोलियां मकरसंक्रान्ति के अवसर पर उत्तरकाशी के पवित्र क्षेत्र में आती हैं। उत्तरकाशी के कुछ विशिष्ट तीर्थों का विवरण इस प्रकार है—

### विष्णु कुण्ड

संगम के समीप ही विष्णु कुण्ड स्थित है। इस कुण्ड में स्नान करने से तथा पितरों को पिण्ड दान करने से करोड़ों कुलों का उद्धार होता है।

### वरुणेश्वर

वरुणेश्वर के नाम का लिंग संगम पर ही स्थित है। भक्तिपूर्वक जो इस लिंग का दर्शन करता है केदारखण्ड के अनुसार, उसके सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## संगम

रुद्र कुण्ड के नीचे गंगा और वरुणा का संगम है। स्कन्द पुराण के केदारखण्ड के अनुसार इस संगम पर स्नान करने से प्रयाग, वाराणसी, गंगासागर, देवप्रयाग, श्रीक्षेत्र और कुरुक्षेत्र आदि क्षेत्रों में स्नान करने से करोड़ों गुना अधिक लाभ प्राप्त होता है।

## ब्रह्म कुण्ड

उत्तरकाशी में जहां पर गंगा उत्तरवाहिनी हुई है वहीं पर ब्रह्म कुण्ड स्थित है। केदारखण्ड के अनुसार इस कुण्ड में नहाने से सात जन्मों के पापों से छुटकारा मिल जाता है।

## रुद्र कुण्ड

ब्रह्म कुण्ड से नीचे रुद्र कुण्ड स्थित है इस कुण्ड में नहाने से केदारखण्ड के अनुसार रुद्र लोक की प्राप्ति होती है।

## रुद्रेश्वर

रुद्र कुण्ड के पास ही रुद्रेश्वर लिंग है। इस लिंग के दर्शन करने मात्र से रुद्र लोक की प्राप्ति होती है।

## वारणावत

वारणावत महातीर्थ है। यहां पर साढ़े तीन करोड़ तीर्थ विद्यमान हुए बताये जाते हैं।

## विश्वेश्वर

यह एक महालिंग है। इस स्थान पर रुद्र पाठ करने से अनेक तीर्थों का फल प्राप्त हो जाता है।

## राज-राजेश्वरी

यह परिशक्ति राजेश्वरी है। जिसके चरण को शेषनाग ने अपने सिर पर धारण किया था। केदारखण्ड के (अध्याय 95, श्लोक 62-64) के अनुसार इसके स्पर्श से मुक्ति मिल जाती है।

## पंचक्रोसी प्रदक्षिणा

केदारखण्ड के (अध्याय 95, श्लोक 82-86) के अनुसार पंचक्रोसी प्रदक्षिणा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



करने सप्तद्वीप वसुन्धरा की प्रदक्षिणा ही पूरी समझी जाती है। उत्तरकाशी में इस प्रदक्षिणा करने के बाद से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं किन्तु यहां पर किये गए पाप कभी नष्ट नहीं होते हैं।

## वायुतीर्थ

वारणावत के पूर्व उत्तर में वायुतीर्थ है जहां बायोव्यातम की नदी निकली है। यह वही स्थान है जहां पर वायु ने तपस्या करके दिग्पाल पद का पद ग्रहण किया था।

## यमतीर्थ

इसके दक्षिण में आधा योजन की दूरी पर यम तीर्थ स्थित है। इसका भी अत्यधिक महत्त्व है।

उत्तरकाशी के कुछ प्रसिद्ध मन्दिर इस प्रकार हैं:—

## विश्वनाथ मन्दिर

यहां भगवान विश्वनाथ का प्राचीन मन्दिर है। यहां पर वर्ष भर ब्रह्ममुहूर्त में भागीरथी के जल से शिव लिंग का अभिषेक करते हैं। विश्वनाथ के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही एक-एक दोनों ओर दो छोटे मन्दिर है जिनमें गणेश जी की मूर्तियां स्थापित हैं। मन्दिर के प्रांगण में साक्षी गोपाल तथा मारकण्डेश्वर मन्दिर भी हैं। विश्वनाथ मन्दिर के प्रांगण में ही शक्ति मन्दिर है। मन्दिर में बहुत प्राचीन समय का एक त्रिशूल स्थापित है। कहा जाता है कि देवासुर संग्राम के समय यह शक्ति आकाश से गिर पड़ी थी तथा यहां गड़ गयी थी। इस त्रिशूल का अत्यधिक महत्त्व है।

## कृत्तिवाशेश्वर मन्दिर

विश्वनाथ मन्दिर के पास ही बहुत पुराना कृतिवाशेश्वर मन्दिर है।

## हनुमान मन्दिर

कृतिवाशेश्वर और विश्वनाथ मन्दिर के बीच में हनुमान मन्दिर नया और भव्य बना हुआ है।

## श्रीगोपाल मन्दिर

यह मन्दिर जिला पुस्तकालय के सामने हैं। यह प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर के साथ ही सिक्खों का गुरुद्वारा भी बनाया गया है। इस मन्दिर में भगवान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


कृष्ण की संगमरमर की मूर्ति स्थापित की गई है ।

## कोटेश्वर महादेव

श्री लोटकाचार्य आश्रम में कोटेश्वर महादेव का मन्दिर है । यह अनादि काल से बना हुआ माना जाता है । इस आश्रम के दूसरे मन्दिरों में शंकराचार्य मन्दिर भी प्रसिद्ध है । इसी तरह से काल पर्व के मन्दिर में शंकराचार्य के मन्दिर के आगे छोटा-सा मन्दिर है । जिसमें हनुमान की मूर्ति प्रतिष्ठित है ।

## श्री श्रीकाली सत्यनारायण मन्दिर

कोटेश्वर महादेव से कुछ ही दूरी पर इसकी स्थापना की गई है । यह मन्दिर अनन्तमयी माता ने बनवाया था ।

## राम मन्दिर

पंजाब सिन्ध क्षेत्र की पुरानी धर्मशाला में काली मन्दिर से कुछ आगे राम मन्दिर बनाया हुआ है । इसमें राम, लक्ष्मण, सीता की संगमरमर की मूर्तियां हैं ।

## एकादश रुद्रेश्वर मन्दिर

महाराजा जयपुर ने इस मन्दिर को कलापूर्ण ढंग से बनवाया है । जिसमें राजस्थान के सुन्दर लाल और श्वेत पत्थरों का प्रयोग किया गया है । मन्दिर में शिव के ग्यारह लिंग स्थापित हैं जो तीन पक्तियों में हैं । बीच में सबसे बड़ा शिवलिंग है जिस पर ताम्र के पात्र से निरन्तर पानी की बूंदें गिरती रहती हैं । यह मन्दिर विश्वनाथ मन्दिर के दक्षिणी किनारे पर स्थित है ।

## श्री अम्बादेवी मन्दिर

दशमन्दिर के प्रांगण में ही यह मन्दिर बना है । मन्दिर में अष्टधातु की अम्बा देवी की मूर्ति दो फीट ऊंची है ।

## जड़भरत मन्दिर

उत्तरकाशी का यह सबसे पुराना मन्दिर माना जाता है । इस मन्दिर के लिए उत्तरकाशी के मुख्य बाजार से एक गली गंगा के किनारे तक चली गयी है । इसी मार्ग पर जड़भरत मन्दिर है । ऐसा कहा जाता है कि जड़भरत ने शिव आराधना यहीं की थीं । मन्दिर के सामने ही मणिकर्णिका घाट भी है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



**केदारनाथ मन्दिर**

गंगा के किनारे पर केदारनाथ मन्दिर है। प्राकृतिक पाषाण शिला यहां शिव लिंग के रूप में स्थापित है जिसे आदि शिव कहते हैं। केदारनाथ मन्दिर के साथ ही नागेश्वर मन्दिर था जो अब गिर गया है। नागेश्वर की लिंग स्थापना अब केदारनाथ मन्दिर में ही है। मन्दिर के आगे भागीरथी का घाट, केदारनाथ कहलाता है।

**गोपेश्वर मन्दिर**

विश्वनाथ मन्दिर से पूर्व की ओर कुछ ही दूरी पर गोपेश्वर महादेव का मन्दिर है। यह मन्दिर आजकल उपेक्षित-सा है।

**अन्नपूर्णा मन्दिर**

बाड़ाहाट महल में अन्नपूर्णा का आदि प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर में भगवती अन्नपूर्णा की काले पत्थर की 15 इंच की मूर्ति स्थापित है।

**भैरो मन्दिर**

बाड़ाहाट महल में ही भैरो का प्राचीन मन्दिर है जिसमें काल भैरो की मूर्ति स्थापित है।

**दत्तात्रेय मन्दिर**

दत्तात्रेय मन्दिर बहुत पुराना है जो अब जीर्णशीर्ण अवस्था में है। पहले यहां भगवान दत्तात्रेय की अष्टधातु की चार फीट ऊंची भुजा मूर्ति थी। कहते हैं कि उस मूर्ति को किसी ने चुरा लिया। फिर भी यहां पर दत्तात्रेय भगवान की पूजा नियमित रूप से होती है और जिस मूर्ति की पूजा होती है उसके संबंध में कई लोगों के विचार हैं कि यह भगवान बुद्ध की मूर्ति है। इसके सम्बन्ध में राहुल सांकृत्यायन का भी यही मत है।

**परशुराम मन्दिर**

बाड़ाहाट महल में ही दत्तात्रेय मन्दिर के पास ही परशुराम का मन्दिर है। मन्दिर के गर्भगृह में परशुराम की मूर्ति स्थापित है। मन्दिर के मुख्यद्वार पर बरवरीक (बभ्रुवाहन) आदि के चित्र उत्कीर्ण हैं। परशुराम के सौम्य हो जाने से उत्तरकाशी को सौम्य का नाम मिला है। इसलिए परशुराम की इस धरती का और इस मन्दिर का विशेष महत्त्व है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



### रेणुका मन्दिर

उत्तरकाशी के नैऋत्य कोण में जमदग्नि के आश्रम के स्थान पर रेणुका देवी का मन्दिर भी स्थित है। मन्दिर का रास्ता काफी चढ़ाई से होकर जाता है।

### विमलेश्वर महादेव मन्दिर

वारणावत पर्वत पर पाटा और श्रांगली गंगा के ऊपर यह मन्दिर स्थित है। मन्दिर का स्थान अत्यन्त आकर्षक और रमणीक है। छोटे से कक्ष में शिव लिंग स्थापित है और उसके पास ही पुजारी का निवास स्थान है। उत्तरकाशी की पंचक्रोशी परिक्रमा करने वाले धार्मिक यात्री असीवर्णा के संगम के गंगाजल को लेकर विमलेश्वर महादेव तक पहुंचते हैं और गंगाजल चढ़ाते हैं।

### दुर्गा मन्दिर

उत्तरकाशी में दुर्गा मन्दिर का भी विशेष महत्त्व इन मन्दिरों में से हैं यहां पर इसके पास उत्तरकाशी का प्रसिद्ध संस्कृत महाविद्यालय है।

### कुट्टीदेवी

उत्तरकाशी से भागीरथी के पार हरी पर्वत है। इसी पर्वत पर मनेरी भाली उपजल निर्माण योजना का कार्य हो रहा है। इसी पहाड़ की चोटी पर कुट्टीदेवी का मन्दिर अनादि काल से है। कुट्टीदेवी दुर्गा का रूप है यह कोट ग्राम रवाईं परगना की देवी है। कोट से ही इसका नाम कुट्टीदेवी पड़ गया है। इस देवी की स्थानीय जनता में बहुत बड़ी मान्यता है। कहते हैं कि इस देवी की आराधना करने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

उत्तरकाशी में काली कमली धर्मशाला, पंजाब सिंध क्षेत्र धर्मशाला, जयपुर धर्मशाला, विरला धर्मशाला आदि धर्मशालाएं हैं। सार्वजनिक निर्माण विभाग, वन विभाग तथा पर्वतीय विकास निगम द्वारा निर्मित अनेक पर्यटक विश्राम गृह भी हैं। जहां ठहरने की उत्तम व्यवस्था है। होटल आदि भी यहां कई हैं।

ऋषिकेश और हरिद्वार के बाद उत्तरकाशी भी साधु-संन्यासियों और साधकों का विशेष केन्द्र है। दण्डी क्षेत्र, उदासीन आश्रम योग निकेतन, नेपाली आश्रम, त्रोटकाचार्य आश्रम, और शंकरमठ आदि ऐसे आश्रम है जहां साधु-संन्यासियों की खाने रहने की मुफ्त व्यवस्था रहती है और साधुओं को सदाव्रत मिलता है। भागीरथी के पार जोसियाड़ा में पालीटेक्निक है। यहां का महाकालेश्वर मन्दिर प्रसिद्ध है जो भूमि गर्भ में बना हुआ है। उत्तरकाशी में प्रवेश करते ही ज्ञानसू पड़ता है जहां सात बेलश्रम और साधु बेलाश्रम आदि आश्रम साधुओं का मठ है।

उत्तरकाशी में एक पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज भी है और शिक्षा की कई संस्थाएं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



भी हैं। नगर से डेढ़ किलोमीटर आगे उजेली नामक स्थान पर शिवानन्द आश्रम, तपोवन आश्रम, दण्डी क्षेत्र, कैलाश आश्रम, मुन्नीवाई की चौरासी कुटिया और बाजोरिया विश्रामगृह आदि अनेक ऐसे स्थान हैं जहां यात्रियों के लिए रहने खाने आदि की भी व्यवस्था रहती है। यहां एक संस्कृत महाविद्यालय भी है।

उत्तरकाशी नगर सीमांत जिला है। 1960 में टेहरी जिला को दो भागों में विभाजित कर एक नया स्वतन्त्र जिला बना दिया गया है। उत्तरकाशी में जिले के सभी कार्यालय हैं। नगरपालिका का सुन्दर गठन है। नेहरू पर्वतारोहण संस्थान यहां की सबसे बड़ी संस्था है। यहीं की एक निवासी महिला कुमारी बचेन्द्रीपाल एवरेस्ट पर चढ़ी थीं। मनेरीभाली विद्युत योजना भी उत्तरकाशी की सबसे बड़ी योजना है। इस योजना के पूर्ण हो जाने पर उत्तराखण्ड के इस रमणीय नगर का भविष्य अतिउज्ज्वल है। उत्तरकाशी में यात्री अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं की सामग्री लेते हैं और फिर वहां से गंगोत्तरी की ओर प्रस्थान करते हैं।

## गंगोत्तरी की ओर

उत्तरकाशी से जैसे ही हम आगे बढ़ते हैं वैसे ही लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर असी गंगा का भागीरथी से संगम होता है। जब तक मोटर मार्ग नहीं था तब तक पैदल यात्री गंगोत्तरी जाने के लिए मनेरीभाली चट्टी, भटवाड़ी, गंगनाणी, लोहारी, लनागसूखी, झाला, हरसिल, ओजियापुल, धराली, जंगला, जाडगंगा संगम से फिर भैरोंघाटी होकर फिर गंगोत्तरी चट्टी में पहुंचते थे परन्तु आज यातायात सुलभ हो जाने के कारण गंगोत्तरी तक पहुंचना पर्याप्त आसान हो गया है। अब गंगोत्तरी तक सीधे बसें जाती हैं। सुन्दर मोटर मार्ग बन गया है।

गंगोत्तरी के रास्ते पर गंगोरी एक बहुत सुन्दर स्थान है। इस गंगोरी से डोडीताल नाम के अत्यन्त रमणीक ताल को रास्ता आता है। यहां से पैदल जाया जा सकता है। डोडीताल 3024 मीटर की ऊंचाई पर प्रकृति का एक अनोखा ताल है जिसमें ट्रौट मछलियों का भंडार है। बांस, चीड़ तथा देवदार वृक्षों के मध्य यह सुन्दर ताल स्थित है। इसके आसपास नाना प्रकार के फूल खिलते हैं और अनेक प्रकार के पशु-पक्षी जंगल में स्वतन्त्र रूप में विचरण करते हैं। प्रकृति-प्रेमी गंगोरी से डोडीताल का अद्भुत सौन्दर्य देखना नहीं भूलते। जो पर्यटक और पर्वतारोही व प्रकृति-प्रेमी डोडीताल जाना चाहते हैं वे उत्तरकाशी से गंगोरी फिर गंगोरी से कल्याणी तक जीप से जा सकते हैं। कल्याणी से अगोरा पांच किलोमीटर और अगोरा से डोडीताल 16 किलोमीटर अर्थात् 21 किलोमीटर पैदल जाना होता है। ताल के समीप ही वन विभाग का रेस्ट हाऊस और लकड़ी के बने हुए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



गंगोरी से मनेरी 6 किलोमीटर की दूरी पर है यहीं पर 39 मीटर ऊंचा भागीरथी पर एक विद्युत बांध बनाया जा रहा है। मनेरीभाली की यह विद्युत योजना बहुत प्रसिद्ध है।

### भटवाड़ी

गंगोरी से 25 किलोमीटर की दूरी पर भटवाड़ी नाम का एक नया उभरता हुआ नगर है। यहीं से पहले पैदल यात्री केदारनाथ को जाते थे। आजकल यह विकास खण्ड का मुख्यालय और एक छोटा-सा नगर बन गया है। स्कन्द पुराण के अन्तर्गत इस स्थान को भाष्कर प्रयाग के नाम से ख्याति मिली है। स्कन्द पुराण के अन्तर्गत केदारखण्ड में वर्णन आया है कि प्राचीन समय में सूर्य भगवान ने 1000 वर्ष तक यहां पर शिव की तपस्या की थी। जब आशुतोष भगवान शंकर प्रसन्न हो गये तो उन्होंने वरदान दिया कि मैं आज से आपके नेत्रों में निवास करूंगा। इस प्रकार सूर्य द्वारा उपासना किये जाने पर इस स्थान का नाम भाष्कर प्रयाग हो गया। भाष्कर प्रयाग (भटवाड़ी) में भाष्करेश्वर महादेव का मन्दिर है। मन्दिर के दक्षिणी किनारे पर नवला नदी प्रवाहित होती है। उत्तर-पश्चिम की ओर मोक्षवेदी गंगा भागीरथी से मिलती है। भाष्करेश्वर मन्दिर की पूर्व की ओर शंखधारा (झरना) निकलता है। अर्थात् भटवाड़ी, भाष्करेश्वर, भाष्कर प्रयाग में तीन नदियों का संगम गंगा जी से होता है। इसलिए इस प्रयाग का महत्त्व केदारखण्ड में देव प्रयाग से भी ज्यादा माना गया है।

### गंगनाणी

जब पैदल यात्रा होती थी तब गंगनाणी का विशेष महत्त्व था। यहां की अपार शान्ति और खुला वातावरण तपस्वियों का मन अपनी ओर आकर्षित करता था। गंगनाणी में गरम पानी के स्रोत हैं। इन स्रोतों में नहाकर यात्री अपनी रास्ते की थकावट मिटाते थे और प्रकृति का आनन्द लेते थे। इस गंगनाणी का अपना प्राकृतिक सौन्दर्य तो है ही, परन्तु साधकों के लिए इस स्थान का विशेष महत्त्व युग-युगों से माना गया है।

### सुक्खी

सुक्खी का प्राकृतिक सौन्दर्य अपने-आप में एक विशेष आकर्षण लिये हुए है। जैसे-जैसे 2744 मीटर की ऊंचाई पर मोटर-मार्ग से यात्री चढ़ते चले जाते हैं वैसे-वैसे हिमालय के घने वनों का सौन्दर्य बर्फ से ढके हुए हिमालय की सुन्दरता, पहाड़ों से गिरते झरनों की शोभा को देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है। गंगनाणी से 18 किलोमीटर की दूरी पर सुक्खी का यह प्राकृतिक सौन्दर्य प्रत्येक प्राणी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



के मन को मोह लेता है। यहां पर सेब, नासपाती, अखरोट आदि मौसम के अनुसार अधिक संख्या में मिलते हैं।

**झाला**

सुक्खी की चढ़ाई पर प्रकृति का आनन्द लेते हुए जब यात्री पुनः झाला की उतराई उतरने लगता है और 2744 मीटर से नीचे 305 मीटर की ऊंचाई पर आ जाता है तो रास्ते की प्राकृतिक सुन्दरता के बदलते हुए रूप को देखकर उसका मन आह्लादित हो जाता है। एकाएक वनस्पतियां बदलती हुई यहीं पर नजर आती हैं। यहां पर चीड़ के वृक्षों की घनी छाया से होकर जाना होता है और देवदार के पेड़ों की छाया को छोड़कर एकाएक चीड़ के घने पेड़ों की छाया में आना पड़ता है। यहीं पर भागीरथी के पार रास्ता दूसरे किनारे पर चला जाता है और कई किलोमीटर तक भागीरथी के किनारे-किनारे समानान्तर रूप से मोटर-मार्ग चलता रहता है।

**हरसिल**

प्रकृति का अनोखा और सुन्दरता का आगम हरसिल प्रत्येक पर्यटक को अपनी ओर आकर्षित किये बिना नहीं रहता। यहां की सुन्दरता से प्रभावित होकर जार्जविल्सन नामक अंग्रेज ने इस स्थान पर अपना चहेता घर बनाया था। और वही पहले व्यक्ति थे जिसने यहां सेब के बाग लगाये थे। हरसिल की सुन्दरता यहां के सुन्दर बाग हैं यहां से हिमालय का सौन्दर्य और पहाड़ के घने वनों की सुखद दृश्यावली मन को मोहित किये रहती है। दूर-दूर से पर्यटक यहां छुट्टी बिताने के लिए आते हैं और हरसिल की सुन्दर सुखद गोद में रहकर प्रकृति का आनन्द लेते हैं। हरसिल में रहने-खाने आदि की व्यवस्था है।

**लंका**

हरसिल से जांगला चट्टी तक का मार्ग देवदार की छाया में भागीरथी के किनारे-किनारे चलता है। जैसे ही जांगला में पहुंचते हैं वैसे ही सड़क मोड़ों में परिवर्तित हो जाती है और पुनः यहां भागीरथी को पार करना पड़ता है। लंका एक छोटी-सी उभरती हुई बस्ती है। हरसिल से 13 किलोमीटर की दूरी पर यह स्थान स्थित है।

हरसिल से लंका तक का मार्ग सुन्दर है। यमुनोत्तरी से 215 किलोमीटर और ऋषिकेश से लंका 235 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

पहले लंका से तीन किलोमीटर की दूरी पैदल पार करनी पड़ती थी। भैरों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



घाटी के टेढ़े-मेढ़े रास्तों को पार कर आगे बढ़ने के बाद ही उत्तरकाशी की ओर बढ़ा जा सकता था। इस तीन किलोमीटर के रास्ते में भयंकर चट्टानें आती थीं। पहले लंका से उतराई पर जाह्नवी गंगा तक जाना होता था और पुनः गंगा से चढ़ाई चढ़कर फिर ऊपर चढ़ना पड़ता था। बहुत पहले यहां रस्सियों का एक पुल था जिसका अवशेष आज भी दिखायी देता है। उन रस्सियों को पकड़कर यात्री पार होते थे। बहुत से लोग मृत्यु के भय से उस रस्सी के पुल से जाते ही नहीं थे। अब इस घाट में एक पुल बहुत नीचे बना दिया गया है, उसी से भागीरथी को पार कर चढ़ाई चढ़कर दूसरी तरफ प्रायः उसी ऊंचाई पर पहुंचना पड़ता है। भैरों घाटी में भागीरथी और जाह्नवी का जहां पर संगम होता है वह भी एक विलक्षण स्थान है। भागीरथी का पानी स्वच्छ होता है जब कि जाह्नवी का पानी नीले रंग का और खूबसूरत होता है। यहां पर जाह्नवी नदी के मिलने के कारण जो घोर गर्जन होता है उससे भी एक प्रकार का भय-सा लगता है।

अब मोटर का पुल बन गया है। ऋषिकेश अथवा उत्तरकाशी से सीधे मोटरें जीपें तथा कारें गंगोत्तरी पहुंच जाती हैं। अब यात्रियों एवं पर्यटकों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। कुछ वर्षों के बाद यह मार्ग इतना अच्छा हो जायेगा कि यात्री अथवा पर्यटक कल्पना भी नहीं कर सकेंगे कि कभी भैरों घाटी का मार्ग इतना भयानक भी रहा होगा। बदरीनाथ की तरह अब गंगोत्तरी की यात्रा भी सुलभ हो गयी है।

## गंगोत्तरी

समुद्र तल से 3140 मीटर की ऊंचाई पर घने देवदार के वृक्षों के मध्य गंगोत्तरी स्थित है। भागीरथी के दाएं किनारे पर गंगा का प्रसिद्ध मन्दिर है और और बाएं किनारे पर कुछ आश्रम और धर्मशालाएं स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि गंगा के मन्दिर को सबसे पहले आदि शंकराचार्य ने बनवाया था और बाद में गोरखा शासन के समय अमरसिंह थापा ने इस मन्दिर का जीर्णोद्वार किया था। मन्दिर में प्रधान मूर्ति गंगा जी की है। अन्य मूर्तियों में भागीरथी, यमुना, सरस्वती और शंकराचार्य की मूर्तियां हैं। गंगा की मूर्ति का छत्र स्वर्ण का बना है। इसके निकट ही भैरव देवता का मन्दिर है। मन्दिर से जैसे ही हम निकलते हैं सामने भागीरथी की तीव्र धारा दृष्टिगोचर होती है। गंगोत्तरी का मन्दिर अक्षय तृतीया को खुलता है और दीपावली के पश्चात् गोवर्धन के दिन इसका अन्तिम पूजन किया जाता है और मन्दिर के कपाट बन्द हो जाते हैं। मन्दिर के कपाट जब बन्द हो जाते हैं तो मुखवा गांव के सेमवाल ब्राह्मण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नन्दादेवी मन्दिर नौटी

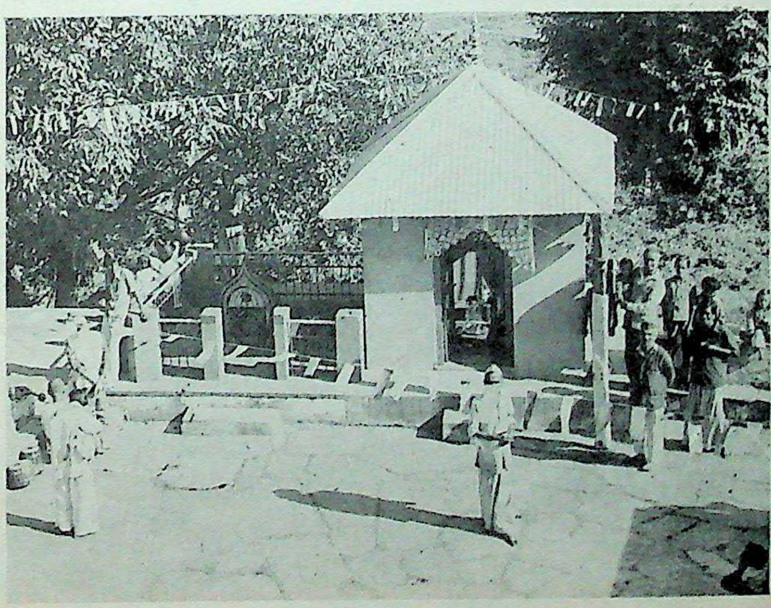

नन्दादेवी मन्दिर, नौटी—चमोली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

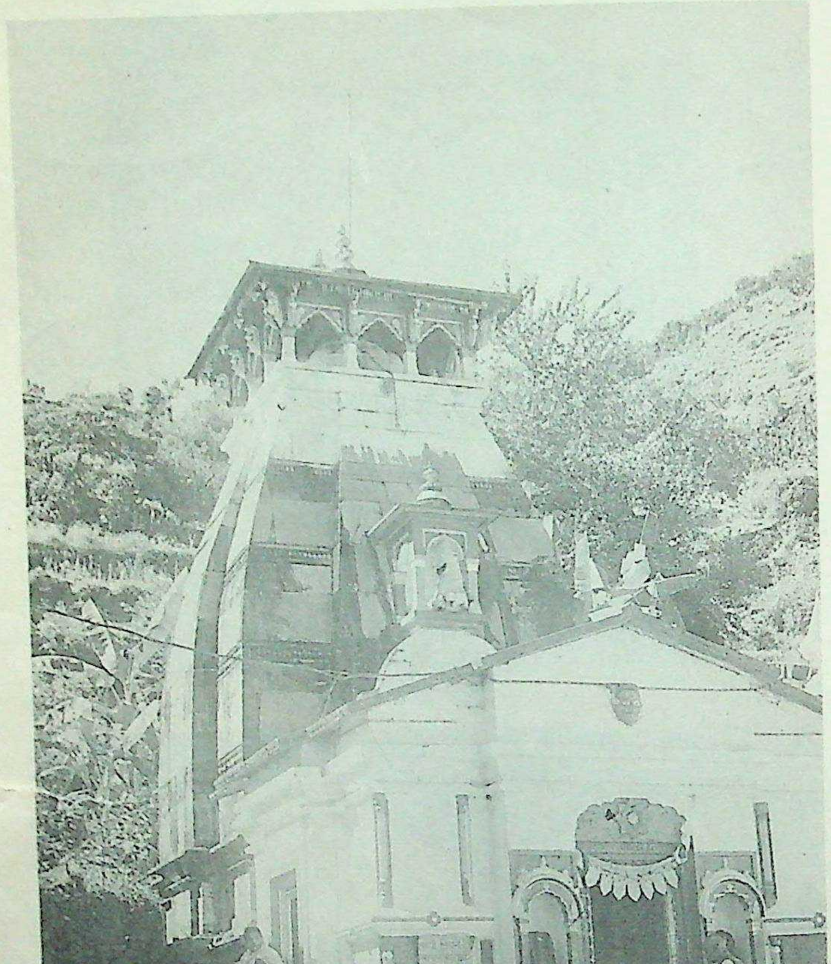

विश्वनाथ मन्दिर, गुप्त काशी—चमोली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

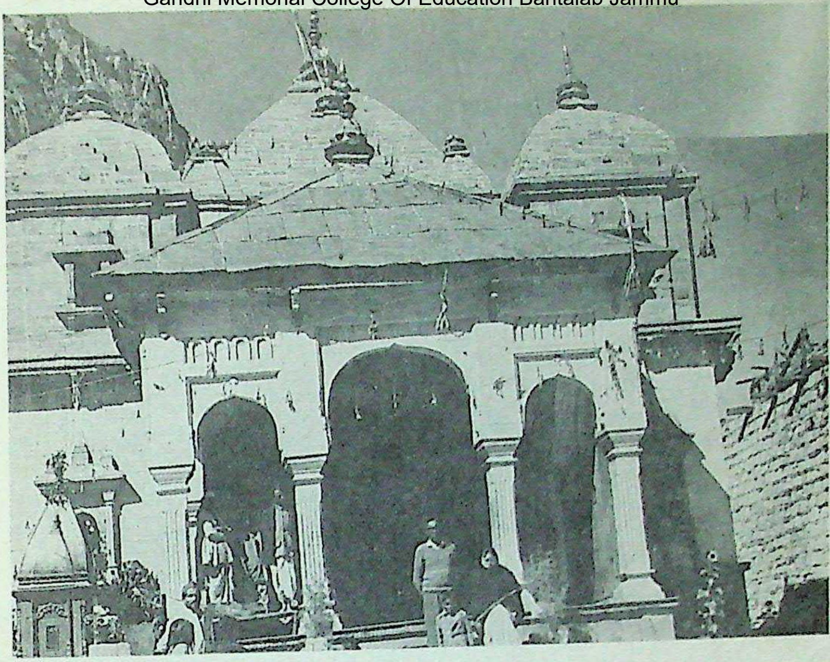

गंगोत्तरी में गंगा का मन्दिर

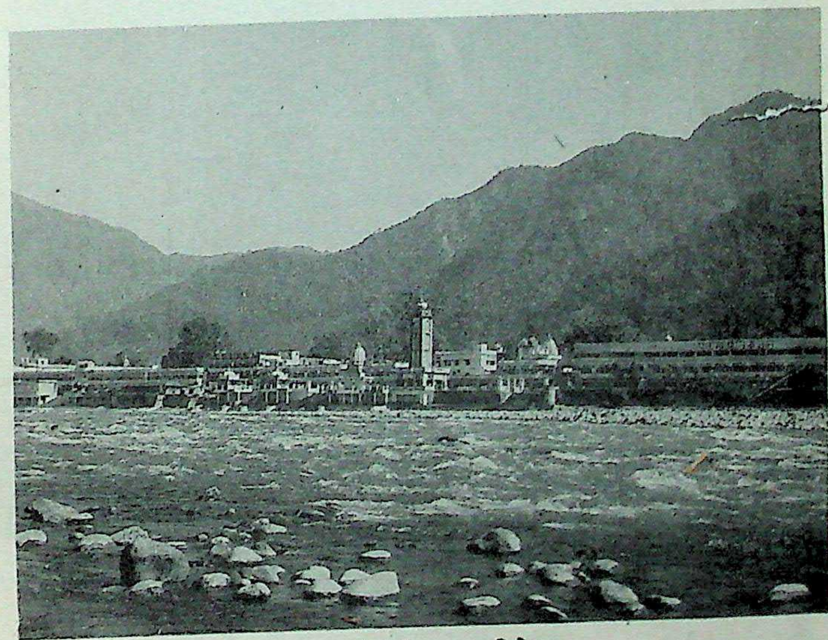

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

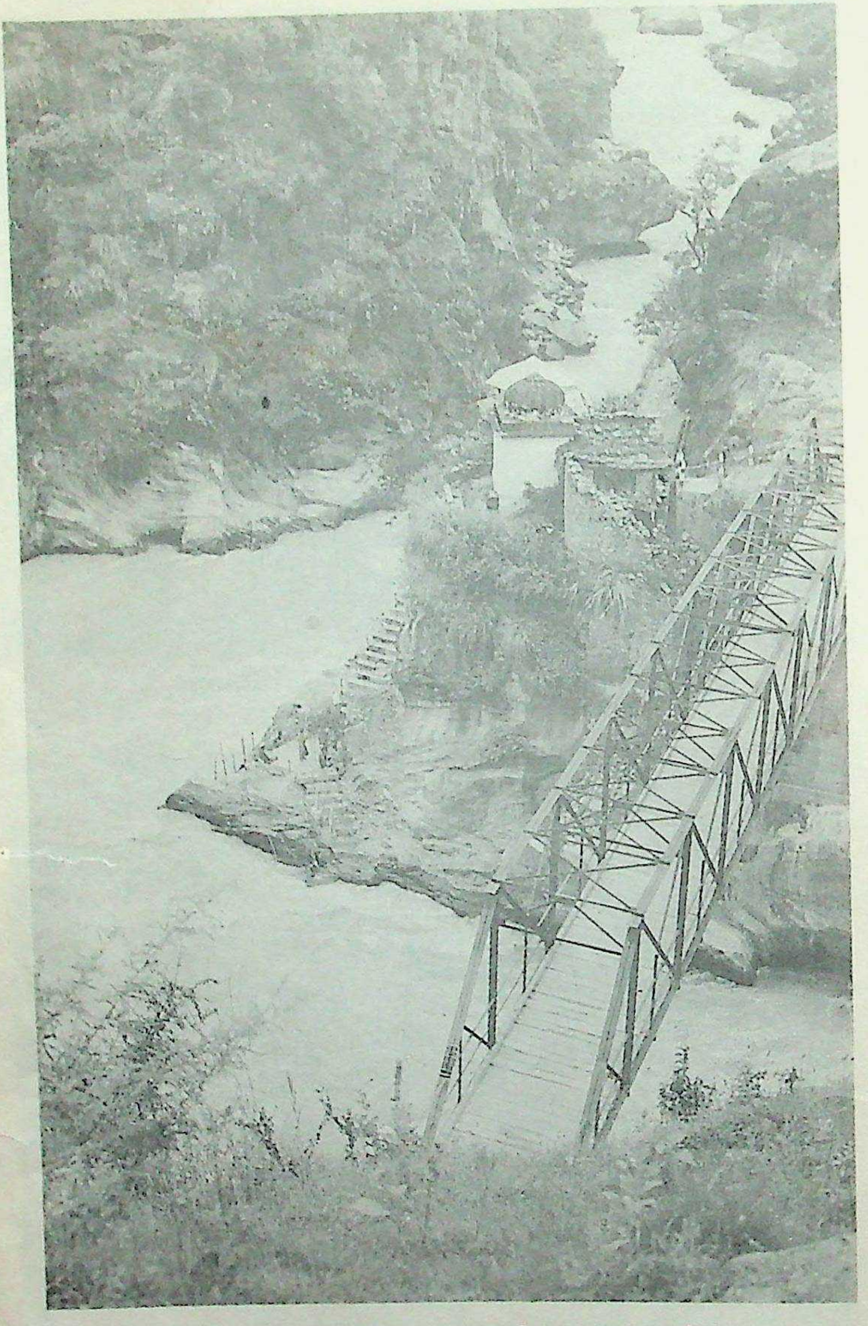

धौली नदी एवं अलकनंदा का संगम, विष्णु प्रयाग—चमोली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

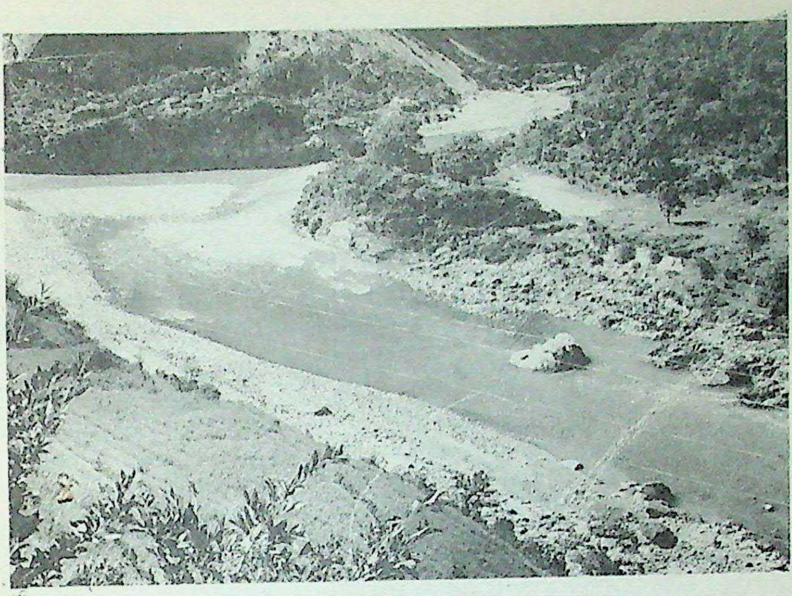

कर्णप्रयाग, चमोली

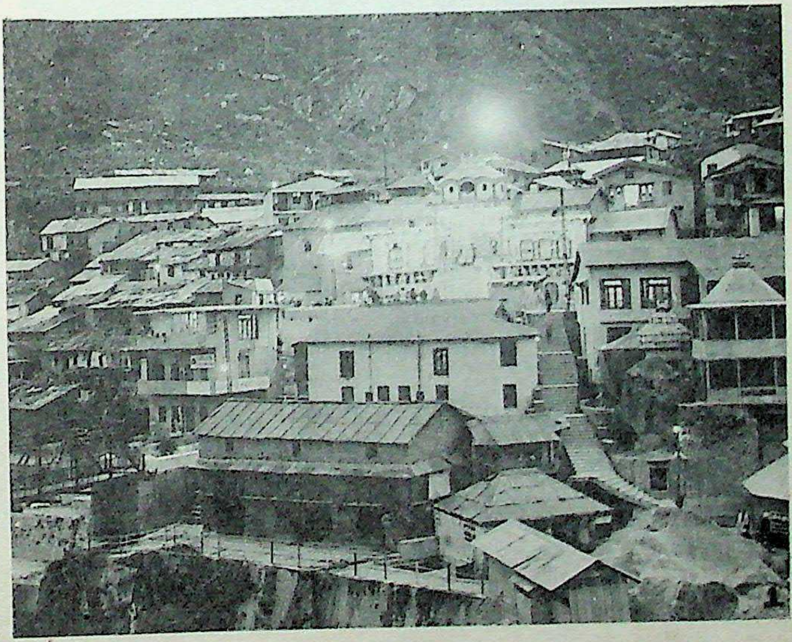

बद्रीनाथ मन्दिर—चमोली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(रात्रि में)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

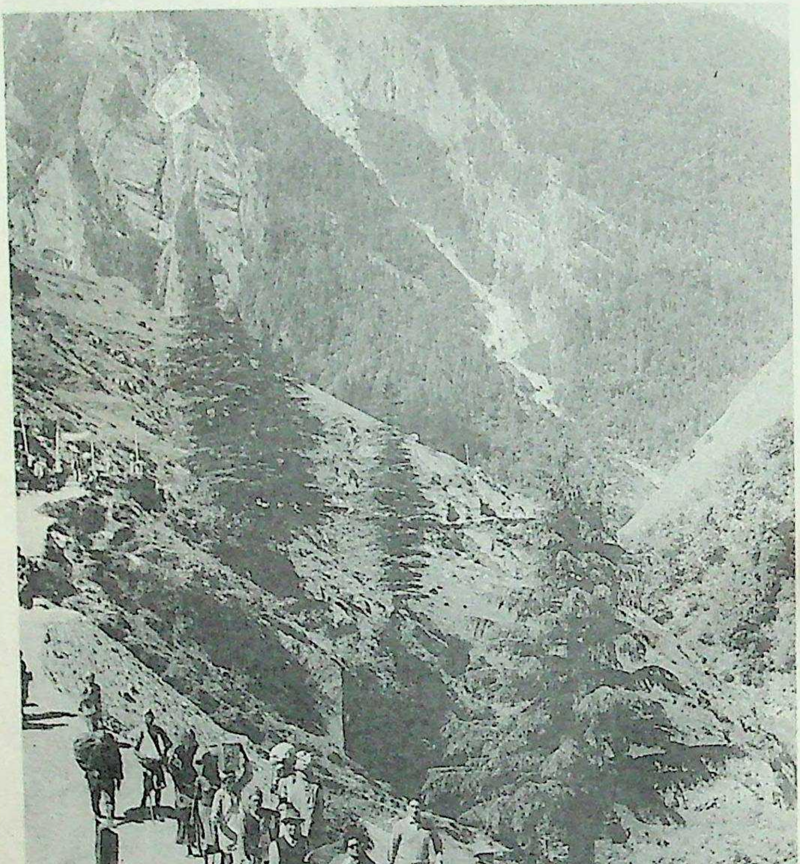

हनुमान चट्टी, बद्रीनाथ मार्ग, चमोली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

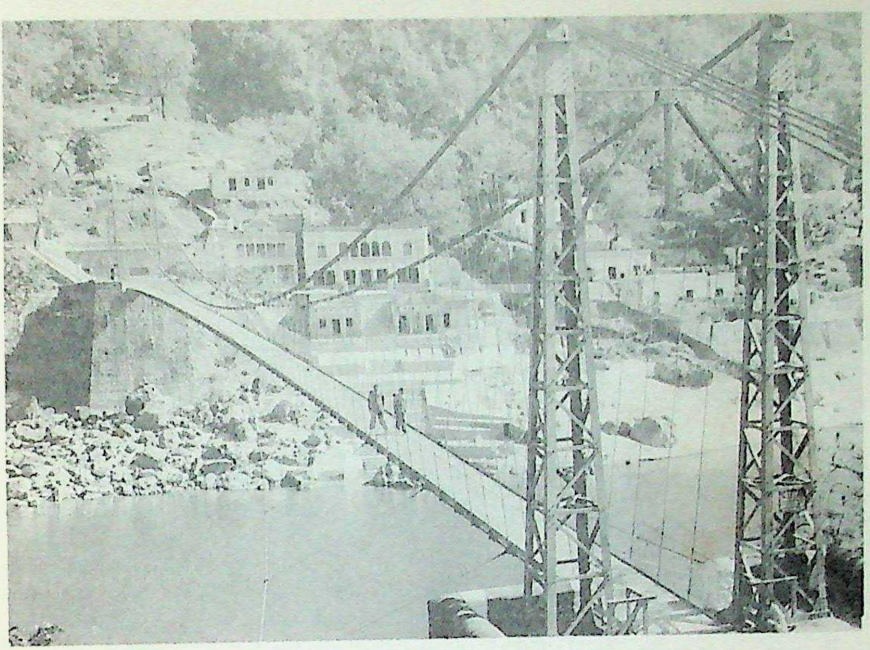

लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश—टिहरी

सैनिक कॉलिज देहरादून

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

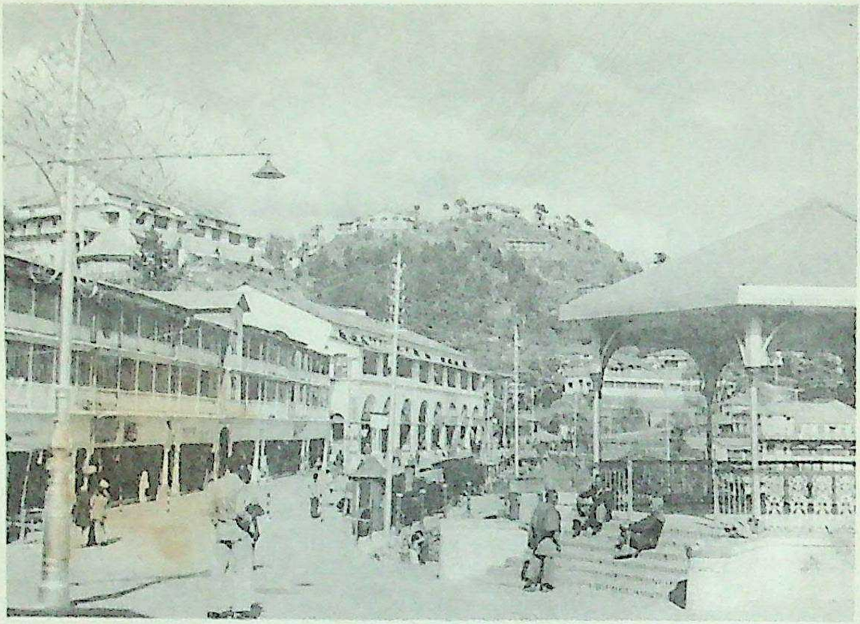

मसूरी का चित्र

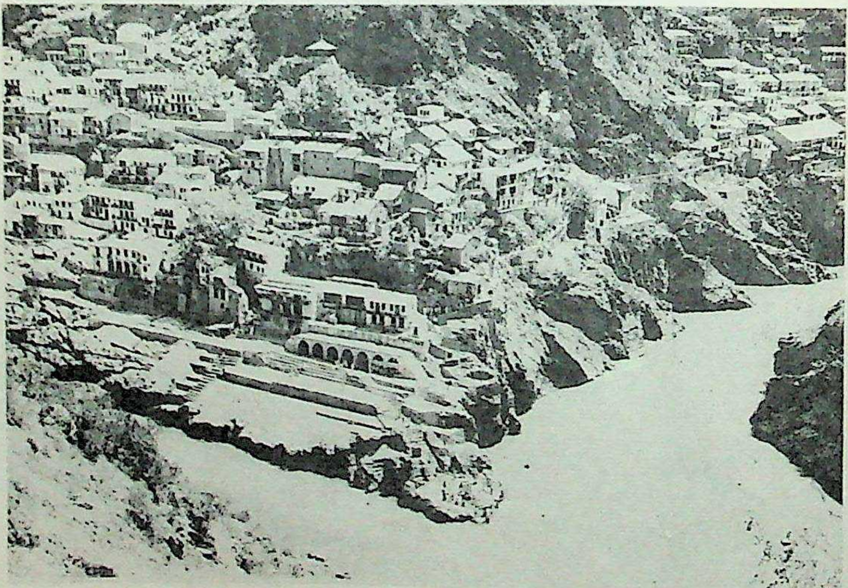

देवप्रयाग, टिहरी गढ़वाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



अपने यहां गंगा माता का पूजन मार्कण्डेय आश्रम में करते हैं। मार्कण्डेय आश्रम गंगोत्तरी से 18 किलोमीटर नीचे भागीरथी के किनारे पर है। मुखवा धराली अर्थात् श्ताम प्रयाग के गांवों में गंगोत्तरी के पण्डे रहते हैं। मतंग ऋषि ने मुखवा गांव में तपस्या की थी। उन्हीं के नाम पर इस ग्राम का नाम मुखवा पड़ा है।

## गंगोत्तरी के प्रमुख पवित्र स्थान

### गौरीकुण्ड

गंगा के मन्दिर के नीचे लगभग एक फलाँग की दूरी पर भागीरथी सीधी चट्टानों के बीच से झरना बनकर गिरती है। इसके नीचे एक विशाल प्राकृतिक शिव लिंग है। जिस स्थल पर भागीरथी झरना बनकर गिरती है, कहते हैं कि गौरी ने शिव को प्राप्त करने के लिए यहीं तपस्या की थी।

### पटांगण

गौरी कुण्ड से डेढ़ किलोमीटर नीचे जहां पर रुद्रगंगा और भागीरथी का संगम होता है, शिलाओं का एक समतल मैदान दिखाई देता है। ऐसा कहा जाता है कि गोत्र-हत्या के पाप से छुटकारा पाने के लिए पाण्डवों ने यहां आकर तप किया था और यज्ञ भी किया था। यहीं पर एक विशाल गुफा है जिसको रुद्र गुफा कहते हैं। यही पटांगण है जहां आज भी तीर्थयात्री पितरों को पिंडदान करते हैं और यज्ञादि करते हैं।

### केदार गंगा संगम

गंगा मन्दिर से लगभग 100 कदम नीचे केदार गंगा केदार शिखर से बहती हुई आती है और भागीरथी से उसके बांएं तट पर आकर मिलती है। ऐसी भी कथा प्रसिद्ध है कि केदार गंगा के साथ-साथ ही पाण्डव केदारनाथ पहुंचे थे। गंगोत्तरी से 6 किलोमीटर की दूरी पर केदारताल है। यह आकर्षक ताल है। केदार गंगा का उद्गम यही ताल बताया जाता है।

### शंकराचार्य की समाधि

ऐसी कथा कही जाती है कि जगत् गुरु शंकराचार्य ने गंगोत्तरी की यात्रा की थी और यहीं अपना शरीर विसर्जित किया था। शंकराचार्य की समाधि गंगा के मंदिर के बीच बनी हुई है। परन्तु शंकराचार्य की वास्तविक समाधि केदारनाथ में ही विश्वस्त रूप से मानी जाती है। यहां शंकराचार्य ने अवश्य तपस्या की थी,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



इसीलिए उनकी स्मृति को सदैव बनाये रखने के लिए यहां पर शंकराचार्य की समाधि बनाई गई है।

## भैरो मंदिर

लंका से मोटर से उतरने के बाद भैरो घाटी में जाह्नवी नदी को पार करना होता है। जाह्नवी पार करते ही चढ़ाई चढ़ने के बाद भैरो मंदिर सामने पड़ता है। भैरो गंगोत्तरी के द्वारपाल देवता हैं। बिना भैरो की पूजा किये गंगोत्तरी यात्रा का फल नहीं मिलता है। इस भैरो देवता के कारण ही जाह्नवी घाटी को भैरो घाटी कहा जाता है।

गंगोत्तरी में धार्मिक यात्रियों के लिए काली कमली की पंचायती धर्मशाला प्रमुख है। यहां यात्रियों को रहने के लिए स्थान तथा रात्रि के लिए कम्बल प्राप्त होते हैं। निर्धन यात्रियों के लिए सदाव्रत का प्रवन्ध भी है।

पंजाब सिन्धु क्षेत्र धर्ममशाला भी काली कमली के साथ ही है। यहां भी यात्रियों के लिए सुविधा प्रदान की जाती है। गंगोत्तरी बाजार में भी यहां के पण्डों के द्वारा एक धर्मशाला बनाई हुई है। पण्डों के द्वारा यात्रियों की पूरी व्यवस्था की जाती है। इसके अतिरिक्त गढ़वाल मंडल विकास निगम का विश्राम गृह भी यात्रियों को सुविधा पहुंचाने के लिए बन गया है।

गंगोत्तरी में शीघ्र ही आधुनिक साधन उपलब्ध हो जायेंगे। मोटर-मार्ग बन जाने से यह बदरीनाथ की तरह प्रमुख मंदिर बन गया है। **अब यहां पर विद्युत आदि की व्यवस्था की जा रही है।** वर्तमान समय में भागीरथी के दोनों किनारों पर महात्माओं के बड़े-बड़े आश्रम बन गए हैं। पुराने समय की जो गुफाएं थीं उनको भी अच्छे ढंग से सजाया गया है। गंगोत्तरी क्षेत्र की वन-सम्पदा की दृष्टि से यदि अध्ययन करें तो इसका बड़ा भारी महत्त्व है। इस सारे क्षेत्र में विविध प्रकार की अमूल्य औषधियां विद्यमान हैं। गंगोत्तरी के वनों में कस्तूरी मृग से लेकर कई प्रकार के वन्य जन्तु भी आजादी से विचरण करते हैं। यहां की प्राकृतिक सुन्दरता अद्भुत है। भारत के ही नहीं बल्कि विदेशों के भी यात्री गंगोत्तरी क्षेत्र की सुन्दरता को देखने आते रहते हैं।

## देवघाट शिखर श्रृंखला

जैसा कि पहले भी लिखा जा चुका है इसी गंगोत्तरी के पास भागीरथी में केदार गंगा की स्वच्छ जलधारा आकर मिलती है। यदि ध्यान से देखें तो इसके बिल्कुल सामने दो नीची स्वच्छ शिखर श्रृंखलाएं चली गयी हैं। यही श्रृंखला देवघाट कहलाती है। इसी पर्वत-श्रृंखला में गंगा मंदिर, शिवलिंग-ब्रह्मा आदि शिखर दिखाई देते हैं। इन शिखरों में एक छोटा सा शिखर दिखाई देता है जिसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



शंकराचार्य शिखर कहते हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि इसी पर्वत शिखर पर आदि गुरु शंकराचार्य ने अपने शरीर का त्याग किया था। देवघाट शृंखला से एक स्वच्छ जलधारा देव गंगा निकलकर भागीरथी में मिलती है।

माधव उपाध्याय ने 'त्रिपथगा' (दिसम्बर 1958) के अपने लेख 'कालिन्दी भागीरथी जन्मभूमि' में लिखा है कि इस पुण्यभूमि को आदिकाल से ही महान् तपस्वियों की तपभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त है। महर्षि मतंग, कण्व, ब्रह्मा, नारद, मार्कण्डेय' आदि मुनि श्रेष्ठों ने आकर यहां कठिन तपस्या की थी। इसी कारण इस देवभूमि का कण-कण सिर-माथे चढ़ाने योग्य है। अकथ कष्ट सहन करने के पश्चात् यात्री इस देवभूमि के दर्शन कर अपने को सचमुच ही धन्य ही अनुभव करता है। श्रद्धा तथा पवित्र भावना से ओत-प्रोत यात्रियों की भावभीनी मुखाकृतियां लक्ष्य-प्राप्ति के चरम-सुख से दीप्त रहती हैं। इस प्रकार की भावनाएं इस पुण्य क्षेत्र के प्रति प्रायः कई लेखकों की और यात्रियों की रही हैं।

## गोमुख की ओर

गंगोत्तरी वास्तव में गंगा का उद्गम क्षेत्र नहीं है। यहां से गंगा के उद्गम क्षेत्र गोमुख जाने का मार्ग जाता है। अधिकांश कट्टर धर्मावलम्बी और प्रकृति-प्रेमी गोमुख से आगे तक पहुंचते हैं।

गोमुख गंगाजी का उद्गम-स्थान माना जाता है। गंगोत्तरी से गोमुख की दूरी 18 किलोमीटर है। 4255 मीटर समुद्र तल से ऊंचाई पर गोमुख स्थित है। गंगोत्तरी से गोमुख जाने के लिए रास्ता अत्यन्त कठिन है। भागीरथी के किनारे किनारे अत्यन्त सुन्दर वृक्षों की छाया के मध्य रास्ते को पार करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है। गंगोत्तरी से कुछ ही दूर आगे चलने पर बर्फ का प्राकृतिक पुल पार करना पड़ता है। इससे आगे फूलों से भरा हुआ वृक्षों का 'गंगा वन' आता है। इस मनोहारी वन से डेढ़ किलोमीटर आगे बढ़ने पर एक विशाल शिला सामने रास्ते को रोकती हुई-सी खड़ी मिलती है, इस शिला को 'अघमर्दनी' कहा जाता है। सामने शिला खड़ी है और उसके नीचे गंगा का अत्यन्त वेग से बहने वाला जल बहता रहता है जिसको पार करना काफी कठिन है परन्तु चीड़ के तख्ते इस शिला के सहारे अटकाये जाते हैं जिनके ऊपर चलकर रास्ता पार किया जाता है। यहीं पर 'अघमर्दनी' गुफा भी है। इसका नाम गर्भयोनि भी है। इस स्थान के आगे चीड़ का घना वन पार करना पड़ता है इसीलिए इस स्थान को 'चीड़वासा' कहा कहा गया है। भागीरथी के किनारे चीड़वासा का महान् शिखर और दूसरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



ओर पांगरवासा का हिम शिखर खड़े होकर मानो इस स्वर्गभूमि की रक्षा करते हैं। चीड़वासा में काली कमली वाले की धर्मशाला है। यात्री रात को ठहर जाते हैं और ब्राह्ममुहूर्त में गोमुख की ओर प्रस्थान करते हैं। चीड़वासा से जैसे ही आगे बढ़ते हैं, भागीरथी के दोनों किनारों पर आकाश को छूने वाले नैलंग और भृगुपन्थ शिखर खड़े मिलते हैं। रास्ते में भोज-पत्र का घना वन मिलता है। भोज-पत्र वृक्षों की अधिकता के कारण इस स्थान को 'भोजवासा' कहा जाता है। भृगुपन्थ शिखर हिमानी स उतरने वाली ब्रह्मानन्द नदी को 'वैतरणी' कहते हैं यहीं से मृत्यु लोक छूट जाता है और उसके पार 'ब्रह्मलोक' या सिद्ध मंडल आश्रम आता है। इस क्षेत्र में आकर मनुष्य स्वर्गातीत आनन्द को प्राप्त करने लगते हैं। भोजवासा से गोमुख की दूरी 10 किलोमीटर रह जाती है परन्तु रास्ता अत्यन्त कठिनाई का है। गोमुख पहुंचने से पहले भागीरथी शिखर और शिवलिंग शिखर के दर्शन होते हैं। इस स्थान से साढ़े चार किलोमीटर गोमुख रह जाता है। सूर्योदय के पहले की आभा में इन पर्वत शिखरों के दर्शन अत्यन्त मनोहारी होते हैं। लगता है कि सूर्योदय के साथ सूर्य की प्रत्येक किरण अपने स्नेह से पर्वत की इन चोटियों का शृंगार करती है। सूर्य की किरणें बर्फ से युक्त इन चोटियों का लाल वर्ण, नीलवर्ण और उसके बाद स्वर्णिम आभा से शिखरावली को आलोकित कर देती हैं। ऐसा दृश्य देखकर प्रत्येक प्राणी अपने आपको स्वर्ग की धरती में पाकर धन्य समझता है। आगे बढ़ने पर गोमुख की हिमानी मिलती है, जहां पर गंगा जी बड़े वेग से पृथ्वी के भीतर से निकलती हुई बढ़ती हैं। गोमुख हिमबांक 24 किलोमीटर लम्बा और लगभग 6 किलोमीटर चौड़ा है। कहीं-कहीं इसकी चौड़ाई 3 किलोमीटर ही रह जाती है। सौन्दर्य की दृष्टि से पिण्डारी हिमबांक से इसकी शोभा अधिक है। चन्द्राकार विशाल द्वार से घोर गर्जन के साथ गंगा जी पृथ्वी से निकलती हैं। उस शिला का भी अपना विशेष महत्त्व है। इसी स्थान को गंगा जी का स्रोत माना जाता है परन्तु वास्तविकता यह है कि गंगा का स्रोत गोमुख भी नहीं है।

गोमुख से जैसे हम आगे बढ़ते हैं तो हमें नन्दन वन की सुन्दर मनोहारिणी धरती में गंगा जी द्रव्य रूप में मिलती है। यह नन्दन वन क्षेत्र गोमुख हिमबांक के क्षेत्र में हैं। द्रव्य रूप में हिमालय को पिघलाने वाली जल-धाराएं अनेक रंगों में बहती हुई गोमुख के पास आ जाती हैं। यही गोमुख हिमबांक की सौन्दर्यमयी स्वर्गिक धरती में नाना प्रकार के फूल खिलते हैं। 30 किलोमीटर लम्बी इस घाटी में अनेकों छोटी-छोटी हिम नदियां बहती हैं जिनका पानी अनेक रंगों में बहता हुआ मिलता है। यही वह नन्दन वन है जहां मन को वश में करने वाली नदियां हैं। फूलों की मखमली धरती है और किनारों पर गुफाएं हैं जिनमें तपस्वी तप में तल्लीन रहते हैं। कोई भाग्यवान ही इन गुफाओं में रहने वाले तपस्वियों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



के दर्शन कर सकता है ।

गढ़वाल विकास निगम ऋषिकेश की ओर से 19 दिन का ट्रैकिंग कार्यक्रम किया जाता है । इस पैदल यात्रा में नन्दन वन और तपोवन की यात्रा भी सम्मिलित है । गंगोत्तरी से गोमुख, नन्दनवन तपोवन होकर पैदल यात्रा 3 दिन में होती है। भोजवासा में निगम का डाकबंगला है ।

| | |
|---|---|
| गंगोत्तरी से चीड़वासा | 8 किलोमीटर |
| चीड़वासा से भोजवासा | 4 किलोमीटर |
| भोजवासा से गोमुख | 6 किलोमीटर |
| गोमुख से नन्दनवन | 6 किलोमीटर |
| नन्दनवन से तपोवन | 6 किलोमीटर |
| तपोवन से गोमुख | 5 किलोमीटर |

यदि ध्यान से देखें तो गंगा की सभी धाराएं हिमालय की पर्वत श्रृंखला के एक ही सुमेरु पर्वत की कई सहायक श्रृंखलाओं से स्रवित होकर निकलती हैं। बदरीनाथ के आगे नर नारायण पर्वत हैं । गंगा की दूसरी धारा सुमेरु पर्वत के हिमबांक से निकलकर 'सतपथ' सरोवर होकर बदरीनारायण धाम में आती है। उसी सुमेरु पर्वत के दूसरे भाग से भागीरथी गंगा का हिम प्रभाव प्रारम्भ होता है। बदरीनाथ और केदारनाथ के भीतर गंगोत्तरी की तरफ वाला भाग सब मिलाकर 'चतुस्तम्भ' अर्थात् चौखम्भा पर्वत शिखर कहलाता है । वास्तव में इसी चौखम्भे पर्वत की हिमालयों से गंगा की जलधाराएं निकलती हैं । चौखम्भा शिखर से सुमेरु के पास होते हुए शिवलिंग शिखर आकर मिलता है । यह शिखर गोमुख के दक्षिण भाग में है । इसी शिवलिंग के नीचे उतरकर गंगा, अपने विशिष्ट प्रभाव से अनेक जल धाराओं को साथ लेकर, गोमुख में गंगा की मुख्य धारा के रूप में पृथ्वी से निकल पड़ती है । गंगा की एक धारा केदार कण्ठा से निकलकर मन्दाकिनी के रूप में प्रवाहित होकर रुद्र प्रयाग में अलकनन्दा से मिलती है ।

बहुत से साहसी यात्री इसी मार्ग से गंगोत्तरी से गोमुख, नन्दनवन पहुंचते हुए बदरीनाथ की यात्रा करते हैं । गंगोत्तरी के विख्यात स्वामी सुन्दरानन्द कई बार गंगोत्तरी से बदरीनाथ हो आये हैं । सन् 1983 के जून माह में मैंने स्वयं स्वामी सुन्दरानन्द को उत्तरकाशी के साहसी श्री कमलाराम नौटियाल और उनके अन्य साथियों के साथ गंगोत्तरी से बदरीनाथ आते हुए देखा है । इसी तरह से उत्तर-काशी के बहुत से साहसी पर्वतारोही बदरीनाथ जाते हैं । कुछ साहसी यात्री इसी मार्ग से केदारनाथ भी चले जाते हैं ।

गंगोत्तरी के प्रति हिन्दू जगत् में बड़ी भारी आस्था है इसीलिए इस पवित्र पावनी गंगा के दर्शन करने के लिए तथा इसके पवित्र जल में नहाकर पापों से मुक्ति पाने के लिए हर व्यक्ति सदा लालायिक रहता है । गंगा के स्मरण से ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मनुष्य अनेक पापों से छुटकारा पाकर स्वर्गलोक को प्राप्त कर लेता है। इसीलिए प्रत्येक हिन्दू गंगा के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करता है—

गंगा गंगेति यो ब्रूयात यो जनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोके सः गच्छति ।।

गंगा के सम्बन्ध में कथा यों कही जाती है कि प्राचीन समय में सगर नाम के राजा थे। उनकी दो पत्नियां थीं। उनकी सुमति नाम की पत्नी 60 हजार पुत्र और महारानी केशनी से असमंजस नाम का एक पुत्र प्राप्त हुआ था। एक बार अपने यश को स्थायी करने के लिए अश्वमेध यज्ञ करने का विचार उनके मन में आया। अश्वमेध का घोड़ा जब कपिल के आश्रम में पहुंचा तो इन्द्र ने छल से अश्वमेध के घोड़े को कपिल ऋषि के आश्रम के पास बांध दिया। ऋषि कपिल साधना में अपने तन-मन की सुधि खोये हुए थे। उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं था। जब अश्वमेध का घोड़ा वापस नहीं आया तो महाराजा सगर ने अपने 60 हजार पुत्रों को घोड़ा ढूंढ़ने के लिए भेजा। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते जब वे कपिल के आश्रम में पहुंचे तो उन्होंने वहां पर घोड़ा बंधा हुआ पाया। गुस्से के कारण उन्होंने मरे हुए सर्प को कपिल के गले में डाल दिया कि इस ढोंगी ऋषि के कारण हमारे यज्ञ में विघ्न पड़ा। कपिल ऋषि की तपस्या जैसे ही भंग हुई, सगर के 60 हजार पुत्रों को उन्होंने शाप देकर भष्म कर दिया। उनकी खोज में दूसरी रानी के पुत्र असमंजस गये। उसने ऋषि से क्षमा-याचना की और उन 60 हजार पुत्रों की मुक्ति-हेतु ऋषि से प्रार्थना की। ऋषि ने कहा कि जब स्वर्ग से गंगा आयेगी और उसके पवित्र जल से उनके भष्म हुए शरीरों पर गंगाजल पड़ेगा तभी उनकी मुक्ति होगी। सगर की तीसरी पीढ़ी में राजा भागीरथ हुए, वही स्वर्ग से विष्णु की आंख से निकलने वाली गंगा को धरती पर जैसे ही लाने लगे वैसे ही शिव जी ने सारी गंगा को अपनी जटा में समा लिया। फिर भागीरथ ने शिव जी की तपस्या की और तब कहीं जाकर भागीरथी के आगे-आगे चलकर अपने पुरखों (सगर के पुत्रों) का कल्याण करने में सफलता प्राप्त हुई। भगीरथ के महान् प्रयास से गंगा-पृथ्वी पर आयी। यों तो गंगा की दस प्रमुख धाराएं हैं परन्तु जिस प्रमुख धारा को लेकर भगीरथ चल पड़े थे उसी धारा को भागीरथी नाम दिया गया है।

बहुत से विद्वान यह मानते हैं कि स्वर्गभूमि के हिममंडित शिखरावलियों से पनढाल बनाकर गंगा की धारा को नहर के रूप में निकालकर महाराजा भगीरथ पृथ्वी पर लाये थे जिससे सम्पूर्ण भारतवर्ष का कल्याण हुआ। यह भी एक प्रकार का विचार है कि जल के बिना सगर राजा के 60 हजार पुत्र के समान प्रजा नष्ट हो गयी थी। फिर अपनी प्रजा के कल्याण के लिए स्वर्ग की गंगा को पृथ्वी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



पर लाकर भगीरथ ने जो महान प्रयास किया, उससे जन-कल्याण हुआ। गंगा की मुख्य धारा को भागीरथी के नाम से जाना गया है। वैसे देव प्रयाग में जल गंगा की सभी धाराएं मिल जाती हैं तभी वास्तव में उसे गंगा के रूप में माना जाता है और उसकी पूजा होती है।

गंगा के जल को अमृत माना गया है। हमारे वैदिक शास्त्रों में पवित्र जल को अम्भ कहा गया है। आत्रेय ब्राह्मण के अनुसार अम्भ, मारीच, भर और आप जल के चार मौलिक भेद बताये गये हैं। अम्भ सम्पूर्ण सूर्यमण्डल में फैला हुआ सबसे अधिक शुद्ध मौलिक तत्त्व माना गया है। इसी का दूसरा नाम अप है। अन्तरिक्ष में जो जल व्याप्त है, इसे मारीच तत्त्व कहते हैं जो बादलों के कारण पृथ्वी पर बरसकर नदी-नालों में प्राप्त होता है, उस जल को भर कहते हैं। पृथ्वी पर बहने वाले और पृथ्वी के अन्दर से निकलकर आने वाले जल को आप कहा जाता है। इसलिए अम्भ तत्त्व ही गंगा तत्त्व है।

पुराणों के अनुसार कथा कही गयी है कि वामन भगवान के चरण विक्षेप करने से इनके नखाग्र टूटने से ब्रह्मांड का भीतरी गोल टूट गया जिससे अम्भ (अप) की धारा फूट पड़ी जो शिव की जटाजूट में समा गयी। वही गंगा कहलायी। ऐसी पवित्र पावनी गंगा अमृतमयी है। इस सम्बन्ध में वर्षों पहले आगरा के एक अंग्रेज वैज्ञानिक मिस्टर हैनकेन ने गंगाजल का परीक्षण किया था और उसने यह पाया कि गंगा के जल में अपार अमृतमयी जीवनदायिनी शक्ति है। अभी कुछ दिन पहले रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा भी एक परीक्षण किया गया जिससे यह सिद्ध हुआ कि गंगा के जल से अधिक पवित्र और जीवनदायिनी शक्ति वाला दूसरा कोई जल इस पृथ्वी में नहीं है। ऐसी पवित्र पावनी गंगा के स्रोत से लेकर गोमुख, गंगोत्तरी आदि स्थानों में गंगा जल का पान करना, जल में नहाना प्रत्येक हिन्दू अपने जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य समझता है।

## केदारनाथ की ओर

गोमुख, गंगोत्तरी से केदारनाथ के लिए आने के लिए पुनः वही रास्ता अपनाना पड़ता है। जब तक मोटर सड़क नहीं थी तब तक यात्री गंगोत्तरी से केदारनाथ के लिए उसी रास्ते से लौटते हुए साठ किलोमीटर की दूरी पर मल्लाचट्टी पहुंचते थे। मल्लाचट्टी से सेरा की गाड, फूयालू, छुणा, चट्टी, बेलक, पंगराना, झालाचट्टी, बूढ़ा केदार, तोलाचट्टी, भैरव, चट्टी, भोंटा चट्टी, धुत्तू चट्टी, गवाण चट्टी, गोमाण्डा, दुफन्दा, पंवाली, मंगूचट्टी, त्रियुगीनारायण, साकम्बरी देवी, गौरीकुण्ड और रामपड़ाव-रामबाड़ा होते हुए केदारनाथ पहुंचते थे। यह रास्ता पहले के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


यात्रियों के लिए विकट अवश्य था परन्तु इस मार्ग से यात्री प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य का पान करते हुए आगे बढ़ते थे। इस पुराने रास्ते से जब यात्री जाते थे तब उन्हें माला चट्टी, सेरा की गाड, फूयालू चट्टी, पंगराना और झाला चट्टी में पहुंचने के बाद मारे क्षेत्र में कुश कल्याण की लुभावनी फूलों की घाटी के दर्शन होते थे। बेलाव घाटी, भागीरथी और बालगंगा के बीच का जल-विभाजक क्षेत्र, प्राकृतिक छटा के लिए अद्वितीय है। यहां पर टिकने के लिए उत्तम व्यवस्था है। कुश कल्याण (माला चट्टी) फूलों की घाटी इसी क्षेत्र में अपना अद्भुत सौन्दर्य बिखेरे हुए हैं। झाला चट्टी के बाद बूढ़ा केदार की ओर बढ़ते हैं। बालगंगा और धर्मगगा के संगम पर पांच केदारों में से एक केदार बूढ़ा केदार स्थित है। बूढ़ा केदार में केदारनाथ की शिला के समान ग्रेनाइट पत्थर की काली शिला है। यहां पर कुछ रेखाचित्र खुदे हुए हैं। शायद ये चित्र शिव और पाण्डवों के हैं। बूढ़ा केदार में धर्मशाला है। यहीं से मसरताल को जाने के लिए रास्ता है। यह एक बहुत रमणीक स्थान पर स्थित है जो बूढ़ा केदार से 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मसरताल से ही आगे सहस्रताल के लिए रास्ता जाता है। सहस्रताल की अनेक-झीलें अपने अद्भुत सौन्दर्य के लिए विख्यात हैं। ये झीलें अर्थात् ताल सौन्दर्य की दृष्टि से अद्भुत हैं। इनके किनारे जो प्रकृति की अद्भुत सुन्दरता है वह देखने ही लायक है। ऐसा सौन्दर्यवाला क्षेत्र अन्यत्र नहीं मिलता। गढ़वाल विकास मण्डल की ओर से मसरताल, सहस्रताल, खतलिंग आदि क्षेत्रों के लिए पैदल यात्राएं आयोजित की जाती हैं। प्रकृति-प्रेमियों एवं पर्वतारोहियों के लिए यह क्षेत्र अत्यन्त आकर्षण का केन्द्र है।

बूढ़ा केदार से त्रिगुणी नारायण पुराने रास्ते से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बूढ़ा केदार से तोलाचट्टी के बाद भैरव चट्टी आती है। यहां पर हनुमान जी का मन्दिर है। भैरव चट्टी के बाद धुत्तू चट्टी का रघुनाथजी का मन्दिर दर्शनीय है। धुत्तू चट्टी से गवाण चट्टी, गोमाण्डा और दुफन्दा की 9 कि०मी० की दूरी पार करने के बाद पंवाली चट्टी आ जाती है। धरती पर यदि स्वर्ग है, यदि कहीं मनुष्य को आकर्षित करने वाली प्रकृति है तो इसी पंवाली क्षेत्र की सुन्दरता में है।

पंवाली काण्ठा, गढ़वाल हिमालय का सबसे अद्भुत और स्वर्गीय आकर्षण का क्षेत्र है। यहां नाना प्रकार के फूलों से भरा हुआ क्षेत्र है। मखमली घास का मैदान है जिसमें हमेशा हरियाली छायी रहती है। पंवाली काण्ठा और पंवाली क्षेत्र फूलों की घाटियों के लिए जहां अपना सौन्दर्य बिखेरता है वहां इस क्षेत्र की भौगोलिक विशिष्टता भी महत्त्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में नाना प्रकार की औषधियों का भण्डार है। पंवाली काण्ठा की सुन्दरता को व्यक्त करते हुए पिलग्रिम नाम के एक अंग्रेज पर्यटक ने लिखा है कि "पंवाली काण्ठा की सुन्दरता ... संसार में अद्वितीय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


है। इससे अत्यधिक सुन्दरता वाला क्षेत्र धरती पर और कोई नहीं है।"

पंवाली कांठा से नीचे उतरते समय रास्ते में बर्फ मिलती है तथा बांज, बुरांस और रांशल के सुन्दर वनों से होकर रास्ता आगे जाता है। इसी पर्वतीय रास्ते को पार करते हुए यात्री त्रियुगी नारायण पहुंचते हैं। यह वही स्थान है जहां पर भगवान् शिवजी का पार्वतीजी के साथ विवाह हुआ था। जिस अग्नि की साक्षी में शिव का विवाह हुआ था, कहते हैं कि तब की प्रज्वलित अग्नि (धूनी) अभी नहीं बुझी है। यहां पर पर्वत शिखर के नीचे नारायण भगवान् का मन्दिर है। यहीं पर पुराना हवनकुण्ड है। मन्दिर के अन्दर जलस्रोत है, उसके पास नारायण भूदेवी तथा लक्ष्मी की मूर्तियां रखकर नारायण की नाभि से जलधारा निकलने की कल्पना की गयी है। यही जल ब्रह्मकुण्ड, रुद्रकुण्ड, विष्णुकुण्ड और सरस्वतीकुण्ड में पहुंचता है। इन कुण्डों में स्नान, मार्जन, आचमन और तर्पण किया जाता है। इस मन्दिर में अखण्ड धूनी जलती रहती है। यात्री हवनकुण्ड में समिधा डालते हैं। त्रियुगी-नारायण के आगे साकम्बरी देवी का मन्दिर और साकम्बरी देवी का तीर्थ है। इसको मन्सादेवी भी कहते हैं। यहां पर देवी को चीर चढ़ाया जाता है। आगे बढ़ने पर गौरीकुण्ड से पहले सिरकटा गणेश है जो पार्वती का वरदानी पुत्र कहा जाता है। गौरीकुण्ड में जब मां पार्वती नहाने के लिए चली गयीं तो वह द्वार पर इसी गणेश को बिठाकर आदेश दे गयी थीं कि कोई भी गृह-प्रवेश न कर सके। शिव को गृह-प्रवेश से गणेश ने रोका। क्रोध में इसी गणेश का सिर शिवजी ने काट दिया और बाद में हाथी का सिर लगाकर उसे जीवित किया था। आज भी यहां गणेश की प्रतिदिन पूजा होती हैं। गणेश की पूजा के बाद ही यात्री गौरीकुण्ड में पार्वती की आराधना करते हैं। इस पुराने रास्ते पर अब बहुत कम यात्री जाते हैं। अधिकांश यात्री मोटर मार्ग का अवलम्बन लेकर सीधे गौरीकुण्ड पहुंचकर केदारनाथ की ओर बढ़ते हैं।

## गंगोत्तरी से केदारनाथ

गगोत्तरी से केदारनाथ जाने के लिए मोटर के दो मार्ग हैं। पहला रास्ता गोमुख से गंगोत्तरी होते हुए उत्तरकाशी, उत्तरकाशी से टेहरी, घनसाली, चिरबटिया, तिलवाड़ा होकर केदारनाथ 183 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



| स्थान | समुद्र तल से ऊ० (मी०) | दूरी एक स्थान से दूसरे स्थान तक | दूरी कि० मी० |
|---|---|---|---|
| गंगोत्तरी | 3140 | — | — |
| भैरवघाटी | 2652 | 10 | 10 |
| लंका | 2652 | 3 | 13 |
| हर्सिल | 2591 | 13 | 26 |
| गंगनानी | 1982 | 31 | 57 |
| भटवाड़ी | 1677 | 14 | 71 |
| उत्तरकाशी | 1158 | 29 | 100 |
| उत्तरकाशी | 1158 | 29 | 100 |
| धरासू | 1036 | 28 | 128 |
| टेहरी | 770 | 37 | 165 |
| गडोलिया | 770 | 17 | 182 |
| घनसाली | 976 | 18 | 200 |
| चिरबटिया | 2134 | 31 | 231 |
| तिलवाड़ा | 671 | 42 | 273 |
| अगस्तमुनि | 762 | 10 | 283 |
| कुण्ड | 976 | 15 | 298 |
| गुप्तकाशी | 1479 | 5 | 303 |
| नालानारायणकुटी | — | 3 | 306 |
| फाटा | 1601 | 11 | 317 |
| रामपुर | 1646 | 9 | 326 |
| सोन प्रयाग | 1829 | 3 | 329 |
| गौरीकुण्ड | 1982 | 5 | 334 |
| रामबाड़ा | 2591 | 7 | 341) पैदल |
| गरुड़चट्टी | 3262 | 4 | 345) मार्ग |
| श्रीकेदारनाथ | 3583 | 3 | 348 |

दूसरा मोटर मार्ग का रास्ता उत्तरकाशी से टेहरी, श्रीनगर, रुद्र प्रयाग, तिलवाड़ा से केदार नाथ 178 कि० मी० की दूरी पर है। हम इस मार्ग का भी उल्लेख इसलिए कर रहे हैं कि गंगोत्तरी से केदारनाथ की यात्रा इस मार्ग से भी कर सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



| स्थान | समुद्रतल से ऊं० (मी०) | दूरी (एक स्थान से दूसरे स्थान तक) | दूरी कि० मी० | |
|---|---|---|---|---|
| गंगोत्तरी | 3140 | — | — | |
| भैरवघाटी | 2652 | 10 | 10 | |
| लंका | 2652 | 3 | 13 | |
| हर्सिल | 2591 | 13 | 26 | |
| गंगनानी | 1982 | 31 | 57 | |
| भटवाड़ी | 1677 | 14 | 71 | |
| उत्तरकाशी | 1158 | 29 | 100 | |
| धरासू | 1036 | 28 | 128 | |
| टेहरी | 770 | 37 | 165 | |
| गडोलिया | 770 | 17 | 182 | |
| मलेथा | 518 | 34 | 216 | |
| कीर्तिनगर | 520 | 3 | 219 | |
| श्रीनगर | 520 | 6 | 225 | |
| रुद्र प्रयाग | 610 | 34 | 259 | |
| तिलवाड़ा | 915 | 9 | 268 | |
| अगस्तमुनि | 762 | 10 | 278 | |
| कुण्ड | 966 | 15 | 298 | |
| गुप्तकाशी | 1479 | 5 | 269 | |
| नालानारायणकुटी | — | 3 | 301 | |
| फाटा | 1601 | 11 | 312 | |
| रामपुर | 1646 | 9 | 321 | |
| सोन प्रयाग | 1829 | 3 | 324 | |
| गौरीकुण्ड | 1982 | 5 | 329 | |
| रामबाड़ा | 2591 | 7 | 336] | पैदल |
| गरुड़चट्टी | 3262 | 4 | 340] | मार्ग |
| श्रीकेदारनाथ | 3583 | 3 | 343] | |

गंगोत्तरी से उसी मार्ग से जब हम लौटकर उत्तरकाशी पहुंचते हैं, कुछ यात्री इस अंचल की जानकारी भी कर सकते हैं, नाशकेता ताल जिसे नचिकेता ताल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


कहते हैं, उत्तरकाशी के समीप ही है, इसके दर्शन करना भी कुछ यात्री आवश्यक समझते हैं। उत्तरकाशी से भागीरथी का पुल पार कर बाड़ा गड्डी की सुन्दर क्यारियां जैसे छूटती हैं। रास्ता सघन चीड़ के वन से होकर चढ़ाई पार करने के बाद फूलगांव में पहुंच जाता है। फूलगांव से 8 किलोमीटर ऊपर पर्वत शृंखला के बीच साढ़े आठ हजार फीट की ऊंचाई पर नचिकेता ताल स्थित है। कठोपनिषद् का यम-नचिकेता सम्वाद इसी स्थल पर हुआ था। नचिकेता ताल शान्त और एकान्त स्थान पर बड़े भव्य और रमणीय स्थान पर स्थित है। इस ताल के किनारे तपस्वियों की कई कुटियां बनी हैं। नचिकेता ताल तक पहुंचने के लिए उत्तरकाशी से चौरंगीखाल तक मोटर मार्ग से पहुंचा जा सकता है और चौरंगीखाल से 3 कि० मी० की पगडण्डी का रास्ता तय कर यहां (इस ताल) तक पहुंचा जा सकता है। नचिकेता के पिता का नाम उद्दालक मुनि था। नचिकेता ताल से 12 किलो-मीट नीचे भागीरथी के किनारे आज भी उद्दालक मुनि नामक गांव है। कहते हैं कि यहां उद्दालक ऋषि का आश्रम था।

उत्तरकाशी से नचिकेता ताल और चौरंगीखाल की पर्वत शृंखला को पार कर जलकूर घाटी मिलती है। अंयारखाल की चट्टी की चोटी की दूसरी तरफ पहाड़ों का पण्डाल, बूढ़ा केदार, हटकुणी और पवाली का रमणीक क्षेत्र पड़ता है। उत्तरकाशी से एक रास्ता अब बीच ही बीच होकर भल्डियाना के पास उत्तरकाशी टेहरी मार्ग में मिल जाता है। इसी क्षेत्र में कृष्ण की लीला भूमि सीम-मुखीम है। इस क्षेत्र को भी देख लें। वैसे टेहरी से पैदल मार्ग प्रतापनगर होकर इस क्षेत्र में जाता है। प्रतापनगर से पैदल के रास्ते लम्बा, उतार और जंगल पड़ता है। वैसे उतराई और चढ़ाई के रास्ते में सुंदर वनों के मध्य से मार्ग जाता है। जैसा कि पहले कहा गया, उत्तरकाशी से होते हुए जलकूर की घाटी में जब हम पहुंचते हैं तो जलकुरी नाम की नदी को पार करते हुए सेरा नामक स्थान पर पहुंच जाते हैं। सेरा से मुखीम गांव जहां सीम की यात्रा होती है, लगभग साढ़े चार किलो-मीटर पड़ता है। रास्ते में हरे-भरे खेत और मार्ग का रमणीक क्षेत्र मन को आकर्षित कर लेता है। सेरा से मुखीम गांव जैसे ही पहुंचते हैं, वहां बड़ा भव्य गांव दिखाई देता है। इस गांव के बायीं तरफ कोखड़ी और दायीं ओर देना गांव है। मुखीम गांव के आसपास आरोड़ी-सीम, तलबला-सीम, गुप्त-सीम काली-सीम आदि सात सीम बतलाये जाते हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि इस गुप्त सीम में अनेक सिद्ध योगी और स्वयं योगेश्वर भगवान् कृष्ण निवास करते हैं। ऐसा विश्वास है कि कई श्रद्धालु एवं भाग्यशाली भक्तों को भगवान् आज भी दर्शन देते हैं। ये सभी सीम प्रकट रूप में नहीं मिलते हैं। खासकर गुप्त सीम तो गुप्त ही है। सीम शब्द का गढ़वाली में अर्थ यह है कि जहां जमीन के नीचे पानी है, वह 'सीम' कहलाता है। स्थान की दृष्टि से केदार क्षेत्र से सीम-मुखी का दृश्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मिलता-जुलता है। इन सीमों में और विशेषकर तलबला-सीम में आज भी जरा जमीन दब जाने से पानी ऊपर तलबल दिखाई देने लगता है। महाभारत कालीन इतिहास में यहां के सम्बन्ध में उनकी कथाएं कही जाती हैं। सीम की यात्रा को कृष्ण की यात्रा के रूप में मनाया जाता है। यही यहां की मुख्य यात्रा कही जाती है।

मुखीम और सीम टिहरी गढ़वाल की रमोली पट्टी के अन्तर्गत पड़ते हैं। यहां नागराजा की याथा होती है। गढ़वाल के जागर गीतों में कृष्ण को नागराजा के रूप में पूजा जाता है। यह नागराजा की पूजा भी एक प्रकार की विचित्र पूजा है। गढ़वाली जागरों के अनुसार नागराजा 9 भाई और 9 बहन रोतेली के नाम से जाने जाते हैं। ये वासुकी नाग और जिया ब्राह्मणी की सन्तानें कही जाती हैं। जिस प्रकार धर्म्याली माता कुन्ती के 5 पाण्डवों की विचित्र और अलौकिक ढंग से उत्पत्ति कही जाती है उसी प्रकार इन 9 भाई और 9 बहनों की उत्पत्ति को भी जिया माता ब्राह्मणी के सत् व सतीत्व के अलौकिक प्रभाव से उत्पन्न माना जाता है। गढ़वाल में आज भी इन दोनों (कुन्ती व जिया ब्राह्मणी) सती माताओं को सती माता के रूप में और उनकी सन्तानों को देवता के रूप में स्वीकार कर पूजा जाता है। रमोली पट्टी के अन्तर्गत नाग वासुकी परिवार के राजा थे। इन लोगों का पाण्डवों के जमाने में अस्तित्व माना जाता है क्योंकि इन नागभाइयों की एक बहन का पाण्डवों के एक भाई से विवाह होना बताया जाता है। यह बहुत बड़े बहादुर थे। सुर्जू कौंल इन्हीं बहादुरों में था जो भूटान की राजकुमारी को अपने प्राणों की बाजी लगाकर ब्याह करके लाया था। नाग वासुकी राजाओं के दीवान रमोला जाति के लोग थे, जिनमें गंगु रमोला बड़े प्रसिद्ध हुए हैं।

कहते हैं कि भगवान् कृष्ण ने गंगु रमोला से सीम मन्दिर बनाने के लिए कहा था। जब कृष्ण अपनी माता देवकी और पिता वसुदेव को लेकर बदरीनाथ की यात्रा पर जा रहे थे, तभी यह मन्दिर गंगु रमोला ने बनाया था। आज भी जो मन्दिर मुखीम गांव में स्थित है वह गंगु रमोला का बनाया हुआ माना जाता है। मन्दिर के भीतर वसुदेव की मूर्ति है जो पगड़ी पहने हुए है। इस मन्दिर में प्रधान मूर्ति कृष्ण की है, जो नाग रोतेलों के बड़े भाई के रूप में पूजी जाती है और उन्हें ही वास्तविक नाग राजा माना जाता है। नाग पूजा शुद्ध रूप में भगवान् कृष्ण की उपासना है। नागवंशी राजकुमारों की पूजा एक प्रकार से कृष्ण की ही पूजा है। नाग रौतेलों की जो कथा गढ़वाल के जागर गीतों में गायी जाती है उनमें अधिकांश रूप से कृष्ण की ही कीर्ति गाथाओं का वर्णन होता है। अन्य रौतेलों एवं रौतेलियों की कथा गौण रूप में आती है। मन्दिर के अन्दर भी कृष्ण की ही मूर्ति प्रमुख रूप से है जिसमें वसुदेव और गोपी आदि की मूर्तियां भी हैं। यह एक अलौकिक स्थान है। यहां पर [illegible] के दूर-दूर के लोग चांदी के नाग बनाकर नाग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



की पूजा करने आते हैं। बहुत से यात्री जो प्रकृति-प्रेमी होते हैं और जो गढ़वाल की अलौकिक शक्ति के दर्शन करना चाहते हैं वे सीम-मुखीम के दर्शन कर कृष्ण की पवित्र धरती के दर्शन करना भी अपना प्रमुख कार्य समझते हैं। मुखीम गांव से लगभग साढ़े चार किलोमीटर की चढ़ाई पार करने पर काला सीम क्षेत्र मिलता है। यहां से जब हम पीछे की ओर मुड़कर देखते हैं तो हमें प्रताप नगर क्षेत्र दिखायी देता है। काला सीम से बहुत दूर तक चीड़, बांज तथा थुनेर का घना जंगल मिलता है। अखरोट के वृक्षों की भी अधिकता है। पैदल रास्ते से काला सीम से आगे लम्बी उतार और घने जंगल के रास्ते को पार करते हुए 13-14 किलोमीटर की दूरी पर धनारी थाती नाम का गांव मिलता है। इसी रास्ते पर आगे बढ़ने पर 5-6 किलोमीटर की दूरी पर चौरस भूमि का क्षेत्र मिलता है। ऐसे ही पर्वतीय मार्ग को पार करते हुए डुण्डा नामक स्थान पर इसका मार्ग मिल जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि टेहरी से पैदल मार्ग को पार करते हुए पुराने रास्ते से डुण्डा होते हुए उत्तरकाशी तक पहुंचा जा सकता था और अब मोटर मार्ग बन जाने के कारण से उत्तरकाशी से भी इसी क्षेत्र के पास रास्ता पार करते हुए टेहरी पहुंचा जा सकता है।

कृष्ण और पाण्डवों का पर्वतीय क्षेत्र में बहुत अधिक महत्त्व है। गढ़वाल के इस क्षेत्र में पाण्डवों को देवता के रूप में कृष्ण के समान पूजा जाता है और पाण्डव नृत्य किया जाता है। इसमें बहुत से पर्यटक तथा संस्कृति के उपासक इस क्षेत्र की कला को समझने के लिए पाण्डव नृत्य के अलौकिक प्रदर्शन को देखना नहीं भूलते। वैसे दीपावली के समय प्रायः गढ़वाल क्षेत्र में जहां धूम-धाम से दीपावली मनायी जाती है वहां रात भर पाण्डव नृत्य भी किया जाता है। बसन्त पंचमी से लेकर विषुवत संक्रान्ति तक गढ़वाल मण्डल के प्रायः हर गांव में रात्रि के समय अनेक प्रकार के नृत्य और गीतों का आयोजन किया जाता है। कला और धर्म के विशेषज्ञ, पर्यटक ऐसे नृत्यों को देखना भी अपने कार्यक्रम का एक मुख्य अंग बनाते हैं।

उत्तराकाशी से टेहरी, घनसाली के रास्ते जाने पर हमें मार्ग में अत्यन्त प्राकृतिक दृश्यों के दर्शन होते हैं। टेहरी में जैसा कि हम पहले कह चुके हैं। उत्तरकाशी से आने पर जो यात्री पहले नहीं रुकते वे टेहरी के गणेश प्रयाग में आकर नहाते हैं और यहां पर बदरीनाथ आदि मन्दिर के दर्शन करते हैं। स्वामी राम की समाधि स्थल को भी पर्यटक देखना नहीं भूलते। टेहरी में ही सिमलासू नाम के उस स्थल को देखना सभी उपयुक्त समझते हैं जहां स्वामी राम रहे थे और यहीं उन्होंने भिलंगना में जलसमाधि ली थी। गंगोत्तरी से टेहरी 165 किलोमीटर और ऋषिकेश से 83 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गडोलिया टेहरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



से 17 किलो मीटर की दूरी पर है यहीं से एक रास्ता श्रीनगर को जाता है और दूसरा रास्ता घनसाली की ओर बढ़ जाता है ।

## घनसाली

गडोलिया से 18 किलोमीटर की दूरी पर घनसाली एक नया उभरता हुआ नगर है। यहीं से एक रास्ता चिरबटिया होकर तिलवाड़ा में रुद्र प्रयाग से आने वाले दूसरे मार्ग में मिल जाता है। भिलंगना नदी के किनारे घनसाली अद्‌भुत सौन्दर्यपूर्ण स्थान है, यहीं से खतलिंग ग्लेसियर, मसरताल और सहस्रताल का रास्ता जाता है। पर्वतारोही एवं प्रकृति-प्रेमी खतलिंग ग्लेसियर और मसरताल सहस्रताल की ओर यहीं से जाते हैं। गढ़वाल विकास निगम की ओर से पैदल यात्रा (ट्रैकिंग) कार्यक्रम इन स्थलों के लिए संचालित किये जाते हैं।

| स्थान | समुद्रतल से ऊंचाई मीटर | दूरी (कि०मीटर) |
|---|---|---|
| टेहरी | 770 | — |
| घनसाली | 976 | 31 मीटर |
| धुत्तू | 1524 | 30 पैदल |
| रीह | 2134 | 10 पैदल |
| गांगी | 2591 | 10 पैदल |
| कल्याणी | 2683 | 5 पैदल |
| बिरोदा | 2744 | 2 पैदल |
| खरसोली | 2896 | 7-1/2 पैदल |
| पचारी | 2896 | 1/2 पैदल |
| नौमुठी | 2957 | 1-1/2 पैदल |
| भेलवागी | 3110 | 1-1/2 पैदल |
| भुमका | 3201 | 1 पैदल गुफाएं हैं |
| तामाकुण्ड | 3415 | 3 पैदल गुफाएं हैं |
| खतलिंग | 3717 | 3 पैदल गुफाएं हैं |

घनसाली से धुत्तू तक मोटर मार्ग से पहुंचा जा सकता है। धुत्तू से आगे पैदल ही जाना पड़ता है। मार्ग अत्यन्त रमणीय फूलों से भरा हुआ है। रास्ते में अनेक नदियां तथा झरने दिखायी देते हैं। गांगी इस मार्ग का अन्तिम गांव है। अन्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



गांवों से गांगी इतनी दूर स्थित है जिसके कारण इस गांव का सम्बन्ध अन्य गांवों से बिलकुल कटा हुआ-सा है। इसीलिए ये लोग अपने ही ढंग का जीवन जीते हैं। एक तरह से बाहरी दुनिया से इनका कोई सम्पर्क नहीं रहता इसीलिए ये अपने ही गांव में अपने सीमित परिवारों में शादी-विवाह करने के लिए विवश रहते हैं।

खतलिंग ग्लेसियर के साथ जोगिन और फटिंग आदि ग्लेसियर भी मिले हुए हैं। इन्हीं के बीच में एक बड़ा तालाब है जिसको भील सरोवर कहते हैं। सामने जो दूर तक फैला हुआ मैदान है, उसे कुनयाली बुग्याल कहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में कुनयाली बुग्याल विभिन्न प्रकार के फूलों से लद जाता है। यह क्षेत्र अत्यन्त खूबसूरत और असंख्य प्रकार के फूलों का घर है, जिसमें अनेक प्रकार की औषधियों का भण्डार मिलता है। खतलिंग ग्लेसियर के ऊपर जो पर्वत शृंखलाएं हैं बर्फ से सदैव ढंकी रहती हैं। इनमें जोगिन की हिम पहाड़ियां (6466 मीटर) स्फटिक, पुष्टवान 6005 मीटर, कीर्ति स्तम्भ 6407 मीटर, वर्तेकांठा (6579 मीटर) और मेरु पर्वत की शृंखलाएं हैं। इन पर्वत शृंखलाओं में सफेद संगमरमर का पत्थर बहुतायत से मिलता है और बहुत दूर से अपनी चमक के कारण सबको आकर्षित करता है। प्रकृति-प्रेमी पर्वतारोही, खतलिंग ग्लेसियर के अनोखे भू-भाग में जाना कभी नहीं भूलते। घनसाली से पंवाली बुग्याल के लिए भी यहीं से एक अन्य रास्ता है। प्रकृति-प्रेमी अपना अधिक-से-अधिक समय पंवाली के अद्भुत सौन्दर्य वाले स्थानों में व्यतीत करते हैं। वहां पर्वतारोहियों के लिए खतलिंग का भी एक विशेष आकर्षण रहता है।

## चिरबटिया

घनसाली से 31 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ की चोटी पर चिरबटिया नामक अत्यन्त रमणीक स्थल स्थित है। इस स्थान से हिमालय का अद्भुत दृश्य दिखायी देने लगता है। स्वयं चिरबटिया एक पहाड़ की चोटी पर एक ऐसे स्थान पर स्थित है जिसका सौन्दर्य अपने आप में अद्भुत है।

## तिलबाड़ा

घनसाली से मोटर मार्ग से जैसे चढ़ाई पर चढ़ते हैं, ठीक उसी तरह से चिरबटिया से लगातार तिलवाड़ा तक मार्ग उतराई का है। मन्दाकिनी नदी के किनारे पर स्थित तिलवाड़ा एक सुन्दर नगर है। चिरबटिया से इसकी दूरी 42 किलोमीटर है। यहां पर केदारनाथ जाने के लिए ऋषिकेश, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग से होकर आने वाला मार्ग मिल जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गंगोत्तरी से केदारनाथ जाने के लिए जो दूसरा मार्ग है, वह भी टेहरी होकर

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



ही जाता है। टेहरी से गडोलिया नामक स्थान से रास्ता श्रीनगर की ओर मुड़ जाता है। सबसे पहले यह रास्ता गडोलिया से 34 किलोमीटर की दूरी पर मलेथा नाम से स्थान पर ऋषिकेश, श्रीनगर वाले रास्ते पर मिलता है। गढ़वाल के इतिहास में मलेथा का भी अपना एक विशिष्ट स्थान है। यह मलेथा वही ग्राम है जहां पर गढ़वाल के महान यशस्वी सेनापति माधवसिंह (माधोसिंह) भण्डारी का जन्म हुआ था। माधोसिंह भण्डारी केवल एक योग्य सेनापति ही नहीं था बल्कि एक कुशल इंजीनियर भी था। आज भी मलेथा की गूल उसकी यश-गाथा गा रहा है। अकेले माधोसिंह भण्डारी ने पहाड़ को काटकर अपने गांव में इस गूल का निर्माण किया था। कहते हैं कि इस कार्य के निमित्त उसने अपने पुत्र की बलि तक दे दी थी। इसी मलेथा गांव के पास डी० जी० बी० आर० के मुख्य मार्ग से टेहरी वाले मार्ग का मिलान होता है। मलेथा गांव से तीन किलोमीटर आगे महाराज कीर्ति शाह का कीर्तिनगर है। कीर्तिनगर के पास अलकनन्दा के पुल को पार करने के बाद गढ़वाल की प्राचीन राजधानी और आज का उभरता हुआ महत्त्वपूर्ण नगर, श्रीनगर में हम प्रवेश करते हैं।

यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी एवं उत्तरकाशी से होते हुए जब हम केदारनाथ और बदरीनाथ की ओर जा रहे हैं तो यह बात भी हमारी दृष्टि में है कि बहुत से यात्री इन दोनों धामों की यात्रा नहीं करते बल्कि ऋषिकेश से सीधे केदार-बदरी की यात्रा करते हैं। अत: इसलिए उपयुक्त यही समझते हैं कि ऋषिकेश से श्रीनगर तक का पहले यात्रा का वर्णन कर लें।

## ऋषिकेश से केदारनाथ

जो यात्री यमुनोत्तरी अथवा गंगोत्तरी की यात्रा नहीं करते वे सीधे हरिद्वार या ऋषिकेश से केदारनाथ-बदरीनाथ की यात्रा करते हैं। ऋषिकेश से केदारनाथ का मार्ग अत्यन्त सुगम है। ऋशिकेश से केदारनाथ की दूरी 223 किलोमीटर है। मार्ग में पड़ने वाले स्थानों का विवरण अगले पृष्ठ की तालिका में दिया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



| स्थान | समुद्रतल स ऊंचाई (मी०) | दूरी (कि० मी०) एक स्थान से दूसरे स्थान तक | दूरी (कि० मी०) |
|---|---|---|---|
| ऋषिकेश | 340 | — | — |
| देव प्रयाग | 472 | 70 | 70 |
| श्रीनगर | 579 | 35 | 105 |
| रुद्र प्रयाग | 610 | 34 | 139 |
| तिलवाड़ा | 671 | 9 | 148 |
| अगस्तमुनि | 762 | 10 | 158 |
| कुण्ड | 976 | 15 | 173 |
| गुप्तकाशी | 1479 | 5 | 178 |
| नालानारायणकुटी | —— | 3 | 181 |
| फाटा | 1601 | 11 | 192 |
| रामपुर | 1646 | 9 | 201 |
| सोन प्रयाग | 1829 | 3 | 204 |
| गौरीकुण्ड | 1982 | 5 | 209 |
| रामबाड़ा | 2591 | 7 | 216 |
| गरुड़चट्टी | 3262 | 4 | 220 |
| श्रीकेदारनाथ | 3583 | 3 | 223 |

जब मोटर मार्ग नहीं था तो धार्मिक यात्री ऋषिकेश से लक्ष्मण झूला पारकर पौड़ी गढ़वाल की सीमा में पड़ने वाले मार्ग से पैदल यात्रा करते थे। 4-6 किलोमीटर की दूरी पर और कहीं-कहीं कम दूरी पर भी चट्टियां मिलती थीं। चट्टियों में रहने के लिए मुफ्त व्यवस्था होती थी। यात्री दुकानदारों से आटा, चावल आदि लेकर अपने लिए स्वयं खाना बना लेते थे। खाना पकाने के लिए बर्तन भी प्रायः चट्टियों में दुकानदारों से मिल जाते थे। बड़े प्रेम से यात्री एक चट्टी से दूसरी चट्टी जाकर अपनी यात्रा सम्पन्न करते थे। रात के समय चट्टियों में बाहर या दुकान के भीतर जमीन में चटाई बिछाकर शयन कर लेते थे। चट्टियां विशेषकर ऐसे स्थानों पर होती थीं जहां पर या तो दो नदियों का संगम होता था अथवा पानी की विशेष उपलब्धता होती थी। प्रायः इन सभी चट्टियों में काली कमली वाले की धर्मशालाएं मिलती थीं। ऋषिकेश से गंगा के दूसरे किनारे मोटर मार्ग से आज भी पैदल रास्ते को देखा जा सकता है। इसी पैदल मार्ग से यात्री केदार-बदरी की यात्रा करते थे। मोटर यातायात के कारण अब यह चट्टियां नष्ट-प्राय हो गयी हैं। फिर भी यात्रियों की जानकारी के लिए पुरानी चट्टियों का विवरण देना उपयुक्त समझते हैं। ऋषिकेश से गरुड़ चट्टी, फूल चट्टी, गूलर चट्टी, महादेव सैण चट्टी, नाई मोहन चट्टी, बिजली कुण्ड, बन्दर भेल, महादेव चट्टी, कांडी और सेमल चट्टी होकर व्यास घाट चट्टी में पहुंचते थे। व्यास घाट चट्टी के पास नावालिका (नयार) नदी गंगा में मिलती है। यहां पर वेद व्यास ने तपस्या की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



थी। व्यास घाट में वेद व्यास का मन्दिर है। व्यास चट्टी के आगे छालुड़ी, उमरासू और सौड़ चट्टी के बाद अलकनन्दा और भागीरथी के संगम पर देव-प्रयाग चट्टी आती है। देव प्रयाग में गंगा स्नान करने के बाद यात्री बड़े मनोयोग से अपने पितरों का तर्पण करते थे। देव प्रयाग से आगे सीता कुटी, बिदा कुटी, रानीबाग, बिल्केदार, श्रीनगर, भट्टी सेरा छांतीखाल रुद्र प्रयाग तक की चट्टियों में रहकर यात्री यात्रा करते थे। रुद्र प्रयाग से एक मार्ग केदारनाथ को जाता है और एक मार्ग बदरीनाथ को। अलकनन्दा की ओर बढ़ने वाला रास्ता बदरीनाथ और मन्दाकनी की ओर आने वाला रास्ता केदारनाथ को जाता है। पहले रुद्र प्रयाग से केदारनाथ की यात्रा करना धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बताया गया है। इसलिए यात्री रुद्र प्रयाग से छतौलीमठ चट्टी, रामपुर, अगस्तमुनि, छोटानारायण, सौड़ी, चन्द्रापुरी, भीरी कुण्ड, गुप्तकाशी, नालानारायण कोटि, मैखण्डा, फाटारामपुर, सोमद्वार (सोमप्रयाग) गौरी कुण्ड, चिरपटिया, भैरों, भीम सिला, रामबाड़ा होते हुए केदारनाथ पहुंचते थे। छतौली में अलस तरंगणी नदी मन्दाकिनी में मिलती है। इस संगम को सूर्य प्रयाग कहा जाता है। इस चट्टियों में यात्रा करने के बाद यात्री बदरीनाथ की यात्रा करने के लिए उसी मार्ग से वापस आते थे और नाला चट्टी से ऊखीमठ होकर गणेश चट्टी पोथीवास, दोगलभिट्टा, वानिया कुण्ड, चोपता, तुंगनाथ, जंगल चट्टी, पांगरवासा, मण्डल और गोपेश्वर होते हुए चमोली में रुद्र से आने वाले रास्ते में अन्य यात्रियों से मिल जाते थे।

जो यात्री केदारनाथ नहीं जाते थे, रुद्र प्रयाग से अलकनन्दा के किनारे-किनारे सुमेरपुर, शिवानन्दी, नगरासू, कमेड़ा गोचर, चटवा-पीपल, कर्ण प्रयाग, उमट्टा, लंगासू, सोनला, नंद प्रयाग और मैंठाणा चट्टियों में विश्राम करते हुए चमोली में केदारनाथ के यात्रियों को मिल जाते थे। चमोली से आगे रास्ता दोनों तरफ से आने वाले यात्रियों का एक ही हो जाता था। यात्री मठ, छिनका, सियासैंण, हाट, पीपलकोटी, गरुड़ गंगा, टंगणी, पाताल गंगा, गुलाबकोटी, हेलंग, खनेटी, झड़कूला, जोशीमठ, विष्णु प्रयाग, घाट, पाण्डु केश्वर, लामबगड़, हनुमानचट्टी आदि चट्टियों से होकर बदरीनाथ पहुंचते थे। अब ये चट्टियां इतिहास की बातें हो गयी हैं। परन्तु इन चट्टियों में रहकर जिस प्रकार से यात्रियों ने असली यात्रा का आनन्द लिया इससे बढ़कर कोई और आनन्द दूसरा नहीं कहा जा सकता है। वास्तविक यात्रा का आनन्द भी इन्हीं चट्टियों में रहकर लिया जा सकता है।

इस समय मोटर यातायात सुलभ हो गया है इसलिये ऋषिकेश से जब हम लोग आगे बढ़ते हैं तो मुनि की रेती से बायीं तरफ का रास्ता जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी की ओर जाता है और दाहिने तरफ का रास्ता केदार-बदरी की ओर मुड़ जाता है। गंगा के किनारे-किनारे हमारी बस, कार या टैक्सी जैसे ही नटमण्डूवाल के पास पहुंचती है, हमारी यात्रा केदार-बदरी की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



ओर प्रारम्भ हो जाती है। लक्ष्मण-झूले से देव प्रयाग की ओर जब हम बढ़ने लगते हैं तो भागीरथी और हिंवल नदी के संगम पर 'ब्रह्मपुरी' और शिवपुरी के छोटे-छोटे मन्दिर मिलते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इस ब्रह्मपुरी में स्वामी रामतीर्थ ने कुछ समय बिताया था। लक्ष्मण झूला से लगभग 20 किलो मीटर की दूरी पर हिंवल नदी में चट्टानें गिर जाने से एक सरोवर बन गया था जिसको वशिष्ठ सरोवर के नाम से जाना जाता है। इसी क्षेत्र में गूलर नदी के पुल को लांघने से पहले गंगा के किनारे वशिष्ठ गुफा है। कहते हैं कि यहां पर वशिष्ठ ने अपनी पत्नी के साथ साधना की थी। इस गुफा में स्वामी पुरुषोत्तमानन्द ने भी बहुत दिनों तक साधना की थी। अब यहां पर एक मन्दिर बनाया गया है। वशिष्ठ गुफा से लगभग 10 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद घने वृक्षों के मध्य एक रमणीक स्थान व्यासी आता है। इस स्थान पर यात्री जलपान आदि कर आगे बढ़ते हैं। व्यासी के रमणीय क्षेत्र से जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ती है, धीरे-धीरे मार्ग पर्वत की चोटी की ओर बढ़ने लगता है और साकिनी धार नामक स्थान पर पहुंचकर पुनः मार्ग देव प्रयाग की ओर उतराई में शुरू हो जाता है।

**देव प्रयाग**

ऋषिकेश से 71 किलोमीटर की दूरी पर स्थित उत्तराखण्ड के पांच प्रयागों में देव प्रयाग प्रमुख प्रयाग है। यहीं पर अलकनन्दा और भागीरथी का संगम होता है और यहीं से भागीरथी और अलकनन्दा का सम्मिलित नाम 'गंगा' पड़ जाता है।

देव प्रयाग शिला के ऊपर बना हुआ नगर है। पहाड़ की चट्टानों को काट-काटकर यहां पर तिमंजिले-चौमंजिले मकान बनाये गये हैं। बदरीनाथ के तीर्थ पुरोहित पण्डित यहीं रहते हैं। यह पुरोहित बोलचाल की भाषा में पण्डे कहलाते हैं। बदरीनाथ के कपाट जब बन्द होते हैं तो ये पुरोहित मैदानों में जाकर अपने यजमानों को यात्रा के लिए प्रेरित करते हैं।

देव प्रयाग दशरथाचल, गृध्र और नरसिंह नामक पहाड़ों के बीच बसा हुआ है। तीनों पहाड़ों की ढलानों पर इस नगर का अस्तित्व है। दशरथाचल पर्वत के ढलान पर ऋषिकेश से देव प्रयाग वाली सड़क आयी है। यह पर्वत गंगा और भागीरथी के दायें तट पर है। इसी पर्वत से एक नदी आती है जिसे शान्ता नदी कहते हैं। भागीरथी के बायें किनारे पर और अलकनन्दा के दायें किनारे पर गृध्र पर्वत है जो इन दोनों नदियों के बीच में पड़ता है। देव प्रयाग की मुख्य आबादी दो पहाड़ों की तलहटी में है। तीसरा पहाड़ नरसिंह पर्वत है जो अलकनन्दा और गंगा के बायें किनारे पर स्थित है। इस पहाड़ की ढलान पर बाह बाजार स्थित है। बाह बाजार पौढ़ी गढ़वाल जिले में है और शेष दो पर्वत टेहरी गढ़वाल जिले स्थित में हैं। देव प्रयाग के ये तीनों भाग झूला पुलों से जुड़े गये हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## देव प्रयाग का महात्म्य

केदार खण्ड पुराण के अनुसार देव प्रयाग का अत्यधिक महत्त्व माना गया है। देव प्रयाग में भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ निवास करते थे।

देव प्रयाग के सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा कही जाती है कि यहां पर देव शर्मा नामक एक ब्राह्मण ने सतयुग में भगवान् विष्णु की कठोर तपस्या की थी। भगवान् विष्णु ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिया था। और देव शर्मा से कहा था कि अपनी इच्छा से कोई वर मांगो। देव शर्मा ने भगवान् विष्णु से कहा कि मेरी एक मात्र प्रार्थना है कि आप सदा यहां पर निवास करें। विष्णु भगवान् प्रसन्न होकर कहा था, "हे देव शर्मा! मैं दशरथ के पुत्र के रूप में त्रेता युग में अवतार लूंगा और रावण, कुम्भकरण आदि दैत्यों का वध करूंगा। अयोध्या में कुछ समय राज्य करने के बाद तपस्या के लिए इसी क्षेत्र में आ जाऊंगा। उस समय तुमको मेरे दर्शन प्राप्त होंगे और मैं निरन्तर यहां निवास करूंगा।"

ऐसा कहा जाता है कि त्रेता युग में भगवान् विष्णु अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार राम के रूप में देव प्रयाग आए। देव शर्मा ने उन्हें पहचान लिया और वे भक्ति भाव से राम, सीता और लक्ष्मण की आराधना करने लगे। देव शर्मा की महान तपस्या के कारण ही उस समय से इस नगर का नाम 'देव प्रयाग' हो गया। इससे पहले इस क्षेत्र को सुदर्शन क्षेत्र कहा जाता था और इसके परिणामस्वरूप देव प्रयाग में जब संकल्प किया जाता है तो देव प्रयाग के ब्राह्मणों अर्थात् पण्डों द्वारा सुदर्शन क्षेत्र का उल्लेख संकल्प में इसलिए विशेष रूप से किया जाता है।

## देव प्रयाग के पवित्र स्थल

पूरब दिशा से आने वाली अलकनन्दा और उत्तर दिशा से दौड़ती हुई भागीरथी के मिलन-स्थल को देव प्रयाग नाम मिला है। इन दोनों नदियों के मिलने के बाद ही गंगा वास्तविक गंगा नाम पाती है। दोनों नदियों के कटाव से यहां पर दो कुण्ड बन गए हैं। अलकनन्दा से बनने वाला कुण्ड वशिष्ठ कुण्ड और भागीरथी की ओर से जो कुण्ड बना है, उसे ब्रह्म कुण्ड कहते हैं। ब्रह्म कुण्ड में साढ़े तैंतीस करोड़ देवताओं का निवास माना जाता है। इसलिए ब्रह्म कुण्ड में श्राद्ध, पिण्ड-दान आदि कर्म कराए जाते हैं। पुराणों में कहा गया है कि ब्रह्मा ने इसी स्थल पर तपस्या कर सृष्टि की रचना करने की महान शक्ति को प्राप्त किया था। संगम से कुछ ऊपर की ओर दो गुफाएं हैं। बायीं ओर की गुफा वशिष्ठ और दायीं ओर की गुफा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



शिव नाम से जानी जाती है।

भागीरथी के उत्तर वाले तीर्थ संगम से भागीरथी के उत्तरी किनारे पर अनेक तीर्थों की गणना की गयी है जिनका वर्णन पुराणों में किया गया है।

### शिव तीर्थ

भागीरथी में जहां पर शान्ता नदी मिलती है, उस स्थल को शिव तीर्थ कहा गया है। पौराणिक कथा के अनुसार कहा जाता है कि दशरथ की पुत्री शान्ता ने इसी स्थल पर ऋषिश्रृंग मुनि से विवाह करने के लिए तप किया था।

### बेताल कुण्ड

शिव तीर्थ से लगभग 3 किलोमीटर उत्तर की ओर भागीरथी के दाएं किनारे पर ऊपर बढ़ने पर गांव के नीचे जहां एक नदी भागीरथी से मिलती है, वहीं पर विशाल शिला बेताल शिला के दर्शन होते हैं। इस शिला का गंगाजल बेताल जल कहलाता है। ऐसा कहा गया है पुराने समय में उद्दालक मुनि दुराचारी ब्राह्मण अष्टावक्रमुनि के शाप से बेताल हो गया था। ऋषि की आज्ञा पाकर उसने उसी स्थान को बेताल कुण्ड का उद्दालक तीर्थ कहा जाता है।

### सूर्य कुण्ड

बेताल कुण्ड से डेढ़ किलोमीटर उत्तर की ओर बढ़ने पर सूर्य कुण्ड मिलता है। प्राचीन समय में मेघातिथि नामक एक ब्राह्मण ने यहां पर सूर्य की उपासना की थी। आज भी ऐसी मान्यता है कि इस कुण्ड में स्नान करने से कुष्ठ रोगियों का कुष्ठ दूर हो जाता है।

संगम के ऊपर भागीरथी के दक्षिणी किनारे पर भी कुछ तीर्थ हैं उनमें निम्न तीर्थ विशेष रूप से हैं—

### वाराह तीर्थ

संगम से कुछ ही दूरी पर एक विशाल शिला है। कहते हैं कि सतयुग में इस स्थल पर सर्वबन्धु नामक ब्राह्मण ने वाराह रूप धारी विष्णु की घोर तपस्या की थी। सर्वबन्धु से प्रसन्न होकर विष्णु तब से यहां शिला रूप में निवास करने लगे।

### ऋषिश्रृंग कुण्ड

शिव तीर्थ के बिलकुल सामने ऋषिश्रृंग कुण्ड है। इस स्थल पर ऋषिश्रृंग ने तपस्या की थी और ठीक उसी के सामने नदी के दूसरे किनारे पर शान्ता ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



ऋष्यश्रृंग मुनि को पति के रूप में पाने के लिए तपस्या स्थल चुना था।

**सूर्यकुण्ड**

भागीरथी के दाहिने किनारे पर ऋषिश्रृंग कुण्ड से कुछ ही आगे एक कटाव सा नजर आता है। यहां तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। पौराणिक कथा है कि भगवान् सूर्य ने यहां पर तपस्या की थी। यह स्थान आज सूर्य तीर्थ और सूर्य कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है।

**पौष्पमाल तीर्थ**

सूर्य कुण्ड से कुछ ही आगे बढ़ने पर मोटर के पुल के कुछ ही कदम आगे बढ़ने पर पौष्पमाल तीर्थ के दर्शन होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इसी स्थान पर विश्वामित्र का तप भंग करने के लिए पौष्पमाला नामक अप्सरा ने अनेक प्रयत्न किये थे। ऋषि को जब क्रोध आया तो उन्होंने अपने शाप से उसको मकरी बना दिया। भगवान् राम ने मकरी का वध करके त्रेता युग में इसे शाप से मुक्त किया था।

**इन्द्र द्युम्न**

पौष्पमाल तीर्थ से कुछ ही आगे बढ़ने पर इन्द्रद्युम्न तीर्थ के दर्शन होते हैं। यह वही स्थल है जहां सतयुग में उत्कल के राजा इन्द्रद्युम्न ने भगवान् विष्णु की आराधना की थी।

**विल्व तीर्थ**

इन्द्रद्युम्न तीर्थ से डेढ़ किलोमीटर आगे विल्व तीर्थ है। यहां पर विल्व का बहुत सुन्दर वृक्ष है जिसके पत्ते सुनहरे हैं और सुनहरे रंग के ही फल इस वृक्ष पर आते हैं। वृक्ष के नीचे कपिलवर्ण शिवलिंग है। यह शिव आराधकों का प्रमुख तीर्थ है जहां शिवरात्रि के दिन बहुत बड़ा मेला लगता है। अलकनन्दा के किनारे भी तण्डेश्वर नामक एक सुन्दर कुण्ड है जो अलकनन्दा के दाहिने किनारे पर ठीक सामने है। इसका भी बहुत महत्त्व है।

संगम के नीचे भी कुछ महत्त्वपूर्ण तीर्थ हैं जो गंगा से नीचे व्यास घाट तक अपना महत्त्व स्थापित किए हुए हैं। इन तीर्थों में राम कुण्ड, नारसिंह कुण्ड, लिंग-भद्राश्रम, वागीश्वरी पीठ, भूमिदेव गुहा और शीलवती ह्रद नाम के तीर्थ प्रमुख हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## देव प्रयाग के मन्दिर

देवताओं की पवित्र भूमि देव प्रयाग में सबसे प्रमुख मन्दिर रंगनाथजी का मन्दिर है। ऐसा कहा जाता है कि मूल मन्दिर की स्थापना देव शर्मा नामक ब्राह्मण ने की थी। वर्तमान मन्दिर का जो रूप है उसको आदि शंकराचार्य द्वारा निर्मित बताया जाता है। मन्दिर के पीछे एक गुफा है जिसको आज भी शंकराचार्य के नाम से शंकराचार्य गुफा कहते हैं। रघुनाथजी का मन्दिर अति प्राचीन है। इसके प्रमाण में मन्दिर के बीच की शिलाओं पर तीर्थ यात्रियों के नाम खरोष्ठी लिपि में अंकित हैं। विद्वान इन्हें दूसरी-तीसरी शताब्दी का मानते हैं। मन्दिर में और भी शिलालेख हैं जिससे मन्दिर की प्राचीनता स्थापित होती है। 1803 में भूकम्प के कारण सभी कुछ नष्ट-भ्रष्ट हुआ था। दौलतराव सिन्धिया ने मन्दिर को पुनः ठीक करवाया था। लम्बे और ऊंचे चबूतरे पर यह मन्दिर अत्यन्त भव्य दिखाई देता है। मन्दिर में भगवान् विष्णु की काली शिला की विशाल मूर्ति है। मन्दिर में प्रतिदिन पूजा होती रहती है। इसके अतिरिक्त वसन्त पंचमी, बैसाखी, रामनवमी और मकरसक्रान्ति को यहां पर बहुत बड़ मेले लगते हैं। मन्दिर के आसपास अनेक मूर्तियां और मन्दिर हैं। इनमें गरुड़मूर्ति, हनुमान मन्दिर, सुन्दर गुफा, वामन गुफा और काल भैरो मन्दिर अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

### भरत मन्दिर

रघुनाथ मन्दिर के उत्तर में भरतजी का मन्दिर है। ऐसा कहा जाता है कि जब ऋषिकेश के महन्तजी ने यह समझा कि औरंगजेब भरत मन्दिर को तोड़ देंगे तो उन्होंने भरत की मूर्ति को ऋषिकेश से उठाकर देव प्रयाग में स्थापित करवा दिया था। तब से यहां पर भरतजी का मन्दिर स्थापित है।

### महिषमर्दिनी

गृध्र पर्वत की ढलान पर और मोटर मार्ग के ऊपर दुर्गा देवी महिषमर्दिनी का मन्दिर स्थापित है।

### नरसिंह मन्दिर

नरसिंह पर्वत के ऊपर शिखर पर नरसिंह भगवान् का मन्दिर है।

### क्षेत्रपाल मन्दिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गृध्र पर्वत की ढलान पर मोटर मार्ग के नीचे और रघुनाथजी के मन्दिर के

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



ऊपर क्षेत्रपालजी का मन्दिर है। यह देव प्रयाग का रक्षक देवता माना जाता है और इसको भैरों भी कहते हैं।

### नागराजा मन्दिर

नरसिंह मन्दिर के पीछे की ओर पहाड़ी पर नागराज मन्दिर है। देव प्रयाग से लगभग 5 किलोमीटर दूर यह मन्दिर है जहां बैसाख में मेला लगता है।

देव प्रयाग से 5-6 किलोमीटर दूर धिण्डवाडा है। इस स्थान से 2-3 किलो मीटर ऊपर पहाड़ी पर डांडा का नागराजा का मन्दिर है। कंडवालस्यूं और बनेलस्यूं के अलावा दूर-दूर के यात्री डांडा के इस नागराजा के दर्शन करने आते हैं। अभी भी डांडा के नागराजा की मान्यता बहुत अधिक है। देव प्रयाग से इस स्थान तक पहुंचने के लिए चढ़ाई का रास्ता है परन्तु यात्री बड़े प्रेम से उस चढ़ाई को कुछ भी नहीं समझते और नागराजा के चरणों में लौटने के लिए दूर-दूर से आते रहते हैं।

### आद्य विश्वेश्वर मन्दिर

देव प्रयाग में आद्य विश्वेश्वर मन्दिर, शिवजी का मन्दिर है जो रघुनाथजी के मन्दिर के बिलकुल नीचे बना हुआ है। यहीं पर शिवलिंग अनगढ़ शिला के रूप में है। इस मन्दिर में बैकुण्ठ चतुर्दशी और शिवरात्रि के अवसर पर विशाल मेला लगता है।

वैसे देव प्रयाग में शिवजी के पांच विशेष मन्दिर हैं। चारों कोनों पर चार शिव मन्दिर धनेश्वर, विल्वेश्वर, तुण्डीश्वर और ताटंकेश्वर हैं और इन सबके बीच में विश्वेश्वर मन्दिर स्थित है।

### गंगा मन्दिर

संगम से कुछ ही ऊपर विशाल शिला पर एक छोटी-सी मठिका बनाकर गंगा की मूर्ति स्थापित की गई है। जहां पर गंगा के भक्तों के द्वारा गंगा की पूजा-अर्चना होती है।

देव प्रयाग में रहने की व्यवस्था पर्याप्त है। यों तो मुख्यतः यह शिला पर निर्मित ऐसा शहर है जो मुख्यत: पण्डों की निवास स्थली है। देव प्रयाग के पंडितों अर्थात् पण्डों के यहां सुन्दर मकान निर्मित हैं जहां रहने की किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती। देव प्रयाग के पण्डे केवल पण्डे ही नहीं होते बल्कि वे यात्रियों की हर प्रकार की सहायता करने वाले सहायक भी होते हैं। यदि किसी यात्री के पास खर्चे आदि की भी कमी हो जाती है तो देव प्रयाग के पण्डे उसके खर्चे आदि की व्यवस्था भी करते हैं और जिस दिन से बदरीनाथ के कपाट बन्द हो जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



वे अपने-अपने इलाकों के शहरों में जाकर दक्षिणा प्राप्त करते हैं और जिन लोगों को खर्चा देते हैं तो वहां जाकर उसकी उगाही करते हैं। देश के अन्य तीर्थों के पण्डों से अधिक सुसंस्कृत और सहायक पण्डे देव प्रयाग के पण्डे होते हैं ये अपने यजमानों की पूरी देखरेख भी करते हैं और धार्मिक दृष्टि से अपने क्षेत्रों में पड़ने वाले यात्रियों की यात्रा भी सम्पन्न करवाते हैं। पर्वतीय क्षेत्र के बदरीनाथ के पण्डे डिमरी होते हैं और मैदानी क्षेत्र के पण्डे देव प्रयाग के पण्डे ही होते हैं।

पण्डों के घरों के अलावा यात्रियों को ठहराने के लिए देव प्रयाग में काली कमली पंचायती धर्मशाला भी उपलब्ध है। इसके अलावा गढ़वाल विकास निगम और सार्वजनिक निर्माण विभाग के विश्राम गृह भी यहां उपलब्ध हैं, जहां रहने और ठहरने आदि की व्यवस्था में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहती।

देव प्रयाग से प्रस्थान करने से पहले यहां के दो महत्त्वपूर्ण स्थलों का देखना भी श्रेयष्कर है। देव प्रयाग के टेहरी गढ़वाल में पड़ने वाले मोटर स्टेशन के पास सार्वजनिक निर्माण विभाग विश्रामगृह के ठीक ऊपर दशरथ पर्वत की ढलान पर चक्रधर जोशीजी की नक्षत्र वेधशाला स्थापित है। यह वेधशाला ज्योतिष विद्या का महान केन्द्र है। यहां पुस्तकालय में 10,000 से अधिक पुतकें और 3000 से अधिक हस्तलिखित पाण्डुलिपियां हैं। नक्षत्र विद्या के अध्ययन का यहां पर कार्य शुरू होने ही वाला था कि इस संस्था के संस्थापक स्व० चक्रधर जोशी का असामयिक निधन हो गया। यदि वे जीवित होते तो इस संस्था का रूप ही दूसरा होता। अपने गुरु मुकुन्द दैविज्ञ के कई ग्रन्थों का जहां उन्होंने प्रकाशन करवाया था वहां स्वयं जोशीजी ने ज्योतिष के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण नयी रचनाओं को देकर ज्योतिष के क्षेत्र में एक नयी परम्परा को स्थापित किया था। फिर भी, यह संस्था भारत की ज्योतिष के सम्बन्ध में नयी से नयी जानकारी देने में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

देव प्रयाग के बाह बाजार से जैसे ही हम पुराने रास्ते पर बढ़ते हैं तो देव प्रयाग से दो-तीन किलोमीटर आने पर हमें सीता कुटी नाम का मन्दिर मिलता है और कुछ ही दूरी पर नाले को पार करने के बाद एक मन्दिर और मिलता है। जिसको सीता विदा कुटी कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि जब रामचन्द्रजी रावण को मारकर अयोध्या वापस लौटे थे, तब उन्होंने एक धोबी के कहने पर अपनी सती साध्वी पत्नी सीता को परित्याग करने का निर्णय किया। वे ऐसा काम तो स्वयं नहीं कर सके परन्तु उन्होंने इस प्रकार के कार्य का भार लक्ष्मण के ऊपर डाला। यह सीता विदा कुटी वही कुटी है जहां से लक्ष्मण ने सीता को विदा किया था। जिस वन में सीता निवास करती थीं उस वन की सीमा को आज भी सीता की स्मृति में सीतावनस्यं (सीतोनस्यं) कहते हैं। इस सारे क्षेत्र के लोग सीता को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



ही अपनी इष्ट देवी मानते हैं। देव प्रयाग से मिली हुई पट्टी सीतौनस्यूं के 'फल-स्वाडी' नामक गांव के सामने के खेत में प्रतिवर्ष हरिबोधिनी के दूसरे दिन 'मन-सार' का मेला लगता है। मेले की कथा यूं है—जब राम ने सीता को संदेहवश निर्वासित कर दिया था तो लक्ष्मण सीता को विदा कुटी अर्थात् इसी शिव-स्थल तक देव प्रयाग के पास छोड़ गये थे। सीता को छोड़ने पर लक्ष्मण स्वयं मूर्च्छित हो गये थे। आज भी सितौनस्यूं के देवल गांव (दयूल) में लक्ष्मण का मन्दिर है। जहां लक्ष्मण की उत्तान अवस्था की मूर्तियां हैं। इस गांव के आसपास 11-12 मन्दिर हैं। इसी क्षेत्र में सीता रहने लगी थीं और वर्तमान कोट नामक स्थान पर वाल्मीकि आश्रम था। इसी क्षेत्र में रहकर सीता ने लव और कुश नामक दो बच्चों को जन्म दिया था। जब राम का अश्वमेध का घोड़ा यहां से गुजरा तो लव और कुश ने उसे रोक लिया। राम को इस क्षेत्र में आना पड़ा। जब सारा रहस्य खुल गया तो राम ने लव कुश को अपनाने के बाद सीता को पुनः अपने साथ चलने को कहा, समीपवर्ती गांव के लोगों ने सीता को अपनी बेटी के समान पाला-पोसा था। अतः अपने क्षेत्र की प्रथा के अनुसार द्रोण कण्डी देकर सीता को राम के साथ भेजना चाहा। फलस्वाडी गांव के मनसार के खेत से जैसे ही सीता आगे बढ़ने लगीं तो वह एकायक रुक गयीं और खड़ी होकर कहने लगी कि हे धरती माता! यदि मैं सती पतिव्रता हूं तो तुम मुझे अपनी गोद में समा लो। इन वाक्यों के साथ ही पृथ्वी फट गई और सीता पृथ्वी में समा गयीं। राम ने सीता को पकड़ना चाहा ताकि वे सीता को पृथ्वी के गर्भ से निकालने में सफल हो सकें परन्तु सीता के बालों के सिवा उनके हाथ में कुछ नहीं लगा। सीता को भेजने के लिए जो सम्पूर्ण सीतावनस्यूं (सतौनस्यूं) के और समीपवर्ती क्षेत्रों के लोग आए थे, राम ने सीता की स्मृति में उन लोगों को सीता के बाल लौटा दिये। वे सीता की स्मृति के रूप में बिलखते-बिलखते अपने-अपने घर लौट आए परन्तु तब से आज तक निरन्तर प्रतिवर्ष गढ़वाल की प्रथा के अनुसार लड़की को ससुराल भेजने के तरीके से सारे गांव के लोग व क्षेत्र के लोग 'मनसार' के इस मेले में नियम से इकट्ठा होते हैं। और द्रौण कण्डी कपड़ा-लत्ता लेकर वहां पहुंचते हैं। सीता के पृथ्वी-प्रवेश के समय से घास विशेष जिसे गढ़वाल में 'बावला' कहते हैं उसको सीता के सिर के बाल के रूप में लेकर अपने-अपने घरों को लौट जाते हैं। यह सारी कथा देव प्रयाग के समीप वाले क्षेत्र में राम के सम्बन्ध की है जिसमें सीता को आज भी उसी प्रकार महत्त्व दिया जाता है। 'मनसार' के मेले को आज भी उसी प्रकार महत्त्व दिया जाता है। हरीबोधिनी के दूसरे दिन यह मेला इस क्षेत्र का सबसे प्रमुख आकर्षण होता है।

देव प्रयाग से आगे बढ़ने पर अलकनन्दा के किनारे-किनारे कुछ ही दूरी के बाद माधोसिंह भण्डारी की स्मृति को अमर रखने वाले ग्राम मलेथा की ओर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



बढ़ने लगते हैं, जहां टेहरी से एक रास्ता ऋषिकेश बदरीनाथ के मुख्य मार्ग पर आकर मिल जाता है। आगे कीर्तिनगर होते हुए गढ़वाल की प्राचीन राजधानी और वर्तमान उभरते हुए नगर श्रीनगर में प्रवेश करते हैं।

## कोटद्वार से केदार–बदरी यात्रा

गढ़वाल के मुख्य द्वार कोटद्वार से केदार-बदरी की ओर भी जाने के लिए एक मार्ग है। यों तो अधिकांश यात्री धार्मिक भावना से प्रेरित होकर हरिद्वार ऋषि-केश मार्ग से ही यात्रा करते हैं परन्तु कुछ यात्री ऐसे भी हैं जो सीधे उत्तर रेलवे के नजीबाबाद स्टेशन पर उतरकर कोटद्वार पहुंचते हैं। कोटद्वार से श्रीनगर पहुंचते हैं। मुख्यमार्ग श्रीनगर में मिल जाता है।

कोटद्वार के समीप ही महाकवि कालिदास की प्रिय पवित्र मालिनी नदी भी पड़ती है। इस मालिनी के किनारे अभिज्ञान शकुन्तलम् की नायिका शाकुन्तला कण्वाश्रम में रहती थीं। महाकवि कालिदास ने जिस स्थान का वर्णन किया है वह स्थल आज भी कण्वाश्रम के रूप में जनता का ध्यान आकर्षित करता रहता है। वसन्त पंचमी को इस कण्वाश्रम में एक मेला लगता है। जिस भरत के नाम पर इस देश का भारतवर्ष नाम पड़ा है। वह दुष्यन्तपुत्र भरत इसी कोटद्वार के पास वाले क्षेत्र में पैदा हुआ था और उसका बचपन यहीं बीता था। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कण्वाश्रम का जिस तरह से वर्णन है वे स्थल यहां आज भी वैसे ही देखे जा सकते हैं। कोटद्वार के मार्ग से जाने वाले यात्री मालिनी के तट पर कण्वाश्रम तथा शकुन्तला और भरत की जन्मभूमि भी देखना श्रेयष्कर समझते हैं। कोटद्वार से जैसे ही मार्ग आगे बढ़ने लगता है सुन्दर घने वनों की छाया में मार्ग चलता है।

कोटद्वार से 15 किलोमीटर की दूरी पर गढ़वाल का प्राचीन नगर दुगड्डा आता है। दुगड्डा में भील नदी को पार करते हैं। बायीं तरफ की सड़क लक्ष्मण झूला की ओर जा रही है। दुगड्डा से पौड़ी जाने के लिए चढ़ाई शुरू हो जाती है। दाहिनी तरफ मार्ग से हम आगे बढ़ने लगते हैं। लगभग दो किलोमीटर की दूरी जाने पर दाहिनी तरफ का रास्ता गढ़वाल रेजीमेन्ट के केन्द्र लैन्सडाउन की ओर बढ़ जाता है और बायीं तरफ का रास्ता पहाड़ की ऊंचाइयों को पार करते हुए गुमखाल नामक अत्यन्त सौन्दर्यशाली पर्वत शिखर पर पहुंच जाता है। यों तो श्रीगर की ओर आने वाले अधिकांश यात्रियों की मोटरें इसी रास्ते से जाती हैं परन्तु हम लैन्सडाउन के विषय में यात्रियों का ध्यान आकर्षित कर देना चाहते हैं। लैन्सडाउन जिसे प्राचीन समय में कालोडाण्डा के नाम से जाना जाता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अंग्रेजों ने इस स्थान को गढ़वाली रेजीमेन्ट के लिए उपयुक्त स्थान चुना। यह

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



पर्वत की चोटी पर स्थित अत्यन्त मनोहारी नगर है जहां गढ़वाल मंडल की सेना का मुख्यालय है। मसूरी के समान लैन्सडाउन भी एक बहुत आकर्षक क्षेत्र है जहां पर पर्यटक आते हैं। यहां पर रहने के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग का बंगला है और अन्य होटल भी हैं। कोटद्वार से 41 किलोमीटर की दूरी पर 1800 मीटर की ऊंचाई पर लैन्सडाउन का लुभावना क्षेत्र बसा है। लैन्सडाउन ग्रीष्म के समय में अधिक आकर्षक बन जाता है। बांज और चीड़ के वनों के मध्य लैन्सडाउन की शोभा देखते ही बनती है। टिफिन टॉप लैन्सडाउन की सबसे अच्छी चोटी है। इस चोटी पर एक चबूतरा बना हुआ है। इस चबूतरे से आपको केदारनाथ, बदरीनाथ के शिखर ऐसे समीप दिखाई देते हैं कि लगता है कि मानो हाथ को बढ़ाया और इन शिखरों तक पहुंच गए। मैदानी क्षेत्र का दृश्य भी यहां से बहुत साफ दिखाई देने लगता है।

लैन्सडाउन से आगे बढ़ने से पूर्व नैसर्गिक सुन्दरता के स्थल ताड़केश्वर के विषय में भी लिख देना उत्तम रहेगा। पौड़ी गढ़वाल में शिव के पांच स्थलों में किलकिलेश्वर (श्रीनगर), क्योंकालेश्वर (पौड़ी), विन्देश्वर (चौथान), एकेश्वर (चांदकोट) और ताड़केश्वर शिव के पांच स्थान हैं। लैन्सडाउन जाने से पहले एक रास्ता दाहिनी तरफ रिखणीखाल की ओर बढ़ता है। इसी रास्ते पर घने देवदार और बांज-बुरांस के वनों के मध्य लैन्सडाउन से 33 किलोमीटर की दूरी पर चखुलिया खाल है और उससे 5 किलोमीटर आगे पैदल रास्ते से ताड़केश्वर महादेव का मन्दिर स्थित है। इस क्षेत्र से हिमालय की बन्दरपूछ और चौखम्भा की चोटियां साफ दिखाई देती हैं। कोटद्वार से बस द्वारा इस स्थान की दूरी 74 किलोमीटर है। ताड़केश्वर का मन्दिर तीन दिशाओं से आने वाली तीन निर्मल जलधाराओं के बीच में स्थित है। ये तीनों जल-धाराएं शिवलिंग का स्पर्श करती हुई ताड़केश्वर कुण्ड में प्रवेश करती हैं। कुण्ड में नहाकर मन्दिर में शिवजी के दर्शन करते हैं। मनोकामना पूर्ण करने वाला शिव का मन्दिर और दूसरा नहीं है। वर्ष में दो बार जेठ और आश्विन मास में यहां विशेष पूजा होती है। शिवलिंग पर जब जल-धारायें पड़ती हैं तो समतल पत्थर के मध्य से एक स्वयंभू शिवलिंग स्वतः ऊपर उठने लगता है। यह शिवलिंग 5-6 इंच तक उठ जाता है। जब लिंग अपनी पूर्ण स्थिति में आ जाता है तभी पूजा पूरी मानी जाती है और तब प्रसाद बंटता है। आज भी ऐसे अद्भुत शिवलिंग के दर्शन करने के लिए यात्री दूर-दूर से आते हैं और जेठ और आश्विन के महीने में यहां रात्रि निवास करते हैं। रात्रि-निवास करने के लिए यहां पर एक धर्मशाला है।

इसी क्षेत्र में गोरखपुर नाम का एक गांव भी पड़ता है जहां गोरखनाथजी की गुफा है। ऐसा माना जाता है कि गुरु गोरखनाथजी ने इसी गांव में जन्म लिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



था। गढ़वाल के जागर गीतों में सिद्धों के जागरों के साथ गुरु गोरखनाथजी के भी जागर लगाये जाते हैं। आज भी बहुत से गोरखपन्थी साधु गोरखगुफा में आकर साधना करते हैं।

लैन्सडाउन से जब हम आगे बढ़ते हैं तो हमारी कार या बस लैन्सडाउन की चढ़ाई को पार करते हुए चीड़ और बांज वृक्षों के मध्य से गुजरती हुई पर्वत श्रृंखला के ऊपर स्थित जहरी खाल नामक स्थान पर पहुंच जाती है। इस स्थान पर राजकीय पोस्टग्रेजुएट कॉलेज, इण्टर कॉलेज तथा अन्य कई सरकारी विभागों के कार्यालय हैं। लैन्सडाउन से लगे हुए जहरीखाल नगर की अपनी सुन्दरता अद्भुत है। जहरीखाल से हम जैसे आगे बढ़ते हैं तो कुछ ही समय के बाद पर्वत श्रृंखला में स्थित गुमखाल नामक पर्वत चोटी के स्थल पर पहुंच जाते हैं। गुमखाल से पहले ही कोटद्वार से आने वाली सड़क और लैन्सडाउन से पौड़ी जाने वाली सड़क से मिल जाती है। गुमखाल से भी हिमालय का दृश्य अत्यन्त आकर्षक और लुभावना है। इस स्थल पर एक सड़क बाईं तरफ जा रही है जो चेलू सैंण सिलोगी आदि स्थानों से होते हुए लक्ष्मण झूले की ओर बढ़ जाती है। यह सड़क ऋषि-केश-बदरीनाथ जाने वाली मुख्य सड़क से मिल जाती है। इस सड़क पर स्थित जितने भी स्थान हैं इनका भी अपना प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त मनोहारी है। गुमखाल से लेकर सिलोगी तक का सारा क्षेत्र हिमालय के दर्शनों की अद्भुत दर्शनीय पर्वतीय श्रृंखला है।

गुमखाल से दाहिनी ओर मुड़ने वाली सड़क चोटी के पास घूमने लगती है। बिलकुल सामने दृष्टि पड़ने पर पहाड़ की चोटी पर गढ़वाल की प्राचीन और महत्त्वपूर्ण भैरों गढ़ी के दर्शन होते हैं। आज भी इस सबसे ऊंची पर्वत चोटी पर भैरों का मन्दिर है। इस मन्दिर में भैरों की नियमित पूजा होती है। गढ़वाल के रक्षक के रूप में अर्थात् द्वारपाल के रूप में भैरों का बहुत बड़ा महत्त्व माना गया है। भैरों के अनुयायी पुजारी और साधक भैरों गढ़ी की चोटी पर स्थित मन्दिर में जाकर साधना कर आज भी सिद्धि प्राप्त करते हैं। गुमखाल से जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हमारी बस उतराई की ओर बढ़ती हुई पूर्वी नयार नदी के किनारे पर सतपुली नामक स्थान पर पहुंच जाती है। सतपुली में यात्री भोजन, चाय आदि लेते हैं क्योंकि यहां पर भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था है। पुराणों में इस नयार नदी को नावालिका कहा गया है। सतपुली से आधा किलोमीटर की दूरी पर पश्चिमी नयार भी पूर्वी नयार में आकर पूर्ण नावालिका के रूप को धारण कर लेती है। व्यास घाट में यही नावालिका नदी गंगा से मिल जाती है। आज से लगभग 34-35 वर्ष पहले (वर्ष 1952 में) सतपुली में पूर्वी नयार में भयंकर बाढ़ आयी थी। कई बसें नदी के किनारे पर खड़ी थीं। बाढ़ अपने साथ कई बसों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



और आदमियों को लेकर आगे बढ़ गयी। जैसे ही हम सतपुली के पुल को पार करते हुए पौड़ी की ओर बढ़ते हैं तो ऐसी नदी के भेंट चढ़े हुए शहीदों की स्मृति में बना हुआ एक चबूतरा हमको दिखायी देता है। सतपुली से दो किलोमीटर आगे जाने पर एक रास्ता दाहिनी तरफ को एकेश्वर, नौगांवखाल, चौबटाखाल, दमदेवल होते हुए थलीसैंण की ओर चला जाता है और इसी रास्ते में एकेश्वर का शिव मन्दिर भी ताड़केश्वर के समान अद्भुत शक्तिवाला शिव मन्दिर पड़ता है, जो चौंदकोट क्षेत्र का इष्ट देव है। सतपुली से जो रास्ता दाहिनी तरफ गया है वह कुछ दूर आगे जाने के बाद बायीं तरफ का रास्ता नौगांवखाल, एकेश्वर जाता है और दाहिनी तरफ का रास्ता संगलाकोटी जाता है। वहां पर शिवजी का बहुत सुन्दर मन्दिर है। संगलाकोटी से यह मार्ग पोखड़ा जाता है। पोखड़ा गढ़वाल का अद्भुत सुन्दर स्थान है। वहां से यह मार्ग वेदीखाल के अत्यन्त रमणीय क्षेत्र से होकर बैंजरो पहुंच जाता है। बैंजरो के पास एक सड़क रामनगर से पौड़ी के लिए आती है जो थलीसैंण होकर भरसार और पावौ होते हुए पौड़ी को मिलती है। थलीसैंण से पीड़सैंण दूधातोली की पर्वत श्रृंखला पर शिव का बड़ा माहात्म्य वाला केन्द्र विनसर है। यह चौथान पट्टी में पड़ने वाले अत्यन्त दर्शनीय क्षेत्र में स्थित है।

थलीसैंण से मिले हुए ढाईजुली की दूधातोली की श्रेणी में श्रृंगी ऋषि का आश्रम है। इसी ढाईजुली कंडारस्यूं की सीमा पर ऊंची पर्वत श्रृंखला पर तारा-कुण्ड नामक सुन्दरताल है। उसके आसपास फूलों का सुन्दर मैदान भी है। कंडारस्यूं पैठाणी में शनि का भव्य मन्दिर है। नवीं शताब्दी का शनि अथवा शिव का यह पैठाणी का मन्दिर दर्शनीय है। पौड़ी के मार्ग पर भरसार नामक स्थल पर फलों का विस्तृत बाग है। इसी भरसार वाली चोटी पर कपरोली के समीप घंटा कर्ण का मन्दिर है।

परन्तु हमारा मार्ग सतपुली से सीधे पौड़ी की ओर बढ़ने लगता है इसलिए सतपुली से जैसे ही हम एक किलोमीटर आगे बढ़ते हैं, हम दाहिनी ओर जाने वाले रास्ते को छोड़कर सीधे बायीं तरफ के रास्ते को पार करते हुए सीधे मार्ग पर चलते हैं। रास्ते में बौंसाल नामक स्थान पड़ता है। यहां से बायीं तरफ को जो मोटर मार्ग गया है वह मुण्डनेश्वर होकर पौड़ी पहुंचता है। मुण्डनेश्वर में भी एक बहुत अद्भुत शिव का मन्दिर है और इस क्षेत्र का इष्टदेव है। हमारा रास्ता यहां पर दाहिनी तरफ को होते हुए पाटीसैंण होकर कठमुण्डल्या के पुल पर पहुंचता है। इस पुल के पास दाहिनी तरफ की सड़क नौगांवखाल, चौबट्टाखाल को जाती है और इसी में एक सड़क सन्तुधार होकर पावौचिपलघाट, पैठाणी होते हुए गिदोखाल, नौटी, कर्ण प्रयाग को जाती है। यह मार्ग कोटद्वार से कर्ण प्रयाग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



जाने के लिए सबसे अधिक सरल और सुगम मार्ग है, पैठाणी का मन्दिर इसी मार्ग पर पड़ता है कठमुण्डल्या के पुल से जैसे ही बायें तरफ के रास्ते को पार करते हैं वैसे ही पश्चिमी नयार के दाहिने किनारे पर गढ़वाल की प्रसिद्ध 'ज्वालपा देवी' का मन्दिर हमें मिलता है। ज्वालपा देवी गढ़वाल की सर्वशक्तिमान देवी हैं। गढ़वाल के सैनिकों की ओर से जहां बदरीनाथ के लिए भेंट आती है वहां ज्वालपा देवी के लिए भी भेंट पहुंचती है। मां ज्वालपा देवी का प्रसाद पाने के लिए दूर-दूर के यात्री यहां आते हैं। नौरात्रों में दुर्गापाठ यहां विशेष रूप से किया जाता है। यहां पर मन्दिर की ओर से एक संस्कृत पाठशाला भी चलायी जाती है। रहने के लिए धर्मशाला और पर्यटन विभाग की ओर से भी एक विश्राम गृह बनाया गया है। ज्वालपा देवी से जो भी कुछ मांगते हैं, ऐसा कहा जाता है कि उसकी मनौती मां ज्वालपा अवश्य पूर्ण करती हैं।

ज्वालपा देवी के दर्शन करने के बाद मार्ग फिर चढ़ाई का शुरू हो जाता है और हमारी गाड़ी हमें पीपली पानी, अगरोड़ा, पैंडुल और परमुण्डाखाल को पार करते हुए बुवाखाल नामक स्थान पर पहुंचती है। बुवाखाल में रामनगर से आने वाली सड़क, देवदाट से आने वाली सड़क तथा खिर्सू, खांकरा से आने वाली सड़कें मिलती हैं। यही सड़क आगे खिर्सू से घने जंगल के मध्य होते हुए आदि बदरी में (एक समय नौटी होकर) मिल जाती है। इसी रास्ते पर प्रसिद्ध हरियाली देवी का मन्दिर भी पड़ेगा जो रुद्र प्रयाग से बिलकुल ऊपर पहाड़ की चोटी पर स्थित है।

बुवाखाल में जैसे ही हम पहुंचते हैं वैसे ही सामने हिमालय का चौखम्बा पहाड़ दिखायी देता है और बायीं ओर गढ़वाल कमिश्नरी और गढ़वाल जिले का मुख्यालय पौड़ी दिखाई देता है।

पौड़ी में प्रवेश करते ही हमें सबसे पहले लक्ष्मीनारायण मन्दिर के दर्शन होते हैं और ऊंचाई पर हमें कंडोलिया के क्षेत्र में नाग देवता का स्थान मिलता है। कंडोलिया में नाग देवता की प्रसिद्ध थाती है और पौड़ी क्षेत्र का इष्ट देवता नाग देवता ही है।

कंडोलिया से आगे देव प्रयाग की ओर पर्वत शृंखला पर शिवजी का क्योंकालेश्वर प्रसिद्ध मन्दिर है। यह भी पौड़ी में स्थित है। इसका भी अपना विशेष महत्त्व है।

पौड़ी से एक मोटर मार्ग देवप्रयाग को जाता है और एक मार्ग उतराई के रास्ते को पार करते हुए श्रीनगर को पहुंचता है। पौड़ी अपनी अद्भुत सुन्दरता के लिए मंसूरी से किसी भी प्रकार से कम नहीं है। प्रातःकाल हिमालय का जितना सुन्दर दर्शन पौड़ी से होता है उतना अन्य किसी स्थान से नहीं होता। कोटद्वार से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



108 किलोमीटर की दूरी पर पौड़ी में रहने के लिए होटल तथा पर्यटन विभाग के विश्राम गृह हैं। सार्वजनिक निर्माण विभाग और नगरपालिका का भी विश्राम गृह हैं। ग्रीष्मकाल में पौड़ी का अपना एक विशेष आकर्षण होता है। पौड़ी एक उभरता हुआ नगर है। पौड़ी के भव्य दर्शन करने के पश्चात उतराई के रास्ते से आगे बढ़ते हुए हम श्रीनगर पहुंचते है।

## कोटद्वार से श्री केदारनाथ

| स्थान | समुद्रतल से ऊंचाई मीटर | दूरी (एक स्थान से दूसरे स्थान तक) | दूरी कि० मी० |
|---|---|---|---|
| कोटद्वार | 396 | — | — |
| दुगड्डा | 610 | 16 | 16 |
| गुमखाल | 1811 | 19 | 35 |
| सतपुली | 680 | 21 | 56 |
| पौड़ी | 1772 | 52 | 108 |
| श्रीनगर | 579 | 29 | 137 |
| रुद्र प्रयाग | 610 | 34 | 171 |
| तिलवाड़ा | 671 | 9 | 180 |
| अगस्तमुनि | 762 | 10 | 190 |
| कुण्ड | 976 | 15 | 205 |
| गुप्तकाशी | 1479 | 5 | 210 |
| नालानारायणकुटी | — | 3 | 213 |
| फाटा | 1601 | 11 | 224 |
| रामपुर | 1646 | 9 | 233 |
| सोन प्रयाग | 1829 | 3 | 236 |
| गौरीकुण्ड | 1982 | 5 | 241 |
| रामबाड़ा | 2591 | 7 | 248 |
| गरुड़चट्टी | 3262 | 4 | 252 |
| श्रीकेदारनाथ | 3583 | 3 | 255 |

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



कोटद्वार से बदरीनाथ के लिए श्रीनगर तक एक ही मार्ग है अतः रुद्र प्रयाग से बदरीनाथ की दूरी का विवरण इस प्रकार है—

| स्थान | समुद्रतल से ऊंचाई (मीटर) | दूरी (एक स्थान से दूसरे स्थान तक) | दूरी कि० मी० |
|---|---|---|---|
| रुद्र प्रयाग | 610 | 34 | 171 |
| घोलतिर | 645 | 10 | 181 |
| गौचर | 690 | 10 | 191 |
| कर्ण प्रयाग | 795 | 11 | 202 |
| नन्दप्रयाग | 914 | 22 | 224 |
| चमोली | 1069 | 10 | 234 |
| बिरही | 1100 | 8 | 242 |
| पीपलकोटी | 1311 | 9 | 251 |
| गरुड़गंगा | 1372 | 5 | 259 |
| टंगणी | 1677 | 6 | 262 |
| हैलंग | 1524 | 6 | 268 |
| जोशीमठ | 1890 | 14 | 282 |
| विष्णुप्रयाग | 1372 | 10 | 292 |
| गोविन्दघाट | 1829 | 10 | 302 |
| पाण्डुकेश्वर | 1829 | 4 | 306 |
| हनुमानचट्टी | 2286 | 9 | 315 |
| देवदर्शनी | 3101 | 13 | 328 |
| श्रीबदरीनाथ | 3110 | 2 | 330 |

## श्रीनगर

ऋषिकेश-बदरीनाथ मार्ग पर श्रीनगर, ऋषिकेश से 108 किलोमीटर और कोटद्वार से 137 किलोमीटर की दूरी पर अलकनन्दा के बाएं किनारे पर एक सुन्दर घाटी में स्थित है। हरिद्वार-ऋषिकेश तथा उत्तरकाशी से टेहरी होकर और कोटद्वार से पौड़ी होकर बसों और टैक्सियों द्वारा श्रीनगर पहुंच जाते हैं।

गढ़वाल मण्डल का यह बीच में पड़ने वाला स्थान है। गढ़वाल के राजा की यह प्रसिद्ध राजधानी रही है। पन्द्रहवीं शताब्दी में अजयपाल नामक राजा ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



देवलगढ़ को हटाकर श्रीनगर को अपनी राजधानी बनाया था। गढ़वाल राज्य के पुराने अभिलेखों के अनुसार श्रीनगर राजधानी की स्थापना 15 गते कार्तिक 1415 विक्रमी सम्वत् में हुई थी। कनिंघम ने श्रीनगर की राजधानी की स्थापना सन् 1358 ई० माना है। यह नगर सन् 1803 ई० तक गढ़वाल की राजधानी रहा। उस समय प्रद्युम्न शाह के शासनकाल में श्रीनगर पर गोरखों ने आक्रमण किया था। सन् 1804 ई० में श्रीनगर पर गोरखों का अधिकार हुआ और सन् 1815 ई० में अंग्रेजों से सहायता लेकर सुदर्शन शाह ने गोरखों को गढ़वाल से बाहर कर दिया। अंग्रेजों ने अपनी सहायता के बदले अलकनंदा के पूर्वी और दक्षिणी गढ़वाल के हिस्से को अपने अधिकार में ले लिया। जिसको ब्रिटिश गढ़वाल के नाम से सन् 1947 ई० तक जाना जाता रहा। और अलकनन्दा के पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्र को गढ़वाल के राजा के अधिकार में दिया गया, जिसको टेहरी रियासत के नाम से जाना गया। श्रीनगर के बाद गढ़वाल के राजा ने अपनी राजधानी टेहरी बनायी।

श्रीनगर का पौराणिक साहित्य में विशेष महत्त्व मिलता है। 'स्कन्द पुराण' के केदारखण्ड में इस क्षेत्र को श्रीक्षेत्र कहा गया है और यह उल्लेख किया गया है कि यह शिवजी का सबसे अधिक प्रिय स्थान है। 'वनपर्व' अध्याय 37 के अनुसार इसी श्रीनगर के समीप वाले इन्द्रकील पर्वत पर अर्जुन ने शिवजी की तपस्या की थी और पाशुपत अस्त्र को प्राप्त किया था। इन्द्रकील पर्वत श्रीनगर के बिल्कुल सामने पड़ता है। इसका उल्लेख शतरुद्र संहिता (37/65 और अध्याय 41, श्लोक 55 के अनुसार) की पुष्टि होती है। इसी क्षेत्र में महाराजा सत्यसन्ध ने कोलासुर का वध किया था और सत्यसन्ध के ही प्रयास से इस नगर की स्थापना पहले श्रीपुर और बाद में श्रीनगर के रूप में हुई थी।

वनपर्व के अनुसार पाण्डव जब गन्धमादन पर्वत की ओर जा रहे थे तो इसी नगर में सुबाहु ने पाण्डवों का आतिथ्य किया था।

भगवान् राम ने भी शिवजी की तपस्या इसी नगर में (1001) कमल चढ़ाकर की थी। आदि शंकराचार्य ने भी इस स्थान पर रहकर अपनी दिग्विजय यात्रा को सफल बनाने हेतु शिवजी की आराधना की थी। यहीं पर आदि शंकराचार्य को 'शक्ति' के अस्तित्व का ज्ञान हुआ था। उनका मां शक्तिवाला स्तोत इसी श्रीनगर में रचा गया, माना जाता है। जैसा कि पहले कहा गया है कि रामायण और महाभारत काल से भी पहले इस नगर का अस्तित्व स्थापित हो गया था। परन्तु राजधानी के रूप में 1500 ई० से 1803 ई० तक यह परमारवंश के राजाओं की राजधानी रही। 1894 में विरही ताल टूट जाने से पुराना श्रीनगर बह गया था। अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ए० के० पौ ने सन् 1865 में नये मास्टर प्लान के अनुसार श्रीनगर को बसाया। आज श्रीनगर फिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



वैभव की नगरी बन रही है। यहां पर गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी है। अनेक मण्डलीय कार्यालय खुल चुके हैं। डाकतार, टेलीफोन आदि की व्यवस्था हो चुकी है। आई० टी० आई० और पॉलीटेक्निक आदि संस्थाएं यहां कार्यरत हैं। गढ़वाल मण्डल ही नहीं, समस्त देश से आज इस नगर का सम्पर्क जुड़ गया है।

### श्रीयन्त्र

कहते हैं 'श्रीयन्त्र' की रचना जो कोलासुर वध करने के बाद राजा सत्यसन्ध ने करवायी थी। वह वर्तमान उफल्डा नामक गांव के पास एक विशाल शिला पर बनाई गई है। ऐसा बताते हैं कि इस श्रीयन्त्र के कारण भी इस नगर का नाम श्रीनगर पड़ा। ऐसी प्राचीन कथा है कि इस यन्त्र का पूजन विधिवत किया जाता था और नरबलि दी जाती थी। ऐसा कहा जाता है कि जो उस यन्त्र को देख लेता था वह जीवित नहीं रह पाता था। 'श्रीदेवी' उसका आत्मसात कर लेती थीं। शंकराचार्य जब उत्तराखण्ड की यात्रा पर आये तो उन्होंने नरबलि की कथा सुनी और श्रीयन्त्र को उलटकर अलकनन्दा में डाल दिया। आज भी जहां पर एस० एस० बी० का केन्द्र है उसके आगे अलकनन्दा की मुख्य धारा के बीच उल्टी पड़ी शिला के बीच में इस यन्त्र को देखा जा सकता है।

### कमलेश्वर महादेव का मन्दिर

श्रीनगर का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और महात्म्य वाला मन्दिर कमलेश्वर महादेव का मन्दिर, अलकनन्दा के बायें किनारे पर स्थित है। कहा जाता है कि भगवान् विष्णु ने शिवजी को प्रसन्न करने के बाद सुदर्शन चक्र प्राप्त किया था। भगवान् राम ने इसी स्थल पर शिव को प्रसन्न करने के लिए एक हजार एक कमल चढ़ाये थे। इसीलिए इस मन्दिर का नाम कमलेश्वर मन्दिर पड़ा। गढ़वाल मण्डल के दूर-दूर के लोग बैकुण्ठ चतुर्दशी को यहां आते हैं और उसी दिन रात्रि को पुत्र की इच्छा रखने वाली स्त्रियां हथेली पर घी का दीपक लेकर सारी रात खड़े-खड़े जागरण करती हैं। दीपक जलाकर रात भर ॐ नमः शिवाय का जप करने के बाद वह प्रातःकाल गंगा में दीपक प्रवाहित कर शिव का पूजन करती हैं। कमलेश्वर मन्दिर में बैकुण्ठ चतुर्दशी, अचला सप्तमी और शिवरात्रि को विशेष मेला लगता है। आज भी यहां की मान्यता है कि जो महिलाएं यहां पर रात भर शिव की आराधना कर लेती हैं उन्हें सन्तान प्राप्ति अवश्य होती है। शिवजी का यहां स्वयंभू लिंग है। यहां के प्राचीन ताम्र-पत्र और प्राचीन अभिलेख संग्रहीत हैं। कमलेश्वर के मन्दिर के पास ही कपिलेश्वर (नर्मदेश्वर) मन्दिर है। यहां पर कपिल मुनि की समाधि है और शिवलिंग भी स्थापित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## शंकर मठ

शंकर मठ श्रीनगर का प्राचीन मन्दिर है। उत्तराखण्ड शैली में बना हुआ यह मन्दिर बहुत आकर्षक है। ऐसा कहा जाता है कि इस मन्दिर की स्थापना आदि गुरु शंकराचार्य ने की थी। परन्तु गढ़वाल के इतिहास लेखक हरिकृष्ण रतड़ी ने अपने इतिहास में लिखा है कि गढ़वाल के राजा प्रदीप शाह ने अपने यशस्वी मंत्री शंकर डोभाल की स्मृति में सम्वत् 1763 विक्रमी में इस मन्दिर को बनवाया था। मन्दिर के भीतर अत्यन्त कलापूर्ण मूर्तियां हैं। लक्ष्मीनारायण की भव्य प्रतिमा गर्भगृह में है। मन्दिर के दरवाजे पर शिखालेख हैं। केदारखण्ड में वर्णन आता है कि इसी स्थान पर 'अश्वतीर्थ' था और यहीं देवल ऋषि और राजा नहुष ने तपस्या की थी।

## केशोराय मठ

उत्तराखण्ड शैली का अत्यन्त सुन्दर मन्दिर केशोराय मठ अलकनन्दा के किनारे कमलेश्वर के उत्तर में स्थित है। बड़े-बड़े पत्थरों की शिलाओं के माध्यम से मन्दिर को बनाया गया है। जिससे मन्दिर की कला देखते ही बनती है। इस मन्दिर का निर्माता केशोराय को बताया जाता है। जिन्होंने सम्वत् 1682 विक्रमी में इस मन्दिर का निर्माण महीपति शाह के राज्यकाल में करवाया था।

## कंसमर्दिनी पीठ

यह मन्दिर भी प्राचीन है। सम्वत् 1866 विक्रमी के कुछ शिलालेख यहां पर मिलते हैं। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि गोरखों ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था। श्रीनगर के रामलीला मैदान से जो रास्ता नदी की ओर जाता है उसी रास्ते के दाहिनी तरफ और नगर के उत्तर की ओर यह मठ स्थित है।

## लक्ष्मीनारायण मन्दिर

आई० टी० आई० के सामने मोटर सड़क के ऊपर भक्तियाना गांव के नीचे प्राचीन 'लक्ष्मीनारायण' का मन्दिर है। इस मन्दिर को 'माया मन्दिर भी कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि नारद-ब्याह-मोह की घटना यहीं पर हुई थी। पृथ्वीपति शाह ने सम्वत् 1699 में इस मन्दिर का निर्माण करवाया था।

एक सत्यनारायण का मन्दिर सम्वत् 1970 विक्रमी में लाला छज्जू मल दास ने गोला बाजार में मुनिजी की धर्मशाला के अन्दर बनवाया था। यह मन्दिर भी अत्यन्त सुन्दर बना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


## जैन मन्दिर

श्रीनगर में जैन मन्दिर भी बहुत सुन्दर है। यह दिगम्बर जैन मन्दिर है जो अपनी कला के लिए प्रसिद्ध है।

## गुरु गोरखनाथ गुफा

ऐसी कथा है कि श्रीनगर की इस गुफा में गुरु गोरखनाथ ने अपनी अन्तिम समाधि ली थी। इस गुफा में गुरु गोरखनाथ की समाधि है। यहां शिवलिंग के साथ गुरु गोरखनाथ मूर्ति स्थापित है। यह गुफा भक्तियाना गांव में है। इस गुफा के सामने भैरों का क्षेत्र भी है।

## किलकिलेश्वर

रानी हाट से दो किलोमीटर ऊपर अलकनन्दा के किनारे यह मन्दिर स्थापित है। महाभारत कथा के अनुसार अर्जुन ने शिव की इन्द्रकील नामक पर्वत पर तपस्या की थी। शिव ने अर्जुन की परीक्षा के लिए किरात रूप धारण किया था। जब अर्जुन और शिव का युद्ध होने लगा तो शिव का किरात रूप होने के कारण 'किलकिलकिल' का स्वर चारों ओर गूंजने लगा। अर्थात् यह स्थल उसी समय से 'किलकिलेश्वर' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इस स्थान को गढ़वाल के पांच शिव के सिद्धपीठों (किलकिलेश्र, क्योंकालेश्वर, बिन्देश्वर, एकेश्वर और ताड़केश्वर) में गिना जाता है।

## नारदकुण्ड

किलकिलेश्वर मन्दिर के नीचे जहां पर अलकनन्दा का मोड़ है उस स्थल को नारद कुण्ड कहते हैं। ऐसा कहते हैं कि यह वही स्थान है जहां पर विष्णुजी के नारद को अलकनन्दा में डुबकी लगाने को कहा था और जब नारद ने डुबकी लगाई तो उन्हें बन्दर की मुखाकृति यहीं पर मिली थी।

## वैष्णवी शिला

जहां पर आज श्रीनगर का आई० टी० आई० है उसके ही समीप अलकनन्दा के किनारे एक ऊंचा टीला है, इस टीले पर एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ है। यहीं पर अलकनन्दा का घुमाव हो गया है। पौराणिक कथा के अनुसार इसी स्थल पर विष्णु भगवान् ने किसी ब्राह्मण कुमार की तपस्या से प्रसन्न होकर शिला के रूप में अपनी स्थिति ग्रहण कर ली थी। तब से यह वैष्णवी शिला वहां है। इस पीपल के पेड़ में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं की कल्पना की गई है। और वैष्णवी शिला को विष्णु का साक्षात रूप माना गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


### माण्डव्य कुटी

वैष्णवी शिला के सामने ठीक अलकनन्दा के दूसरे किनारे माण्डव्य कुटी है। इसी कुटी को प्राचीन समय का माण्डव्य आश्रम होने का गौरव प्राप्त है ।

### राजराजेश्वरी राणी हाट

माण्डव्य कुटी से लगभग एक किलोमीटर आगे अलकनन्दा के दाएं किनारे पर राणी हाट नामक स्थान है, जहां पर राजराजेश्वरी देवी का बहुत प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिर में मुख्य मूर्ति भगवती की है। इस मन्दिर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सोये हुए शंकर की नाभि पर चतुर्भुजी राजराजेश्वरी (पार्वती) पद्मासन मुद्रा में बैठी हैं। इसके पीछे विशाल शिला मूर्ति है। जिसके दर्शन कोई नहीं कर सकता। नौरात्र और चैत्र मास में यहां विशेष पूजा होती है। पुराने समय में यहां देवदासी प्रथा थी। अनेक देवनारियां मन्दिर में भगवती की पूजा-अर्चना करती थीं। शाक्त परम्परा का यह सबसे बड़ा मन्दिर है।

### कल्याणेश्वर

कल्याणेश्वर मन्दिर श्रीनगर के गोला बाजार में स्थित है। यह श्रीनगर के नये मन्दिरों में सबसे भव्य और दर्शनीय मन्दिर है। इसमें सबसे अधिक दर्शनीय शिव की विशाल मूर्ति है, जिसको देखने दूर-दूर से लोग आते हैं।

### बदरीनाथ मठ

कल्याणेश्वर मन्दिर के पीछे सड़क को पार करने के बाद एक छोटा-सा मन्दिर है इसको बदरीनाथ मठ कहा जाता है। इसमें बदरीनाथ के काले पत्थर की मूर्ति है ।

### नागेश्वर मन्दिर

श्रीनगर में यह मन्दिर अत्यन्त प्रसिद्ध माना जाता है। कहते हैं कि ब्रह्म-हत्या के भय से भागते हुए शिव ने इस स्थान पर नागों अर्थात् सर्पों को छिपा दिया था। यह मन्दिर गली में है परन्तु इसका बड़ा महत्त्व माना जाता है।

### भैरों मन्दिर

नागेश्वर मन्दिर से आगे इसी गली में भैरों मन्दिर है। इसी क्षेत्र में आगे चलकर गोरखनाथ का मन्दिर है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



**राम मन्दिर**

(गैरोला मठ) नागेश्वर गली के दूसरी ओर मुख्य मार्ग पर ही भगवान् राम का मन्दिर है। यह भी भव्य मन्दिर है जिसमें श्री राम-सीता की मूर्तियां हैं। सामने प्रांगण में हनुमानजी का मन्दिर बन गया है। गैरोलावंशीय ब्राह्मणों का इस पर आधिपत्य है। इसीलिए इसको गैरोला मठ भी कहते हैं।

श्रीनगर धार्मिक एकता का भी नगर है। हिन्दुओं का तो यह प्राचीन तीर्थ-स्थान है ही परन्तु यहां जैन, सिख ईसाई और मुस्लिम धर्म के मन्दिर-मस्जिद हैं।

श्रीनगर में स्थानीय मन्दिरों के अलावा रहने की व्यवस्था आदि का भी सुन्दर प्रबन्ध है। पर्यटक विश्राम गृह, काली कमली की नयी तथा पुरानी धर्मशाला, डालमिया धर्मशाला, स्वर्गाश्रम धर्मशाला, कल्याणेश्वर धर्मशाला, गुरुद्वारा, सार्वजनिक निर्माण विभाग का विश्राम गृह और नगरपालिका का विश्राम गृह भी है। इन सुविधाओं के अलावा श्रीनगर में यात्रियों को ठहरने के लिए होटल आदि की भी व्यवस्था है। गढ़वाल विकास निगम का विश्राम गृह भी यात्रियों के लिए सुविधाएं प्रदान करता है। श्रीनगर की ऊंचाई कम होने के कारण अधिकांश यात्री रात में सड़क के किनारे या मैदान में भी अपनी आवश्यकता के अनुसार रात्रि विश्राम कर लेते हैं। खाने के अलावा सभी प्रकार की आवश्यक वस्तुओं की सुविधा श्रीनगर में उपलब्ध है।

श्रीनगर से आगे रुद्र प्रयाग की ओर बढ़ने से पहले हम उचित समझते हैं कि श्रीनगर के समीपवर्ती कुछ विशिष्ट मन्दिरों का विवरण भी यात्रियों की जानकारी हेतु प्रस्तुत करें। श्रीनगर में जहां पर पौड़ी और ऋषिकेश के दोनों मार्ग आकर मिलते हैं ठीक उसी स्थान से दाहिनी तरफ श्रीनगर-बुधाणी खिर्सू मोटर मार्ग गया है। इस मार्ग पर चलते हुए खोला गांव पड़ता है। इस गांव के ऊपर पर्वत शिखर पर अष्टावक्र मन्दिर है। पुराणों में इस मन्दिर का नाम वह्नि पर्वत कहा गया है। ऐसा कहा जाता है कि यह वही स्थान है जहां पर अष्टावक्र मुनि ने शिवाजी की आराधना की थी। श्रीनगर से तीन मील की पैदल चढ़ाई इस मन्दिर तक जाती है।

इसी रास्ते पर आगे बढ़ते हुए बुधाणी ग्राम आता है। इस बुधाणी ग्राम से आधा किलोमीटर की दूरी पर देवलगढ़ नाम का अत्यन्त प्राचीन स्थान है।

## देवलगढ के मन्दिर

गढ़वाल के प्रसिद्ध राजा अजयपाल ने चांदपुर की गढ़ी को छोड़कर 'देवलगढ़' को ही अपनी राजधानी बनाया था। श्रीनगर राजधानी देवलगढ़ के बाद में बनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



थी । पौराणिक कथाओं के अनुसार देवलगढ़ राजा देवल की तपोभूमि थी । आज यहां निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण मन्दिर हैं ।

### गौरजा मन्दिर

गौरजा, मन्दिर की गणना भारत के प्राचीन देवी सिद्धपीठों में की जाती है । इस मन्दिर में भगवती गौरी, महिषमर्दिनी की मूर्तियां स्थापित हैं । यह मन्दिर शाक्त परम्परा का है । इस मन्दिर में पहले शाक्त तान्त्रिकों के बाद नाथ सम्प्रदाय का प्रभाव रहा । अजयपाल नाथ सम्प्रदाय के प्रमुख अनुयायी रहे हैं । यह प्रसिद्ध सिद्धपीठ है । विषुवत् संक्रान्ति को यहां देवी की पूजा होती है और मेला लगता है ।

### सत्यनाथ मन्दिर

गौरजा मन्दिर के पीछे सत्यनाथ का प्राचीन मन्दिर है, कहते हैं कि राजा अजयपाल ने इसे बनवाया था । अजयपाल ने इस स्थान पर राजराजेश्वरी और सत्यनाथ भैरों की स्थापना की थी । इस मन्दिर में काल भैरों भुवनेश्वरी, सत्यनाथ आदि देवताओं की मूर्तियां हैं । मन्दिर के द्वार पर भी अनेक मूर्तियां हैं ।

### मुरली मनोहर मन्दिर

गौरजा मन्दिर से कुछ ऊपर जाने पर मुरली मनोहर कृष्ण का एक छोटा-सा मन्दिर है । इसमें भगवान् कृष्ण की मुरली बजाते हुए मूर्ति प्रतिष्ठित है । यह किसी समय वैष्णवों का महत्त्वपूर्ण स्थान था ।

### दत्तात्रेय मन्दिर

मुरली मनोहर मन्दिर से कुछ ही ऊपर भगवान् दत्तात्रेय का मन्दिर है । वैष्णवों द्वारा भगवान् दत्तात्रेय को विष्णु अवतार माना जाता है । परन्तु गढ़वाल में शैव लोग दत्तात्रेय का पूजन शिव के व्रत के रूप में तथा योग दर्शन के अधिकार के रूप में करते हैं । दत्तात्रेय का यह बहुत प्राचीन स्थान माना जाता है । इसको शिवालय या अखाड़ा भी कहा जाता है ।

### भैरों गुफा

सत्यनाथ मन्दिर के पश्चिमी किनारे पर पहाड़ी से कुछ नीचे उतरकर एक गुफा मिलती है जिसको भैरों गुफा कहते हैं । गुफा के प्रवेश द्वार पर भैरोंजी की मूर्ति अंकित है । गढ़वाल में ऐसा कहा जाता है कि इस गुफा से [illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


एक सुरंग थी और देवलगढ़ की रानी प्रतिदिन गंगा-स्नान के लिए इसी सुरंग से आती-जाती थी।

## राजराजेश्वरी मन्दिर

देवलगढ़ का सबसे प्रसिद्ध और ऐतिहासिक राजराजेश्वरी का मन्दिर है। पन्द्रहवीं शताब्दी में जब गढ़वाल के राजा अजयपाल ने अपनी राजधानी देवलगढ़, बनाई थी तभी इस मन्दिर की स्थापना की थी। ऐसा कहा जाता है कि राजा का यह अपना निवास स्थान था और उसी के एक भाग में मन्दिर की प्रतिष्ठा की गई थी। परन्तु जब देवलगढ़ से श्रीनगर राजधानी आ गई तो यह सारा भवन राजराजेश्वरी के मन्दिर के रूप में प्रयोग होने लगा और मन्दिर के पुजारी भी इसमें रहने लगे।

इस मन्दिर के तीन खण्ड हैं। तीसरी मंजिल के दाहिने किनारे पर राज-राजेश्वरी का मन्दिर है। यहां देवी की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियां बनी हुई हैं। जिनमें स्वर्ण की मूर्ति सबसे सुन्दर है। इस मन्दिर में महिषासुर मर्दिनी, त्रिपुरासुर सुन्दरी, सिंहवाहिनी की पाषाण प्रतिमाएं देखने योग्य हैं। देवलगढ़ में अनेक मूर्तियां हैं। यहां के मन्दिर में भव्य मूर्तियां और यन्त्र भी हैं।

इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए गढ़वाल के अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण उभरते हुए नगर खिर्सू पहुंचते हैं। जिसकी सुन्दरता की तुलना कश्मीर के 'पहलगांव' से भी अधिक आकर्षक आंकी जाती है। खिर्सू से एक रास्ता खेड़ाखाल कांडई होते हुए ऋषिकेश-श्रीनगर-बदरीनाथ के मुख्य मार्ग पर खांकरा नामक स्थान पर मिल जाता है। दूसरा मार्ग पिठुण्डीखाल होते हुए जिला चमोली के नौटी, कर्ण प्रयाग की ओर बन रहा है। अभी पिठुण्डीखाल तक ही मोटरें जाती हैं।

इसी मार्ग पर रुद्र प्रयाग के ऊपर सबसे ऊंची चोटी पर हरियाली देवी का भव्य स्थान है। इस स्थान से हिमालय के सभी क्षेत्र बिलकुल सामने दिखाई देते हैं। हरियाली के मन्दिर से बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरी और यमुनोत्तरी के सभी क्षेत्र बिलकुल साफ और अतिसमीप दिखाई देते हैं। तीसरा मार्ग खिर्सू से चौबट्टाखाल होते हुए बुवाखाल से पौड़ी मिल जाता है। इसी मार्ग पर चौबट्टा-खाल-बुवाखाल मार्ग के ऊपर पर्वत श्रृंखला पर मां भगवती का मन्दिर है जिसके दर्शन करने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। उलखा देवी के नाम से इस मन्दिर की स्थापना हुई है। यह भी गढ़वाल के शाक्त पीठों में एक प्रमुख पीठ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



# सुमाड़ी के मन्दिर

देवलगढ़ के बाद सुमाड़ी महत्त्वपूर्ण स्थान है। सुमाड़ी का प्राचीन नाम सुरमणि था। सम्वत् 712 में गुजरात के राम विलोचन काला देवलगढ़ के राजा के यहां आये थे। उनकी विद्वता, पांडित्य और योग्यता से प्रभावित होकर देवलगढ़ नरेश ने उन्हें सुरमणि गांव भेंट किया था। प्राचीन समय में बदरीनाथ की यात्रा श्रीनगर से सुमाड़ी देवलगढ़ होकर की जाती थी। आदि शंकराचार्य ने इसी मार्ग से चलकर बदरीनाथ धाम तक की यात्रा की थी।

लक्ष्मीनारायण मन्दिर—चारों ओर दस मन्दिरों के मध्य एक मन्दिर है। इन मन्दिर समूहों का सम्मिलित नाम लक्ष्मीनारायण मन्दिर है। इन मन्दिरों में लक्ष्मी सहित विष्णु की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियां स्थापित हैं। एक मन्दिर में शिवलिंग, एक मन्दिर में गरुड़ और एक मन्दिर में लक्ष्मी और गणेश की मूर्तियां हैं। सूर्य की मूर्ति विशेष रूप से आकर्षक है। वास्तुकला और मूर्तिकला की दृष्टि से सुमाड़ी की मूर्तियों का विशेष महत्त्व है।

**गौरजा मन्दिर**

सुमाड़ी गांव के बीच और लक्ष्मीनारायण मन्दिर से कुछ ही ऊपर गौरजा (गिरिजा) का मन्दिर है। ऐसा कहते हैं, पं० राम विलोचन काला ने इसी स्थान पर गौरजा देवी को प्रतिष्ठित किया था। कुछ समय के बाद बुधाणी के बहुगुणा ब्राह्मण गिरिजा (गौरजा) को देवलगढ़ ले गए। तब से सुमाड़ी के मन्दिर में गौरजा की निराकार (मूर्तिरहित) पूजा होती है। सुमाड़ी को गौरजा का पितृगृह और देवलगढ़ को पतिगृह के रूप में मान्यता है।

सुमाड़ी गांव के ऊपर गोलक्ष पर्वत की चोटी पर नगरासनी देवी का मन्दिर है। इस देवी को इन्द्रासनी देवी के रूप में भी मान्यता है। महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति इस मन्दिर में है। यह मूर्ति भव्य है।

श्रीनगर क्षेत्र तीर्थयात्रा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। जहां इसके एक ओर सुमाड़ी और देवलगढ़ महत्त्वपूर्ण है। वहीं देव प्रयाग की ओर भिल्लकेदार भी धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट स्थान 'विल्वकेदार' ही 'भिल्लकेदार' है। अलकनन्दा के पार ऊंची चोटी पर चन्द्रवदनी का विख्यात शक्ति पीठ है। मनोकामना पूर्ति हेतु इस पीठ में कई साधक पहुंचते हैं। भक्तों की तो यहां सदैव भीड़ लगी रहती है।

अलकनन्दा के विशिष्ट नगरों में श्रीनगर के दर्शन करने के बाद हम रुद्र प्रयाग की ओर प्रस्थान करते हैं। श्रीनगर से 5 किलोमीटर की दूरी पर शकुरना है। शकुरना में शुक्रताल है। ऐसा कहा जाता है कि शंकराचार्य ने इस स्थान पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


तप कर महाविद्या की प्राप्ति की थी । कुछ ही दूर जाने पर फरासू गांव आता है। इस गांव के नीचे अलकनन्दा के किनारे परशुराम कुण्ड है। इस कुण्ड के समीप परशुराम ने तप किया था। परशुराम के नाम पर ही इस गांव का नाम परशु से फरासू पड़ गया

फरासू से आगे कलियासौड़ नामक स्थान है। इस स्थान से लगभग एक किलोमीटर अलकनन्दा के किनारे धारीदेवी का पवित्र सिद्धपीठ है। यह कहा जाता है कि काली मठ से काली की मूर्ति बहकर यहां आ गई थी। काली मठ की काली का ही यह स्थान है। यहां की विशेषता यह है कि काली की मूर्ति चबूतरे में प्रतिष्ठित है। मूर्ति की विशेषता यह है कि प्रातः इसमें बाला, मध्याह्न में युवती और संध्या समय वृद्धा का रूप स्पष्ट दिखाई देता है। यह अद्भुत शक्ति पीठ है। दूर-दूर से भक्तगण काली के दर्शन करने धारी देवी पहुंचते हैं। इस अलौकिक स्थान के समीप कुछ गुफायें हैं—इसमें साधु-सन्त तपस्यारत देखे जाते हैं।

कलियासौड़ में बस नहीं रुकती। काली के उपासक यहां उतरकर अलकनन्दा में स्नान कर इस स्थल पर अवश्य पहुंचते हैं।

कलियासौड़ से चलकर यात्री रुद्र प्रयाग पहुंचते हैं। यहां से केदारनाथ और बदरीनाथ के लिए रास्ते अलग हो जाते हैं।

## रुद्र प्रयाग

रुद्र प्रयाग श्रीनगर से 34 किलोमीटर की दूरी पर अलकनन्दा और मन्दाकिनी के संगम पर बसा हुआ अति सुन्दर स्थान है। भगवान् शिव 'रुद्रनाथ' के रूप में यहां विराजमान हैं। स्कन्दपुराण के केदार खण्ड के अनुसार इसी स्थान—रुद्र प्रयाग में नारद ने भगवान् शिव की आराधना की थी, नारद को संगीत विद्या की शिक्षा भगवान् शंकर ने यहीं (रुद्र प्रयाग में) दी थी। नारद ने शिव से 'वीणा' यहीं पर प्राप्त की थी।

रुद्रनाथ शिव) का मन्दिर अत्यन्त रमणीय स्थान पर स्थित है। सीढ़ियों से उतरकर संगम पर यात्री स्नान करते हैं। मन्दिर में जाने से पहले एक छोटा-सा जगदम्बा का मन्दिर है। संस्कृत महाविद्यालय है।

अलकनन्दा का पुल पार करते ही दायीं ओर रुद्र प्रयाग, नागनाथ पोखरी-गोपेश्वर मार्ग जाता है। इसी मार्ग पर 4 किलोमीटर की दूरी पर कोटेश्वर महादेव की गुफा है। यह गुफा अलकनन्दा के अति निकट दायीं ओर स्थित है। गुफा के अन्दर अनेक शिवलिंग हैं जिन पर निरन्तर पानी गिरता रहता है। इस गुफा से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर उमरा नारायण का मन्दिर है। कहते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



हैं इस मन्दिर के समीप सदैव नाग रहते हैं । दोनों स्थलों पर धर्मशालायें हैं ।

रुद्र प्रयाग-पोखरी-गोपेश्वर मोटर मार्ग में मैखण्डा नामक प्रसिद्ध देवी का स्थान है । मोहनखाल से पहले पर्वत श्रृंखला पर स्वामी कार्तिकेय का मन्दिर है । पर्वतशिला पर स्वामी कार्तिकेय की कंकाल बनी आकृति दर्शकों को लुभा देती है । यही प्रसिद्ध 'सिद्ध पीठ' है । मोहनखाल से आगे पोखरी है—यहां पर अब उभरता हुआ नगर है । यहीं से एक मार्ग गोपेश्वर और एक मार्ग कर्ण प्रयाग को जाता है । नागनाथ का यहां पर भव्य मन्दिर है । इसीलिए इस स्थान का नाम नागनाथ पोखरी है ।

रुद्र प्रयाग में यात्रियों एवं पर्यटकों को ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था है । रुद्र प्रयाग में प्रवेश करते ही बदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति का विश्राम-गृह है । पुल पार संगम के समीप काली कमली की पुरानी धर्मशाला है । सार्वजनिक निर्माण विभाग का विश्राम भवन भी उपलब्ध है । गढ़वाल विकास निगम के विश्राम भवन की सेवायें भी इस दिशा में ली जाती हैं । बाजार में कई अच्छे भोजन प्राप्ति के होटल हैं, जिनमें टूरिस्ट होटल सर्वोत्तम हैं ।

रुद्र प्रयाग उभरता हुआ नगर है । यहां इण्टर कॉलेज छात्र एवं छात्राओं का अलग-अलग है । भूकम्प वेधशाला के अतिरिक्त डी० जी० वी० आर० का कार्यालय भी है । रुद्र प्रयाग एक ऐसा नगर है जहां यात्रियों को अपनी आवश्यकताओं की सभी वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैं ।

## रुद्रप्रयाग से केदारनाथ की ओर

धार्मिक दृष्टि से मान्यता है कि केदार-दर्शन के बाद ही बदरी-दर्शन का पुण्य लाभ मिलता है —तो हमें पहले केदारनाथ के दर्शनार्थ यहीं (रुद्र प्रयाग) से चलना चाहिए ।

जब तक मोटर मार्ग नहीं था, यात्री पैदल यात्रा चट्टियों में ठहरकर करते थे । अब गौरीकुण्ड तक मोटर मार्ग बन गया है । ऋषिकेश, कोटद्वार, और टिहरी से निरन्तर बसें चलती रहती हैं । यात्री प्राय: बीच के स्थानों पर रुकते तक नहीं हैं । अब बीच में पड़ने वाले महत्त्वपूर्ण स्थानों को यात्री अथवा पर्यटक देखना भी नहीं चाहते । फिर भी कुछ स्थानों का विशेष धार्मिक महत्त्व है—इसलिए इन स्थलों का संक्षिप्त परिचय देना उचित प्रतीत होता है ।

छतौली में अलसतरंगिणी और मन्दाकिनी का संगम होता है । इस संगम को सूर्य प्रयाग कहते हैं ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

रुद्र प्रयाग से तिलवाड़ा 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । यह चमोली

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



और टिहरी का साझा बाजार है। यहीं पर टिहरी-धनसाली-चिरबटिया मयाली मोटर मार्ग आकर रुद्र प्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग में मिल जाता है। तिलवाड़ा से एक पैदल मार्ग टिहरी जिले के जाखाल नामक स्थान को होता हुआ 'मैठाणा' सिद्धपीठ को जाता है। यहीं से कुर्मासिनी देवी के प्राचीन मन्दिर को भी मार्ग जाता है। यहां से मन्दिर सात-साढ़े सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सूर्योदय का दृश्य यहां से मनोरम दिखाई देता है।

## अगस्त्य मुनि

रुद्र प्रयाग से 20 किलोमीटर की दूरी पर मन्दाकिनी घाटी का प्रसिद्ध स्थान अगस्त्य मुनि स्थित है। समुद्र को पी जाने के प्रायश्चित से मुक्त होने के लिये महर्षि अगस्त्य ने यहीं तप किया था। तपस्या की सफलता के बाद ही वे यहां से दक्षिण भारत की ओर गए थे। तभी से उनके नाम से इस स्थान का नाम अगस्त्य मुनि पड़ गया। यहां पर अगस्त्य मुनि का प्राचीन मन्दिर है जिसमें अगस्त्य मुनि की ताम्रमयी मूर्ति है। मूर्ति के पास कटार और दोनों तरफ दो शिष्यों की सुन्दर मूर्तियां हैं।

अगस्त्य मुनि में विशाल मैदान है। पहले यहां हवाई जहाज उतरते थे, आज भी यहां सुन्दर हवाई-पट्टी का निर्माण हो सकता है। यहां सुन्दर बाजार, काली कमली की धर्मशाला, इण्टर कॉलेज, डिग्री कॉलेज और विकास खण्ड का मुख्यालय है, विषुवत् संक्रान्ति को यहां बहुत बड़ा मेला लगता है। जिसमें चमोली और टिहरी जनपद के हजारों नर-नारी सम्मिलित होते हैं। यहां से 9 किलोमीटर की दूरी पर स्कन्द पर्वत पर स्वामी कार्तिकेय का मन्दिर है।

अगस्त्य मुनि से एक किलोमीटर की दूरी पर नारायण मन्दिर है जिसमें विष्णु की दिव्य मूर्ति है। इस स्थान को 'छोटा नारायण' कहते हैं। इसी के पास एक रुद्राक्ष का वृक्ष है जो इस क्षेत्र में अकेला वृक्ष है। रुद्राक्ष का यह वृक्ष श्री बच्चीराम गोस्वामी के आंगन में है जिससे उन्हें सालाना अच्छी आमदनी होती है। बेडूबेगड के पार यह वृक्ष है।

चन्द्रापुरी जाने पर हमें चन्द्रा नदी और मंदाकिनी के संगम के दर्शन होते हैं। यहां पर चन्द्रशेखर शिव तथा दुर्गा जी के मन्दिरों के दर्शन होते हैं। केदारनाथ की ओर आगे बढ़ने पर भीरी नामक स्थान आता है। यहां पर भीमसेन का मन्दिर है। यहां से टिहरी और बूढ़ा केदार को पैदल मार्ग जाता है।

कुण्ड अगस्त्य मुनि से 15 किलोमीटर दूर मन्दाकिनी के बायें तट पर स्थित है। यहां से एक मार्ग केदारनाथ और दूसरा [illegible] होकर गोपेश्वर चमोली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



जाता है। पैदल यात्रा के समय कुण्ड चट्टी में विशेष चहल-पहल रहती है।

## गुप्त काशी

कुण्ड चट्टी से मन्दाकिनी के पुल को पार कर 5 किलोमीटर की दूरी पर चढ़ाई के मार्ग को तय करने के पश्चात् गुप्त काशी (1479 मीटर) की सुन्दर बस्ती में प्रवेश करते ही सामने हिमालय के भव्य दर्शन होते हैं। प्राचीन समय में यहां पर ऋषियों ने शिव की प्राप्ति हेतु तप किया था। ऐसी भी कथा कही जाती है कि पाण्डव शंकर के दर्शन करने के लिए काशी (वाराणसी) गये थे। शिव (शंकर) ने उन्हें दर्शन देना उचित नहीं समझा और यहां आकर गुप्त रूप से रहने लगे। तभी से इस स्थान का नाम गुप्त काशी हुआ।

गुप्त काशी में भगवान् विश्वनाथ का भव्य मन्दिर है। मन्दिर में विश्वनाथ का स्वयंभू लिंग है। नन्दीश्वर, पार्वती और नन्दी की मूर्तियां देखने योग्य हैं। मन्दिर के सामने मणिकर्णिका कुण्ड है जिसमें दो जल-धारायें गिरती रहती हैं। ऐसा विश्वास है कि ये दोनों जल-धारायें गंगा-यमुना ही हैं।

अर्द्धनारीश्वर का मन्दिर भी यहां का सुन्दर मन्दिर है। यहाँ पर धर्मशाला के अलावा गढ़वाल मण्डल विकास निगम का विश्रामालय और सार्वजनिक विभाग का विश्राम गृह भी है।

गुप्त काशी के अतिनिकट बामसू व शोणितपुर गांव है। इन्हीं गांवों में केदारनाथ के तीर्थ पुरोहित रहते हैं। ऐसी मान्यता है कि वाणासुर की राजधानी बामसू में ही थी। गुप्त काशी की बस्ती से नीचे लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर विद्यापीठ नाम की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था है जहां आयुर्वेद, संस्कृत एवं ज्योतिष की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है।

## काली मठ एवं मध्य महेश्वर की ओर

काली के उपासक, शिव के भक्त और प्रकृति के प्रेमी गुप्त काशी से पैदल चल कर काली मठ और मद महेश्वर (मध्य महेश्वर) की यात्रा करने निकल पड़ते हैं। पैदल यात्रा का विवरण इस प्रकार है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



| स्थान | ऊंचाई | दूरी | आवासीय व्यवस्था |
|---|---|---|---|
| गुप्त काशी | 1479 मीटर | —— | धर्मशाला, विश्राम गृह |
| काली मठ | 1463 मीटर | 6 कि० मी० | धर्मशाला |
| रॉसी | 1765 मीटर | 7 कि० मी० | ——— |
| गौन्दर | 2073 मीटर | 6 कि० मी० | —— |
| मद महेश्वर (मध्यमहेश्वर) | 3289 मीटर | 11 कि० मी० | धर्मशाला |

गुप्त काशी से काली के भक्त काली मठ प्रातःकाल पहुंच जाते हैं। मार्ग उतराई का है। मन्दाकिनी के पुल को पार कर थोड़ी-सी चढ़ाई चढ़ने के बाद फिर मार्ग सीधा हो जाता है। 'काली मठ' प्रसिद्ध शक्ति पीठ है जो काली नदी की बायें ओर सरस्वती नदी और मनलीपयार के संगम पर स्थित है। काली मठ में महाकाली, महालक्ष्मी, हर-गौरी और सरस्वती के मन्दिर हैं। काली मन्दिर में भगवती काली की शव-वाहिनी मूर्ति है। उसके पास ही एक कुण्डी है जिसमें काल रात्री को काली को बलि पूजा दी जाती है। यहीं अखण्ड अग्नि की पूजास्थली है। कथा है कि यहीं पर इन्द्रादि देवताओं ने रक्तबीज दैत्य के वध की कामना से भगवती की तपस्या की थी। भगवती ने काली रूप में उन्हें दर्शन देकर अभय दान दिया था। फिर काली ने यहीं पर कोटि माहेश्वरी तथा राकेश्वरी देवी के साथ मिलकर रक्तबीज और शुम्भ-निशुम्भ पर विजय प्राप्त की थी। तभी से यह स्थान काली पीठ के नाम से विख्यात है।

काली मठ में शिवलिंग, गणेश, मयूरारूढ़ कार्तिकेय के अतिरिक्त कई खण्डित मूर्तियां हैं, यहां का शिलालेख और हर-गौड़ी की मूर्ति पुरातात्विक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। राहुल ने अपनी पुस्तक 'गढ़वाल' (पृष्ठ 442) में स्पष्ट लिखा है—"मैं इसे अतिशयोक्ति नहीं समझता, यदि यह कहूं कि आज सारे भारत में इतनी सुन्दर अखण्ड हर-गौरी की मूर्ति कहीं भी नहीं है। युगल मूर्ति 40 इंच लम्बी तथा 24 इंच चौड़ी एक शिला से बनाई गई है। मैं मेखण्डा की खण्डित हर-गौरी की मूर्ति से ही प्रभावित था, किन्तु यहां मैंने शोभा और सौन्दर्य में अद्वितीय इस हर-गौरी की मूर्ति को देखा। इसकी कोमल बंकिम रेखाओं में वही सौन्दर्य भरा है जो अजन्ता के चित्रों में दिखाई पड़ता है। बल्कि पत्थर में ऐसा तत्वंग उत्कीर्ण करना सम्भव हो सकता है, इस पर आंखें विश्वास नहीं कर सकती थीं, ललितासनस्थ हर के वामांक में अनुपम सौन्दर्य राशि की मूर्ति बनकर भूधरसुता विराजमान हैं, शिव चतुर्भुज हैं किन्तु गौरी साधारण मानवी की तरह द्विभुज, नीचे गणेश और मयूरारूढ़ कार्तिकेय की मूर्तियां हैं।" यहां और भी सुन्दर-सुन्दर मूर्तियां हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



नवरात्रि में यहां विशेष पूजा होती है। शक्ति के उपासक यहां इन्हीं दिनों विशेष प्रकार की साधनाएं करते रहते हैं। 'दुर्गासप्तशती' का पाठ भी इन्हीं दिनों होता है।

काली मठ से कुछ ही दूरी पर कालशिला है। यहां 64 यन्त्र विभिन्न देवियों के बताए जाते हैं। पौराणिक कथा है कि रक्तबीज से युद्ध के समय इन्हीं यन्त्रों से शक्तियां प्रकट हुई थीं।

काली मठ से 7 किलोमीटर की दूरी पर रॉसी में राकेश्वरी देवी का मन्दिर है। यहां पर एक छोटी-सी धर्मशाला है। काली मठ से मद महेश्वर जाने के मार्ग पर ही रॉसी से 3 किलोमीटर आगे कोटि महेश्वरी का मन्दिर है। ये दोनों मन्दिर काली के सहायक देवियों के मन्दिर हैं। जिन्होंने काली के साथ रह कर रक्तबीज दैत्य और शुम्भ-निशुम्भ दैत्यों का वध करने में सहायता की थी। इस घाटी की प्राकृतिक सुन्दरता अत्यन्त मनमोहक है।

## पंच केदार

काली मठ से 25 किलोमीटर की दूरी पर मद महेश्वर केदार तीर्थ है। गढ़वाल मण्डल में पंच केदार प्रसिद्ध हैं। प्रथम केदारनाथजी, दूसरे मद महेश्वर, तीसरे तुंगनाथ, चौथे रुद्रनाथ और पांचवें कल्पेश्वर केदारनाथ के प्रसिद्ध केन्द्र हैं।

पंच केदारों में मद महेश्वर का दूसरा स्थान है। जहां पर शिवजी की नाभि प्रकटित हुई थी। यहां पर नाभि की आकृति का शिवलिंग स्थापित है। मद महेश्वर का यहां प्राचीन मन्दिर है और एक धर्मशाला भी है। यहां के पुजारी की नियुक्ति केदारनाथ का रावल करता है। इसके अलावा गाण्डार गांव के पंवार लोग मन्दिर में भेग पकाने और चन्दन घोंटने का काम करते हैं।

मद महश्वर घाटी अपनी सुन्दरता के लिए विख्यात है। 3289 मीटर की ऊंचाई पर स्थित मद महेश्वर अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। इस घाटी में सुन्दर-सुन्दर पर्वतीय मखमली घास के फैले हुए क्षेत्र हैं। जिसमें नाना प्रकार के फूल जुलाई से सितम्बर महीने तक खिले रहते हैं। यहां से चौखम्भा केदारनाथ आदि पर्वतों की बर्फ से ढकी हुई चोटियां साफ दिखाई देती हैं।

पैदल चलने वाले और प्रकृति के प्रेमी तथा धार्मिक भावना के लोग इस क्षेत्र में निरन्तर आते रहते हैं। इस मद महेश्वर का क्षेत्र अत्यन्त मनोहारी है। प्रकृति-प्रेमी तो यहां आते ही हैं, परन्तु नृत्य की शिक्षा को प्राप्त करने वाले कई एक साधकों को हमने यहां नृत्य की साधना करते हुए देखा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



# गुप्त काशी से केदारनाथ की ओर

गुप्त काशी से 3 किलोमीटर की दूरी पर नाला चट्टी है। यह नाला गांव के नाम से भी प्रसिद्ध है। पैदल यात्रा के समय यात्री यहां निवास करते थे। प्राचीन कथा है कि यहां पर राजा नल ने अपनी पत्नी दमयन्ती के साथ भगवान् शंकर की आराधना की थी। यहां पर भगवती ललिता देवी तथा गरुड़ का प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर के पास ही शिव-पार्वती की पाषाण प्रतिमाएं हैं। नाला से ऊपर गणतर गांव में नालेश्वर मन्दिर है। ऐसी जनश्रुति है कि यहां पर राजा नल के गुरु का निवास था।

## नारायण कोटि

नाला चट्टी से 3 किलोमीटर की दूरी पर नारायण कोटि नामक स्थान है। यहां भगवान् लक्ष्मीनारायण का प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिर में विष्णु की चतुर्भुज गरुड़ारूढ़ भव्य मूर्ति है। मन्दिर के पास में ही ठण्डे जल के दो झरने और एक कुण्ड है। यहां के स्व० पण्डित विशालमणि शर्मा ने यहां की प्राचीन मूर्ति कला और साहित्य के ऊपर विशेष काम किया है।

नारायण कोटि से कुछ ही आगे चलकर दो बड़े मन्दिर मिलते हैं। उनमें से एक मन्दिर को भद्रेश्वर महादेव का मन्दिर बताया जाता है।

नारायण कोटि से ढाई किलोमीटर की दूरी पर व्योंग चट्टी है। यहां पर महिषमर्दिनी का प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर में भगवती दुर्गा की आठ भुजाओं वाली भव्य मूर्ति है। प्राचीन कथा के अनुसार महिषासुर दैत्य से त्रस्त होकर ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों देव जब एक हो गए तो उन तीनों से मिले हुए एक रूप से एक देवी उत्पन्न हुई, जिसने महिषासुर दैत्य को मारकर देवताओं को उसके आतंक से मुक्ति दिलाई।

## मैखण्डा

व्योंग चट्टी से प्रकृति के सुन्दर दृश्यों के बीच होते हुए जब हम फाटा की ओर बढ़ते हैं तो बीच में मैखण्डा पड़ता है। कहते हैं कि महिषासुर की राजधानी यहीं थी। महिषमर्दिनी देवी ने महिषासुर के खण्ड-खण्ड करके यहीं फेंका था। इसी लिए इस क्षेत्र को मैखण्डा के नाम से जाना जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## फाटा

मैखण्डा से लगभग ढाई किलोमीटर की दूरी पर फाटा एक उभरता हुआ नगर है। यहां पर डाकखाना, चिकित्सालय व डाक बंगलों की सुविधा है। पास ही जमदग्नि का आश्रम है जहां स्वयंभू लिंग है।

फाटा से जैसे ही हम आगे बढ़ते हैं प्रकृति का अद्भुत सौन्दर्य दिखाई देने लगता है। शंखमुखी देवदार के पेड़ दिखाई देते हैं। वहां चीड़ आदि सुन्दर वृक्षों के भी दर्शन होते हैं। प्रकृति के मध्य विचरते हुए जब हम आगे बढ़ते हैं तो रामपुर नामक स्थान पर पहुंच जाते हैं। रामपुर ही एक ऐसा स्थान है जहां पर गंगोत्तरी से आने वाले पैदल यात्री केदारनाथ की ओर आते हैं। रामपुर में रहने की अच्छी सुविधा है। रामपुर से दो किलोमीटर की दूरी पर सीतापुर है। रामपुर से बायीं ओर का मार्ग त्रियुगी नारायण, दायीं ओर का मार्ग सोन प्रयाग की ओर चला जाता है। त्रियुगी नारायण के रास्ते में साकम्बरी देवी का मन्दिर है। महाभारत में कथा आयी है कि यहां पर देवी ने मधुर साक खाकर तप किया था इसीलिए उसका नाम साकम्बरी देवी पड़ा। इस देवी के मन्दिर में चीर चढ़ाने का महात्म्य है। गंगोत्तरी से पैदल मार्ग का विवरण हम पहले कर चुके हैं। यहां से हम दोनों ओर से आने वाले यात्रियों, पर्यटकों एवं प्रकृति के पुजारियों को साथ ही लेकर केदारनाथ की ओर चलते हैं।

## सोन प्रयाग

रामपुर से थोड़ी ही दूरी पर सोन प्रयाग नामक वासुकी गंगा व मन्दाकिनी का संगम मिलता है। संगम पर कालीश महादेव के दर्शन होते हैं, यहीं पर गरुड़जी की मूर्ति भी समीप ही दिखाई देती है। वासुकी गंगा को सोन गंगा भी कहते हैं। इस स्थान पर मन्दाकिनी की धारा का ऐसा स्वर सुनाई देता है लगता है कि मानो दिव्य वाद्य यन्त्रों का वादन हो रहा है। यहां से प्रकृति का स्वरूप बदलने लगता है।

## सिर कटा गणेश

मोटर मार्ग से हम गौरी कुण्ड तक पहुंच जाते हैं। गौरी कुण्ड तक पहुंचने के पहले मोटर मार्ग से हटकर पुराने पैदल मार्ग में हमें विनायक तीर्थ के दर्शन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



होते हैं। पौराणिक कथा है कि गौरी तीर्थ (गौरी कुण्ड) में ऋतु स्नान करने से पहले भगवती पार्वती ने अपने योग बल से गणेश को उत्पन्न कर इस केदार क्षेत्र के दरवाजे पर द्वारपाल नियुक्त किया था। गणेश ने अन्य व्यक्तियों की भांति जब भगवान् शंकर को भी गौरी तीर्थ में प्रवेश करने से रोका तो शिव ने गणेश का सिर काट डाला था। बाद में पार्वती के अनुरोध से शिवशंकर ने हाथी का सिर काटकर पुनः गणेश को जीवित कर दिया था। तभी से यहां पर विनायक तीर्थ हो गया और आज भी 'मुण्ड कटा गणेश' की प्रतिमा यहां पर स्थापित है। कट्टर धर्मावलम्बी आज भी विनायक तीर्थ में उपासना करने के बाद ही गौरी कुण्ड में अर्थात गौरी तीर्थ में प्रवेश करते हैं।

## गौरी कुण्ड

सोन प्रयाग से गौरी कुण्ड 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह वही स्थान है जहां पर कहा जाता है कि पार्वती ने सबसे पहले ऋतु-स्नान किया था। यहां पर गरम जल और शीतल जल के दो कुण्ड हैं। ऐसी भी कथा है कि इसी स्थान पर भगवती पार्वती का जन्म भी हुआ था। इस कुण्ड से दक्षिण की ओर उमा महिषासुरशिला है। गौरी का मन्दिर है, साथ ही राधा-कृष्ण तथा ज्वाला भवानी की मूर्तियां भी यहां मन्दिर में मिलती हैं।

बस या कार की यात्रा गौरी कुण्ड पर समाप्त हो जाती है। यहां आवश्यक होटल और धर्मशालाएं हैं। खाने व ठहरने की अच्छी व्यवस्था है।

## केदारनाथ की ओर

गौरी कुण्ड में स्नान पूजा करने के बाद यात्री पैदल चल पड़ते हैं। गौरी कुण्ड से केदारनाथ 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गौरी कुण्ड से 3 किलोमीटर की दूरी पर चीरवासा है। जिस प्रकार गौरी तीर्थ की रक्षा करने वाले विनायक (गणेश) हैं। उसी तरह केदारनाथ की सुरक्षा के अधिकारी के रूप में भैरव को भी माना जाता है। इसी चीरवासा में भैरव का स्थान है। यहां पर शिव के द्वारपाल एवं सुरक्षा अधिकारी भगवान् भैरव को चीर चढ़ाने का विशेष माहात्म्य है।

इसी स्थान से ऊपर चोटी पर नन्दी पर्वत के रक्षक और शिवजी के दूसरे महत्त्वपूर्ण द्वारपाल नन्दी का स्थान है। नन्दी पर्वत की चोटी से गौरी कुण्ड पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


सीधे दृष्टि पड़ती है। महाकवि कालिदास ने इसका वर्णन बड़े सुन्दर शब्दों में अपने कुमार सम्भव में किया है।

## रामबाड़ा

चीरवासा से रामबाड़ा तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्रकृति के सुन्दर वातावरण के मध्य में यह स्थान स्थित है। बहुत से यात्री रामबाड़ा में ही निवास करते हैं। रात्रि निवास के लिए काली कमली का व अन्य स्थानीय होटल उपलब्ध हैं। रामबाड़ा से 7 किलोमीटर की चढ़ाई पार करने के बाद यात्री देव देखनी (गरुड़ चट्टी) नामक स्थान पहुंच जाते हैं। गरुड़ चट्टी से भगवान् केदारनाथ के दर्शन होने लगते हैं। गरुड़ चट्टी से ही यात्री केदारनाथ भगवान के जय के स्वर में जय-जयकार करते हुए बढ़ने लगते हैं। गरुड़ चट्टी से डूबते हुए सूर्य की किरणें जब केदारनाथ पर्वत की चोटी पर पड़ती हैं तो एक सुनहरा दृश्य उपस्थित हो जाता है। लगता है, भारत मां के मुकुट पर एक विलक्षण प्रकार का नगीना जड़ गया है।

गरुड़ चट्टी से रास्ता केदारपुरी की ओर चढ़ाई वाला न होकर लगभग सीधा पड़ता है। यात्री एक ओर जहां भगवान् शिवशंकर के दर्शन करने के लिए लालायित रहते हैं वहां दूसरी ओर प्रकृति के अद्भुत वातावरण में अपने आपको पाकर अत्यन्त सुख का अनुभव करते हैं।

## केदारनाथ

पुराणों के अनुसार केदारनाथ शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। केदारनाथ के तीन ओर महान् गगनचुम्बी शिखर खड़े हुए हैं। उसके बाद कोई भी रास्ता आगे के लिए नहीं दिखायी देता। ऐसा लगता है कि हम धरती के आखिरी छोर तक पहुंच चुके हैं। केदारनाथ में केदार शिखर, भारखण्ड शिखर और खरचा खण्ड हैं। इन्हीं शिखरों के नीचे केदारनाथ तीर्थ है।

केदारनाथ का विशाल मन्दिर हिमालय के मन्दिरों में सबसे श्रेष्ठ है और विशाल है। विशाल पाषाण शिलाओं से इस मन्दिर का निर्माण हुआ है। इस भव्य मन्दिर को देखकर जो कि इतनी ऊंचाई पर बना हुआ है, आश्चर्य होता है कि ऐसे भव्य कलापूर्ण ढंग से इतनी ऊंचाई पर किसने यह अद्भुत मन्दिर बनाया होगा?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



केदारनाथ मन्दिर में प्रवेश करते ही शोभा मण्डप के अन्दर उसी दीवार पर जो गर्भ गृह के द्वार पर है—द्वार के दोनों ओर शैव मूर्तियां बनी हुई हैं। मन्दिर के अन्दर शिवजी की कोई मूर्ति नहीं है। जिसको शिव लिंग कहा जाता है, वह पाषाण की त्रिभुजाकार एक विशाल शिला है। इसी की पूजा की जाती है और पूजा करने के बाद भक्तगण इसी शिला को अंकमाल देते हैं।

पुराणों के अनुसार कथा इस प्रकार कही जाती है कि जब महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ तो भगवान् वेदव्यासजी ने पाण्डवों को भगवान् शिव का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भेजा ताकि गोत्र-हत्या के पाप से उन्हें मुक्ति मिल सके। कहते हैं भगवान विश्वनाथ शिव के दर्शन करने जब पाण्डव काशी गए तो शिव ने उनको दर्शन देने से मना कर दिया और स्वयं काशी से भागकर गुप्त काशी में आकर गुप्त रूप में रहने लगे। पाण्डव उनका पीछा करते-करते गुप्त काशी में पहुंच गए। शिवजी उन्हें गोत्र-हत्या का दोषी समझते थे। अत: वे अपने परमप्रिय केदारनाथ की ओर चल पड़े। केदारनाथ में जाकर .शिव ने महिष का रूप धारण कर लिया तथा अन्य महिषों के साथ विचरण करने लगे। भीम ने शिवजी को पहचान लिया और उस शिव रूपी महिष की पूंछ पकड़ने की चेष्टा की। शिव पृथ्वी के अन्दर प्रवेश करने लगे। फिर भी पाण्डवों ने महिष का पिछला भाग पकड़ लिया। भगवान् केदारनाथ पाण्डवों पर प्रसन्न हुए और उन्हें साक्षात् दर्शन देकर पकड़े गए पृष्ठ भाग की पूजा का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गए। ऐसा कहा जाता है कि महिष के उसी पृष्ठ भाग ने शिला का रूप धारण कर लिया था और पाण्डवों की उस समय की पूजा के बाद भगवान् पशुपति केदारनाथ का अग्र भाग नेपाल में प्रकट हुआ जो पशुपतिनाथ के नाम से विख्यात है। इसी तरह उस महिष रूपी शिव का मुख रुद्रनाथ में, बाहु तुंगनाथ में, नाभि मद महेश्वर में और जटा कल्पेश्वर में प्रकट हुई थी। केदारनाथ सहित ये पांच स्थान भारतीय धर्म-शास्त्र में पंचकेदार के नाम से विख्यात है। इन पांचों केदारनाथजी की भी पूजा और महत्ता समान रूप से है।

केदारनाथ की पूजा घी, चन्दन, बिल्वपत्र तथा कल आदि फलों से की जाती है। शोभा मण्डप में जो पाण्डवों की मूर्तियां हैं यही यहां की प्रमुख शृंगार मूर्तियां हैं। इनको वस्त्रों से सजाकर यात्रियों को इनके दर्शन करवाए जाते हैं। उनकी मूर्तियां उच्च कोटि की हैं। मन्दिर के द्वार पर शृंगी-भृंगी द्वारपालों की भूर्तियां भी हैं।

केदारनाथ मन्दिर के कपाट प्राय: बदरीनाथ के कपाट खुलने से तीन-चार दिन पहले खुलते हैं। प्राय: अप्रैल के अन्त में या मई के पहले हफ्ते में केदार-नाथ के कपाट खुलते हैं। खुलने की तिथि महाशिवरात्रि के दिन ऊखीमठ के मन्दिर में निकाली जाती है। दिवाली के दूसरे दिन केदारनाथ के कपाट बन्द

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


हो जाते हैं और केदारनाथ की पूजा ऊखीमठ में छः महीने की जाती है। केदारनाथ के पुजारी दक्षिण भारत के मालावार के जंगम गोसाई (लिंगायत) जाति के ब्राह्मण होते हैं। इन पुजारियों को पुजारी न कहकर रावल कहा जाता है। रावल को एक से अधिक शिष्य रखने का अधिकार है। रावल स्वयं पूजा नहीं करता, उनके शिष्य और गुरु-भाई करते हैं।

केदार पर्वत की गोद में केदार घाटी अत्यन्त सौन्दर्यमयी है। मन्दिर के निकट ही कल-कल करने वाली मन्दाकिनी नदी बहती है और उसका उद्गम स्थान भी केदारपुरी के पास ही है। यहां के दर्शनीय स्थानों में भृगु पन्थ, मधु गंगा, क्षीर गंगा, चोरवाड़ीताल, वासुकी ताल, गुगुल कुण्ड, हंश कुण्ड, उदक कुण्ड, रैतस कुण्ड, और भैरवशिला आदि प्रसिद्ध हैं। केदारनाथ मन्दिर के बाहर परिक्रमा के पास अमृत कुण्ड ईशान कुण्ड, हंस कुण्ड और रैतस कुण्ड हैं जिनकी महिमा बहुत बतायी गई है।

## शंकराचार्य की समाधि

मन्दिर के पीछे आदि गुरु शंकराचार्य की मूर्ति है। ऐसा कहा जाता है कि यहां पर आदि गुरु शंकराचार्य ने अपना शरीर छोड़ा था। यहां पर शंकराचार्य की मूर्ति और विशाल विजयध्वज प्रतिमा बनायी गई है। यहीं पर शंकराचार्य की समाधि भी है।

## भैरव नाथ मन्दिर

केदारनाथ से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर भैरवनाथजी का मन्दिर है। केदारनाथजी के मन्दिर के खुलने से पहले भैरव की पूजा की जाती है और जब केदारनाथ मन्दिर के कपाट बन्द हो जाते हैं तब भी अन्त में भैरव की पूजा की जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जब केदारनाथ जी ऊखीमठ आ जाते हैं तो इस क्षेत्र की सारी सुरक्षा का भार भैरवनाथ के ऊपर ही निर्भर करता है।

## नव दुर्गा मन्दिर

इस मन्दिर में आज पांच मूर्तिकाएं हैं। पहले अवश्य नौ रही होंगी। इनकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



पूजा भी बड़े मनोयोग से की जाती है।

## गांधी सरोवर

इस सरोवर का नाम चोरवाड़ी ताल है। इसका नीला पानी यात्रियों ओर पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। इसमें बर्फ के बड़े-बड़े टीले पानी में तैरते रहते हैं। केदारनाथ की बर्फ से ढकी हुई चोटियां इस तालाब में बहुत ही सुन्दर दिखायी देती हैं। महात्मा गांधी की अस्थियों का विसर्जन 1948 में इस तालाब में किया गया। तब से चोरवाड़ी नामक ताल का नाम गांधी सरोवर हो गया है। मन्दाकिनी का उद्‌गम स्थल यही है।

## वासुकी ताल

केदारनाथ से 5 किलोमीटर की दूरी पर केदार क्षेत्र का अत्यन्त प्रभावकारी और आकर्षण का केन्द्र वासुकी ताल है। मन्दाकिनी और केदारनाथ के दाएं किनारे से बकरियों के रास्ते में चलते हुए वासुकी ताल तक पहुंचा जा सकता है। प्रकृति प्रेमी और साधक यात्री वासुकी ताल के अनोखे सौन्दर्य को देखना कभी भी नहीं भूलते। वासुकी ताल अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। इस ताल से 4 किलोमीटर आगे मनसी देवी का भव्य मन्दिर है जो अब भग्नावस्था में है।

## शिव-पार्वती प्रतिबिम्ब

केदारनाथ के समीप ही ब्रह्मकूट पर्वत शिखर है। शिखर पर शिव-पार्वती प्रति-बिम्ब रूप का लोग दर्शन करते हैं। शिखर पर वादलों के नीचे ध्यान से देखने पर शिवजी की जटाएं दिखायी देती हैं और उन जटाओं के नीचे शिव का मुख-मण्डल और परम् शक्ति पार्वती का मुखमण्डल भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है।

## स्वर्गारोहिणी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

केदारनाथ मन्दिर के पीछे चोटी पर एक लम्बी-सी श्वेत जलधारा दिखाई

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


दिखायी पड़ती है। इसकी दूरी केदारनाथ से लगभग 6 किलोमीटर है, यही स्थान स्वर्गारोहिणी है। इसका नाम भृगु पतन, भृगु पन्थ व भैरव झाँप है। कहते हैं, यहां से पाण्डव सदेह स्वर्ग गए थे। इसीलिए अभी कुछ वर्ष पहले तक भी बहुत से अन्धविश्वासी सदेह स्वर्ग जाने की चेष्टा करते थे। यूरोपियन यात्री स्किनर ने लिखा है कि 1829 में ऐसे प्राण उत्सर्ग करने वालों की संख्या 15 हजार थी। यदि यह संख्या अत्युक्ति वाली भी हो तो फिर भी यह बात सत्य थी कि कई लोग सीधे स्वर्ग जाने की इच्छा से इस चोटी पर पहुंचकर बर्फ में सदा के लिए समा जाते थे। 1883 में ब्रिटिश सरकार ने इस प्रकार के कृत्यों को करने से रोका था फिर भी स्वर्ग द्वार संकटेश्वर, वासुकी ताल और चोरवाड़ी ताल केदारनाथ के साथ-साथ हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है।

भैरव का केदारनाथ में अधिक महत्त्व है। अषाढ़ के महीने में भैरव को भण्डारा चढ़ाया जाता है। स्थानीय लोग रक्षाबन्धन के और कृष्णजन्माष्टमी के दिन वासुकी ताल जाकर पूजा करते हैं। केदारनाथ में रक्षाबन्धन के दिन भतूज का मेला लगता है। इस दिन केदारनाथ के लिंग पर भात लगाने की प्रथा है। इसे अन्नकूट दर्शन भी कहते हैं। 3581 मीटर की ऊंचाई पर स्थित केदारनाथ अपने प्राकृतिक और धार्मिक स्थान के लिए प्रसिद्ध है।

केदारनाथ में एक छोटा-सा बाजार है, जहां से आवश्यक वस्तुएं प्राप्त की जाती हैं। काली कमली की धर्मशाला, मन्दिर कमेटी की धर्मशाला, बिरला अतिथि गृह, सार्वजनिक निर्माण विभाग का विश्राम भवन, होटल हिमलोक, ट्रेवलर्स लॉज तथा अन्य कई धर्मशालाएं हैं, जहां रहने और खाने की उत्तम व्यवस्था है। यहां के तीर्थ-पुरोहितों के कई मकान हैं, जो अपने यजमानों को रहने की व्यवस्था करने में पूर्णरूप से सक्षम रहते हैं। टेलीफोन, तार, डाक एवं औषधालय की भी यहां व्यवस्था है।

## केदारनाथ से बदरीनाथ की ओर

केदारनाथ से बदरीनाथ के लिए दो रास्ते हैं। गुप्त काशी से नीचे कुण्ड नामक चट्टी तक दोनों रास्तों के लिए साथ-साथ आना पड़ता है। कुण्ड के पास मन्दाकिनी के पुल को पार करते ही एक रास्ता ऊखी मठ, चोपता मण्डल, गोपेश्वर, चमोली होकर तथा दूसरा कुण्ड से वापस रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग तथा चमोली होकर बदरीनाथ को जाता है। जब मोटर मार्ग नहीं था तब केदारनाथ से बदरीनाथ जाने के लिए यात्री नाला चट्टी तक इसी रास्ते पर लौटते थे और नाला चट्टी से ऊखी मठ, गणेश चट्टी, पोथीवासा, दोगल भीड़, बानिया कुण्ड, चोपता, तुंगनाथ,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


जंगल चट्टी, पांगरवासा, मण्डल और गोपेश्वर होकर चमोली के मार्ग से बदरीनाथ जाते थे। हम भी पहले इसी मार्ग से चमोली तक जाने का प्रयास करेंगे। अब यह मार्ग मोटर मार्ग बन गया है।

केदारनाथ से लौटने के बाद गुप्त काशी होकर ऊखी मठ पहुंचते हैं। गुप्त काशी के सामने नदी के पार ऊखी मठ का प्राचीन ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थान है। शीतकाल में केदारेश्वर भगवान् की पूजा यहीं ऊखी मठ में होती है। केदारनाथ का रावल शीतकाल में यहीं रहता है। ऊखी मठ का मन्दिर बदरीनाथ के चबूतरे पर बना हुआ है। मन्दिर गढ़े हुए पाषाण शिलाओं से बना हुआ है।

केदारनाथ की गद्दी के पास ही पंचमुखी महादेव की मूर्ति है। उसी के पास वस्त्राभूषणों से सुसज्जित पार्वती की मूर्ति भी है। दूसरे कमरों में कुन्ती और द्रौपदी सहित पांच पाण्डवों की मूर्तियां हैं। ऊखी मठ के इस मन्दिर में बदरीनाथ, तुंगनाथ, ओंकारेश्वर महादेव, सम्राट मान्धाता तथा ऊषा-अनिरुद्ध की मूर्तियां भी यथास्थान सुसज्जित हैं। मद महेश्वर की चल प्रतिमा तथा तीन सिंहासनों पर आदि बदरी व केदार पार्वती की मूर्तियां हैं।

स्कन्द पुराण के अनुसार पूर्वकाल में यहीं बाणासुर रहता था। उसकी कन्या ऊषा थी। श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध से ऊषा का प्रणय हुआ था। ऊखी मठ में ही ऊषा और अनिरुद्ध का विवाह हुआ, ऐसा कहा जाता है। मन्दिर में जहां ऊषा-अनिरुद्ध की मूर्तियां हैं वहां चित्रलेखा, काली, अर्द्धनारीश्वर और भगवान् विष्णु आदि की भी मूर्तियां हैं। यहां की मूर्तियां इतनी आकर्षक हैं जिनका अपना पुरातात्विक महत्त्व है।

ऊषा का विशिष्ट स्थल होने के कारण ही इस स्थान का नाम ऊखी मठ पड़ा है। धार्मिक एवं पौराणिक दृष्टि से ऊखी मठ का विशेष महत्त्व है। यहां से काली मठ को भी रास्ता जाता है और मद महेश्वर जिसको कि दूसरा केदार माना जाता है, वहां के लिए भी यहीं से रास्ता जाता है।

ऊखी मठ में तहसील, स्टेट बैंक तथा अन्य सभी आधुनिक सुविधाएं प्राप्त हैं।

ऊखी मठ से जैसे ही हम आगे की ओर बढ़ने लगते हैं रास्ता अति सुन्दर होता चला जाता है। दोगल भिट्टा और ऊखी मठ के बीच में एक रास्ता पार्वती चट्टी की ओर जाता है, जहां अद्भुत देवहरि ताल (देवरिया ताल) के दर्शन होते हैं। ऊखी मठ के पार्वती चट्टी पर यह एक अद्भुत ताल है, जिसमें हिमालय की सबसे अधिक सुन्दर झांकी दिखायी देती है। हिमालय पर्वत की ऐसी सुन्दर छवि और कहीं नहीं दिखायी देती। बहुत से पैदल चलने वाले और प्रकृति का आनन्द लेने वाले पर्यटक हिमालय का अद्भुत दर्शन करने के लिए देवहरि ताल जाते हैं। ऊखी मठ के आगे सड़क पर ही दोगल भिट्टा का अति रमणीय स्थान भी है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


जहां बहुत से यात्री तथा पर्यटक प्रकृति के मध्य समय व्यतीत करने के लिए जाकर कई दिनों तक विश्राम करते हैं। दोगल भिट्टा में बहुत सुन्दर सरकारी डाक बंगला है, जहां रहने के लिए सुन्दर व्यवस्था है।

घने वन के बीच नयनाभिराम दृश्यों को देखते हुए चोपता चट्टी आते हैं। यहीं पर गाड़ी से उतरकर चार किलोमीटर चलकर तुंगनाथ जो पंच केदारों में दूसरा केदार है---वहां पहुंचा जा सकता है। तुंगनाथ मन्दिर सबसे ऊंचाई पर बना हुआ है। तुंगनाथ का मन्दिर भी तराशे हुए पत्थरों का बना हुआ है। मन्दिर में महादेव के अलावा अन्य कई मूर्तियां हैं। इस मन्दिर में शिव की बाहु आकृति वाला स्वयंभू लिंग है। शंकराचार्य की मूर्ति भी यहां स्थापित है। यह भी किंवदन्ती है कि इस मन्दिर को आदि गुरु शंकराचार्य ने बनवाया था। इस मन्दिर के पुजारी मक्कू गांव के मैठाणी ब्राह्मण होते हैं। इस मन्दिर की विशेषता इसलिए भी है कि इतना ऊंचा स्थान तुंगनाथ शिखर के पास से एक जलधारा निकलती है, जिसे पाप नाशनी आकाश गंगा कहते हैं। मन्दिर के बहुत ऊपर चलकर रावण शिला के दर्शन होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इस शिला पर तब रावण ने तपस्या की थी। यहां का मनोरम दृश्य अत्यधिक आकर्षण वाला है। हिमालय की बर्फ से ढकी हुई चोटियों का विस्मयकारी दृश्य यदि देखना हो तो तुंगनाथ ही दिखायी देता है। यहां से पूरब की ओर दृष्टि डालने से नन्दा देवी, पंच चूली और द्रोणाचल की अनन्त शृंखलाएं दिखायी देती हैं। उत्तर की ओर दृष्टि डालने पर बदरीनाथ, रुद्रनाथ की सुन्दर चोटियों के दर्शन होते हैं। पश्चिम की ओर दृष्टि डालने से गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी और दक्षिण में चन्द्रवदनी और पौड़ी के शिखर साफ दिखायी देते हैं। बैटन से लेकर ऐटकिन्शन तक कई अंग्रेज पर्यटकों ने यहाँ की सुन्दरता का भव्य चित्रण किया है। बैटन ने तो तुंगनाथ क्षेत्र को और देवरिया ताल को तथा उस क्षेत्र की धरती को संसार की सबसे अधिक सुन्दरता वाले स्थानों में माना है। तुंगनाथ के दर्शन करने के बाद पुनः चोपता चट्टी आना होता है। यहां से गाड़ी में बैठकर घने वन के बीच होकर उतराई के रास्ते पर मण्डल चट्टी पहुंच जाते हैं। मण्डल चट्टी से थोड़ा आगे बढ़ने पर बायीं तरफ अनुसूया और अत्रि मुनि का आश्रम है। यहीं अनुसूया ने तप किया था। दत्तात्रेय आश्रम भी यहीं है। अमृत कुण्ड यहां का बहुत प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र के कई दत्तात्रेय के भक्त बदरीनाथ और केदारनाथ से अधिक इस अमृत कुण्ड और दत्तात्रेय आश्रम में जाना ज्यादा उपयोगी समझते हैं। यह स्थान भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और दर्शनीय है। मण्डल चट्टी से एक रास्ता पंच केदारों में से चौथा केदार रुद्रनाथ को भी जाता है और एक मार्ग गोपेश्वर की ओर चढ़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## श्री केदारनाथ से ऊखी मठ होते हुए श्री बदरीनाथ की ओर

| स्थान | समुद्र तल से ऊंचाई (मी०) | दूरी (कि० मी०) एक स्थान से दूसरे स्थान तक | कुल दूरी (कि०मी०) |
|---|---|---|---|
| श्री केदारनाथ | 3583 | —— | —— |
| गौरी चट्टी | 3262 | 3 | 3 |
| रामबाड़ा | 2591 | 4 | 7 |
| गौरी कुण्ड | 1982 | 7 | 14 |
| सोनप्रयाग | 1829 | 5 | 19 |
| रामपुर | 1646 | 3 | 22 |
| फाटा | 1601 | 9 | 31 |
| नारायण कोटी नाला | —— | 11 | 42 |
| गुप्त काशी | 1479 | 3 | 45 |
| कुण्ड | 976 | 5 | 50 |
| ऊखी मठ | 1311 | 5 | 55 |
| दोगल भीटा (भिट्टा) | 2347 | 24 | 79 |
| चोपता | 2500 | 6 | 85 |
| मण्डल | 1568 | 28 | 113 |
| गोपेश्वर | 1308 | 11 | 124 |
| चमोली | 1069 | 10 | 134 |
| बिरही | 1100 | 8 | 142 |
| पीपल कोटी | 1311 | 9 | 151 |
| गरुड़ गंगा | 1372 | 5 | 156 |
| टंगनी | 1677 | 6 | 162 |
| हेलंग | 1524 | 6 | 168 |
| जोशीमठ | 1890 | 14 | 182 |
| विष्णुप्रयाग | 1372 | 10 | 192 |
| गोविन्द घाट | 1829 | 10 | 202 |
| पाण्डुकेश्वर | 1829 | 4 | 206 |
| हनुमान चट्टी | 2286 | 9 | 215 |
| देव दर्शनी | 3101 | 13 | 228 |
| श्री बदरीनाथ | 3110 | 2 | 230 |

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



| | |
|---|---|
| श्री केदारनाथ से सोन प्रयाग | 19 कि० मी० पैदल |
| सोन प्रयाग से ऊखी मठ | 36 कि० मी० मोटर |
| ऊखी मठ से श्री बदरीनाथ | 175 कि० मी० मोटर |

## रुद्रनाथ की ओर

मण्डल चट्टी के बाद अनुसूया आश्रम होते हुए पहाड़ की चढ़ाई को पार करते हुए रुद्रनाथ मन्दिर में पहुंचते हैं। रुद्रनाथ की फूल घाटी अपने विभिन्न प्रकार के फूलों के लिए प्रसिद्ध है। गढ़वाल में जितनी भी फूल घाटियां हैं, उनमें रुद्रनाथ की फूलघाटी सबसे अधिक प्रसिद्ध और आकर्षक है।

रुद्रनाथ मन्दिर 5 केदारों में से चौथा केदार है। 2286 मीटर की ऊंचाई पर रुद्रनाथ का मन्दिर है। घने वन के बीच में और नाना प्रकार के फूलों के मध्य यह मन्दिर अपनी शोभा को बढ़ाने वाले मन्दिरों में सबसे उत्तम है। यहां से त्रिशूल, नन्दा देवी आदि पर्वत श्रृंखलाएं बिलकुल पास दिखायी देती हैं।

रुद्रनाथ मन्दिर में भगवान् शिव की एकानन मूर्ति की पूजा होती है। शायद भारत में यही एक ऐसा तीर्थ है, जहां शिवजी के सिर्फ शीर्ष की पूजा होती है। स्कन्दपुराण के अनुसार शिव ने अन्धकासुर का वध कर इसी स्थान में अपना निवास-स्थान बना लिया था। यहीं पर पितरों को तारने वाली वैतरणी गंगा भी वहती है। यहां पिण्डदान देने का बड़ा महात्म्य है। भगवान् शिवजी का प्राचीन मन्दिर है और ऐसा कहा जाता है कि यहां पर जो एकानन मूर्ति शिव जी की है वह स्वयंभू मूर्ति (अपने आप प्रकट होने वाली मूर्ति) है। यहां पर मठ व मूर्तियां भी कई हैं। मन्दिर में शिव की पूजा 6 महीने होती है। शीतकाल में यहां की पूजा गोपेश्वर में होती है। गोपेश्वर में रुद्रदाथ का गद्दी स्थान है। यहां की प्राकृतिक छटा को देखने के लिए और रुद्रनाथ की फूलों की घाटी के अद्भुत सौन्दर्य वाले दृश्यों का अवलोकन करने के लिए वर्ष में अनेक पर्यटक इस ओर आते रहते हैं।

## रुद्रनाथ से कमलेश्वर तक की पदयात्रा

आज के युग में पर्वतारोहियों का रुद्रनाथ एक मुख्य आकर्षण बन गया है। बहुत से पर्यटक पैदल चलकर रुद्रनाथ के अंचल वाले कई मनोरम स्थानों में पहुंच जाते हैं। रुद्रनाथ की ओर जाने वाले पैदल पर्यटक गोपेश्वर से या जोशी मठ से इस ओर आते हैं। रुद्रनाथ से जोशी मठ जाने के लिए पैदल यात्री गंगोल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



गांव तक मोटर में आते हैं और वहां से पनार नौला होते हुए रुद्रनाथ पहुंचते हैं। गंगोल गांव से 17 मिलोमीटर दूर पैदल यात्रा करने के बाद रुद्रनाथ आता है। रुद्रनाथ में धर्मशाला है। रुद्रनाथ से दुमक 12 किलोमीटर पैदल चलकर आता है। फिर काल गोंट, किमाना होते हुए उरगम पहुंच जाते हैं। रुद्रनाथ के आगे नन्दी कुण्ड 2439 मीटर की ऊंचाई पर पड़ता है। इस कुण्ड में स्थानीय लोग चट्टानों में पड़ी हुई पुरानी तलवारों की पूजा करते हैं। ऐसा लोक विश्वास है कि ये तलवारें पाण्डवों की हैं।

## कल्पेश्वर

उरगम बहुत सुन्दर घाटी है, यहां फलों के बाग हैं और हरे-भरे जंगल चारों ओर फैले हैं। यहां के लोग बहुत ही मिलनसार और अतिथि-सत्कार-प्रिय हैं। यहीं पर एक शिला मन्दिर है जो कि कल्पनाथ या कल्पेश्वर शिव के नाम से पूजा जाता है। यही कल्पेश्वर पांच केदारों में आखिरी पांचवा केदार है। यहां पर शिवजी की जटाएं प्रकट हुई थीं और उसी रूप में यहां पर शिवजी की पूजा होती है। ऐसे भव्य स्थानों के दर्शन करने के बाद पैदल यात्री उरगम से हेलंग होते हुए जोशी मठ पहुंचते हैं। इसी प्रकार जोशी मठ से जो लोग पैदल कल्पेश्वर जाना चाहते हैं वे जोशी मठ से हेलंग, उरगम और कल्पेश्वर फिर रुद्रनाथ मन्दिर होते हुए रुद्रनाथ फूल घाटियों के दर्शन करने के बाद गोपेश्वर लौट आते हैं। गढ़वाल विकास निगम द्वारा ट्रेकिंग (पैदल यात्रा) की व्यवस्था की जाती है।

## गोपेश्वर

मण्डल चट्टी से गोपेश्वर तक मार्ग बहुत सुन्दर है और यात्री प्रकृति का आनन्द लेते हुए इस ओर बढ़ते हैं। 1960 में जब सीमान्त जिला चमोली बना तो गोपेश्वर, चमोली जिले का मुख्यालय बना लिया गया। यह अत्यन्त रमणीय स्थान पर स्थित है। केदारनाथ के मन्दिर को छोड़कर गोपेश्वर का मन्दिर गढ़वाल और कुमाऊं में सबसे प्राचीन और विशाल मन्दिर है। यहां पर कई दर्जन पुरानी टूटी-फूटी मूर्तियां हैं जो यहां के वैभव की ओर सबका ध्यान आकर्षित करती हैं। मन्दिर के आगे सभामण्डल बहुत सुन्दर बना है। मन्दिर में एक ओर भारी त्रिशूल है जिस पर प्राचीन लिपि में अभिलेख लिखा हुआ है। उत्तरकाशी के त्रिशूल के बराबर ही यहां का त्रिशूल भी है। चमोली में इस गोपेश्वर मन्दिर का अपना विशेष महत्व है। यहां की मूर्तियों में बूटधारी सूर्य, चार मुख वाला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मुख व लिंग आदि अति प्राचीन है । यहां पर परशुराम का फरसा भी विद्यमान है ।

गोपेश्वर चमोली जिले का मुख्यालय है । यहां पर नाना प्रकार की योजनाएं संचालित हो रही हैं । गोपेश्वर शिव की महिमा वाले स्थानों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है । यात्री गोपेश्वर के शिव मन्दिर की पूजा करने के पश्चात् चमोली की ओर चल पड़ते हैं । अलकनन्दा के ऊपर पुल पार करते हुए रुद्र प्रयाग, नैनीताल, रानीखेत व हलद्वानी से आने वाले यात्रियों से मिल जाते हैं ।

केदारनाथ से बदरीनाथ जाने के लिए दूसरा मार्ग रुद्र प्रयाग आकर अलकनन्दा के किनारे-किनारे होकर चलता है । केदारनाथ से कुण्ड तक सभी यात्रियों को साथ-साथ आना पड़ता है । कुण्ड से एक रास्ता ऊखी मठ गोपेश्वर होकर चमोली में है और दूसरा रास्ता अगस्त मुनि होकर रुद्र प्रयाग पहुंचता है । रुद्र प्रयाग से बदरीनाथ की यात्रा अत्यन्त सुखकारी है ।

## रुद्र प्रयाग से बदरीनाथ की ओर

रुद्र प्रयाग मन्दाकिनी और अलकनन्दा के संगम पर बसा है । यहां के केदारनाथ 84 किलोमीटर तथा बदरीनाथ 159 किलोमीटर है । रुद्र प्रयाग के सम्बन्ध में हम पहले लिख चुके हैं । अतः रुद्र प्रयाग से अलकनन्दा के बायें किनारे से हम जैसे ही आगे बढ़ते हैं 10 किलोमीटर की दूरी पर घोलतिर नामक स्थान आता है । इसी स्थान से चमोली जिला प्रारम्भ हो जाता है ।

## गौचर

घोलतिर से 10 किलोमीटर की दूरी पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ गौचर अत्यन्त रमणीय स्थान है । यहां पर दो मील से अधिक लम्बा-चौड़ा मैदान है । मई 1938 में पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी बहन विजय लक्ष्मी के साथ हवाई जहाज से यहीं उतरे थे । 1935 में भारत के तत्कालीन वाइसराय विलिंगडन अपनी पत्नी के साथ इसी मैदान में हवाई जहाज से उतरे थे । नेहरू की याद में उनके जन्मदिवस 14 नवम्बर से यहां पर ओद्योगिक मेला लगता है । पहले यहां सम्पूर्ण गढ़वाल का विशिष्ट मेला लगता था । सीमान्त के भोटिया बन्धुओं की बनाई हुई ऊन की वस्तुओं का व्यापार होता था । तिब्बत से सस्ती ऊन मिलने के कारण इस मेले का बहुत महत्त्व था । अब यहां पर दूर-दूर तक के लोग उद्योग-धन्धों से सम्बन्धित सामान लाते हैं । स्थानीय भोटियों का माल कम बिकता है । गौचर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



में पॉलोटेक्निक इण्टरमीडिएट कॉलेज तथा अन्य सभी प्रकार की सुविधायें उपलब्ध है। गौचर से 3 मील आगे चटवा पीपल है। यहां पर "श्री सम्प्रदाय" का मन्दिर है और सांस्कृतिक गोविन्द पाठशाला है।

## कर्ण प्रयाग

उत्तराखण्ड के पांच प्रयागों में से कर्ण प्रयाग का स्थान तीसरा है। यहां पर पिण्डर नदी और अलकनन्दा का संगभ है। पिण्डर पुल को पार करते ही उमा देवी का प्राचीन देव मन्दिर है! पिण्डर के किनारे कर्ण का मन्दिर तथा संगम पर कर्णशिला और कर्ण कुण्ड का होना बताया जाता है। केदार खण्ड के अध्याय 81 में इस स्थान को कर्णाश्रम लिखा गया है। कहते हैं कि इस स्थान पर भगवती उमा का आश्रम लेकर महादानी कर्ण ने सूर्य देव की आराधना की थी। सूर्य ने प्रसन्न होकर कर्ण को यहां पर अभेद्य कवच और अक्षय तूणीर प्रदान किये थे। तभी से इस स्थान का नाम कर्ण प्रयाग पड़ा। यह भी कहा जाता है कि इस स्थान पर शिवजी कर्णेश्वर के नाम से निवास करते हैं। यहां का शिव मन्दिर भी अपने आप में बहुत प्रसिद्ध है।

कर्ण प्रयाग जिला चमोली का एक उभरता हुआ नगर है, जहां सभी प्रकार की सुविधायें प्राप्त हैं। यहां सार्वजनिक निर्माण विभाग, वन विभाग के विश्राम गृह हैं। गढ़वाल विकास निगम का भी विश्राम गृह है। ठहरने के लिए कई होटल हैं

कर्ण प्रयाग की महत्ता इसलिए भी अधिक है कि यहां पर रानीखेत, हल्द्वानी और नैनीताल से बसें आकर बदरीनाथ की ओर जाती है। कुमाऊं की ओर से आने वाले मार्गों को जोड़ने वाला यह मुख्य स्थान है।

कर्ण प्रयाग में जहां अल्मोड़ा से आने वाली सड़कें मिलती हैं, वहां नन्दादेवी का धाम नौटी से भी मार्ग आकर मिलता है। नौटी से विश्व विख्यात नन्दा जात चलती है। इस जात की महिमा यह है कि चार सींग वाला मेढा आगे-आगे चलता है और उसके पीछे-पीछे नंदा देवी के मैती अर्थात् मायके वाले चलते हैं। जब तक मेढ़ा नन्दा के ससुर घर की ओर ओझल हो नहीं जाता, तब तक वे उसका साथ नहीं छोड़ते। इस प्रकार की जात शायद ही विश्व में और कहीं होती होगी।

जहां नन्दा जात का महत्त्व है वहीं कर्ण प्रयाग के पास ही शिमली में चण्डी का अदभुत मन्दिर है। गैर सैंण की ओर बढ़ने पर रानीखेत वाले मार्ग पर पंच बदरियों में से एक बदरी—आदि बदरी एक प्रमुख स्थान है। आदि बदरी में बहुत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



सुन्दर प्राचीन मन्दिरों का समूह है, जहां अनेक प्रकार की दुर्लभ मूर्तियां है ।

कर्ण प्रयाग से ही एक रास्ता सिमली, नारायण बगड़, थराली होते हुए ग्वालदम की ओर चला जाता है । रूपकुण्ड की ओर जाने वाले पर्यटकों के लिए भी कर्ण प्रयाग से ही रास्ता है । जो लोग रूपकुण्ड की यात्रा करते हैं वे कर्ण प्रयाग से 42 किलोमीटर थराली पहुंचते हैं । थराली से 13 किलोमीटर देवाल, देवाल से 9 किलोमीटर मण्डोली, मण्डोली से 14 किलोमीटर पर चमोली जिले के अन्तिम गांव बाण पहुंचते हैं । इस आखिरी गांव से 9 किलोमीटर की दूरी पर लोहारजंग दर्रा है । इस दर्रे से 11 किलोमीटर की दूरी पर पातर नचौनी नामक स्थान है । यहां पर नंदा जात में आने वाले लोग भी रुकते हैं । पातर नचौनी से 4778 मीटर की ऊंचाई पर रूपकुण्ड है । जो लोग रूपकुण्ड के दर्शन कर यहां से लौट आते हैं वे इसी रास्ते से लौटते हैं । रूपकुण्ड एक रहस्यमयी झील है जहां अनेक लोगों के अस्थि-पंजर मिले हैं । ऐसा कहा जाता है कि 600 वर्ष पहले नन्दा राजजात यात्रा में जाने वाले राजा जसधवल और उसके लोगों ने भ्रष्ट तरीके से आगे बढ़ने का प्रयत्न किया तो दैवकोप ने भयंकर वर्षा गिरने और ओले पड़ने के कारण वे वहीं समाप्त हो गये । ये अस्थि-पंजर उन्हीं के बताये जाते हैं । कुछ लोग जोरावर सिंह के सिपाहियों के अस्थि-पंजर बताते हैं । परन्तु आज के कई विद्वान नंदा राजजात से ही इन रहस्यमयी अस्थियों का सम्बन्ध जोड़ते हैं । उनका कहना है कि नंदा राजजात में आये यात्रियों में रानी वल्लभा गर्भवती थी । दैवकोप से बर्फ गिरी और सभी यात्री इसी कुंड के पास सदा के लिए समा गये ।

यह स्थान अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण है । पास ही बर्फ की नदी है । वर्फ से ढकी हुई अनेक पर्वत चोटियां हैं । त्रिशूल पहाड़ के नीचे रूपकुण्ड है । रूपकुण्ड से यात्री 8 किलोमीटर होमकुण्ड भी जाते हैं । होमकुण्ड भी अद्भुत सुन्दरता का ताल है । रूपकुण्ड से 5 किलोमीटर पर सैल समुद्र है । सैल समुद्र की भी प्राकृतिक सुन्दरता अद्भुत है । यहां से 20 किलोमीटर की दूरी पर घाट है । घाट से नन्द प्रयाग आसानी से पहुंचा जा सकता है । बहुत से पर्वतारोही और पर्यटक पैदल यात्रा कर नन्द प्रयाग से घाट होते हुए सैल समुद्र हिमनद को पार करते हुए रूप कुण्ड की यात्रा करते हैं ।

## नन्द प्रयाग

बदरी के मार्ग पर कर्ण प्रयाग से 22 किलोमीटर की दूरी पर नन्द प्रयाग, अलकनन्दा और मन्दाकिनी के संगम पर स्थित है । नन्द प्रयाग में त्रिशूल पर्वत से निकलने वाली नन्दाकिनी मिलती है । यहां पर लक्ष्मीनारायण का मन्दिर, चन्द्रिका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मन्दिर, विशिष्टेश्वर महादेव का मन्दिर है। नन्द प्रयाग में रहने-खाने आदि की बहुत सुन्दर व्यवस्था है। नन्द प्रयाग की इसीलिए भी महत्ता है कि इसके समीप ही 10 किलोमीटर की दूरी पर बैरास कुण्ड है। ऐसी मान्यता है कि लंकापति रावण ने इसी स्थान पर शंकर भगवान की आराधना की थी व अपने बल की परीक्षा के लिए कैलाश पर्वत को उठाया था। रावण को शिव की कृपा से 10 सिर यहीं प्राप्त हुए थे इसीलिए इस क्षेत्र का नाम दसमौर्ला (दसौली) हो गया।

नन्द प्रयाग से घाट होते हुए कुछ पर्यटक और पर्वतारोही रूपकुण्ड को जाते हैं तो कुछ लोग प्रकृति के मध्य विचरण करने के लिए क्वारी पास पहुंच जाते हैं।

## क्वारी पास

बहुत कम लोगों को पता है कि भारत के वाइसराय लार्ड कर्जन पैदल चलकर क्वारी पास पहुंचे थे। 4265 मीटर की ऊंचाई पर संसार का सबसे सौन्दर्य वाला क्षेत्र क्वारी पास है। यहां नाना प्रकार की फूल घाटियां हैं और मीलों तक मखमली घास के मैदान फैले हुए हैं। क्वारी पास से नन्दा देवी, दूनागिरि, देव स्थान पर्वत शृंखलाएं साफ-साफ दिखाई देती हैं। यहीं से यदि मौसम ठीक रहा तो नन्दीदेवी, पशुविहार के भी दर्शन हो जाते हैं।

नन्द प्रयाग से घाट और घाट से रामणी 10 किलोमीटर, रामणी से पनारनी 28 किलोमीटर है, पनारनी से 15 किलोमीटर चलने पर 4268 मीटर की ऊंचाई पर संसार का अति सुन्दर क्वारी पास स्थित है। यहां से एक रास्ता 27 किलोमीटर पर तपोवन की ओर चला जाता है। एक दूसरा रास्ता जोशीमठ के ऊपर औली के बुग्यालों में पहुंच जाता है। औली से 8 किलोमीटर की दूरी पर जोशीमठ है। आजकल ट्रैकिंग करने वाले सबसे अधिक लोग इसी क्षेत्र में जाना उपयुक्त समझते हैं क्योंकि यहां की मखमली धरती में जाकर सबको स्वर्ग जैसा आनन्द मिलता है। अनेक फूल-घाटियों के भी दर्शन होते हैं। गढ़वाल विकास निगम, देहरादून की ओर पैदल यात्रा (ट्रैकिंग) की व्यवस्था की जाती है।

## चमोली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नन्द प्रयाग से केवल 10 किलोमीटर की दूरी पर बदरीनाथ की ओर चलने

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



पर चमोली नामक स्थान आता है। जब तक पौड़ी गढ़वाल के दो हिस्से नहीं हुए थे तब तक चमोली में एक तहसील थी और इसी तहसील के नाम पर जिले का नामकरण हुआ। पहले यहां पर लाल रंग का पुल था जिसके कारण चमोली का पुराना नाम लाल सांगा है। यहां पर केदारनाथ से आने वाले यात्री ऊखी मठ, गोपेश्वर होते हुए पहुंचते है और यहीं से ऋषिकेश, कोटद्वार, रानीखेत, हल्द्वानी और नैनीताल से आने वाले सभी यात्रियों के साथ बदरीनाथ की ओर चल पड़ते हैं। इसलिए चमोली का ऐसा संगम होने के कारण और भी महत्त्व है।

## पीपल कोटी की ओर

चमोली से जब मोटर मार्ग नहीं था तब यात्री मठ चट्टी, छिनका, सिया सैण, हाट चट्टी, पीपल कोटी, गरुड़ गंगा, टंगणी, पातालगंगा, गुलाब कोटी, कुम्हार चट्टी (हेलंग), खनेटी, झड़ कूला, जोशीमठ, विष्णु प्रयाग, बल दौड़ा चट्टी, घाट चट्टी, पाण्डुकेश्वर, शेष धारा, लाम बगड़, हनुमान चट्टी, घरसिल कूल, रडेंग पुल, कांचनगंगा और देव देखनी होते हुए बदरीनाथ पैदल जाते थे।

अब चमोली से बदरीनाथ तक मोटर मार्ग बन गया है। निरन्तर बसें चलती हैं। चमोली से 17 किलोमीटर की दूरी पर चारों ओर प्रकृति के नयनाभिराम दृश्यों के मध्य पीपल कोटी एक उभरता हुआ नगर स्थित है। पीपल कोटी में पुलिस स्टेशन, डाक-तार घर, टेलीफोन आदि की सुविधाएं हैं। यहां पर खाने और ठहरने की उत्तम व्यवस्था है।

## गरुड़ गंगा

पीपल कोटी से 6 किलोमीटर की दूरी पर गरुड़ गंगा है। यहां गरुड़ जी का प्राचीन मन्दिर है। केदारखण्ड में कथा इस प्रकार आती है कि जब विष्णु भगवान बदरीनाथ की ओर अपने वाहन के साथ चलने लगे तो गरुड़ जी को इसी स्थान पर छोड़ गये थे और स्वयं पैदल चलकर बदरीनाथ गये थे। ऐसी भी कहानी कही जाती है कि इसी स्थान पर गरुड़ जी ने भगवान विष्णु के वाहन बनने की कामना से तप किया था। गरुड़ गंगा एक छोटी-सी नदी है जो गरुड़ गंगा के नाम से विख्यात है। यह गंगा अलकनन्दा से मिल जाती है। इस स्थान के पत्थर ले जाने से और उसको पानी में घोटने से सर्प के विष का इलाज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



किया जाता है। गरुड़ गंगा के बायीं ओर पाखी गांव है। इस गांव में भगवान नृसिंह का प्राचीन मन्दिर है। गरुड़ गंगा से तीन किलोमीटर की दूरी पर टंगणी चट्टी है। यहां पर स्वर्गीय नर्वदा नन्द की धर्मशाला है। यहां का गणेश कुण्ड विख्यात है।

## पाताल गंगा

टंगणी से तीन किलोमीटर की दूरी पर पाताल गंगा है। भयंकर पहाड़ से नीचे जो जलधारा दिखाई देती है वही पाताल गंगा है। बस से या पैदल जाने से जब नीचे नजर जाती है तो प्रत्येक व्यक्ति भय के कारण कांप जाता है। देखने से ही पाताल गंगा का नाम सार्थक होता है। 1970 में बेलाकूची में जब भयंकर बाढ़ आयी थी उस समय पाताल गंगा ने अपना भयंकर रूप दिखाया था। पाताल गंगा का लोहे का पुल तक बह गया था। अब सड़क काफी ऊंचाई पर बनी है। यहां गणेश जी का पुराना मन्दिर है, जिसमें गणेश जी की भव्य मूर्ति विद्यमान है।

## गुलाब कोटी

पाताल गंगा से तीन किलोमीटर की दूरी पर गुलाब कोटी है। यहां पर मुरली मनोहर की सुन्दर मूर्ति है।

## हेलंग (कुम्हार चट्टी)

गुलाब कोटी से तीन किलोमीटर की दूरी पर हेलंग है। यहां बाबा काली कमली की धर्मशाला, बदरीनाथ मन्दिर की धर्मशाला और एक छोटा-सा बाजार है। यहीं से अलकनन्दा के पुल को पार कर उरगम को रास्ता जाता है। यहीं से पंच केदार कल्पेश्वर को रास्ता जाता है जो पैदल चलने वाले यात्रियों के द्वारा कल्पेश्वर होकर रुद्रनाथ के मार्ग से गोपेश्वर पहुंचता है। उरगम में ध्यान बदरी का मन्दिर है। इसका वर्णन हम पहले भी कर चुके हैं। पैदल यात्री इसी मार्ग से जोशीमठ से हेलंग, उरगम, कल्पेश्वर, रुद्रनाथ होते हुए [illegible] और गोपेश्वर पहुंचते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


## वृद्ध बदरी

हेलंग से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर पैनी चट्टी है। इससे कुछ ही आगे जाने पर खनेटी चट्टी है। यहां पर मुख्य मार्ग को छोड़ने के बाद एक किलोमीटर नीचे अणी मठ नाम का स्थान है जहां वृद्ध बदरी का मन्दिर है। यह 5 बदरियों में से एक बदरी है। यहां लक्ष्मीनारायण की मूर्ति है। इस स्थान से झड़कूल सिंहद्वार होते हुए पैदल जोशीमठ पहुंचते हैं।

## जोशीमठ

हेलंग से 14 किलोमीटर की दूरी पर बदरीनाथ के रास्ते में पड़ने वाला यह अत्यन्त प्रसिद्ध नगर है। चारों ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ यह अत्यन्त रमणीय स्थान है। आदिगुरु शंकराचार्य को इसी स्थान पर एक गुफा के भीतर दिव्य ज्योति के दर्शन हुए थे। आज भी वहां पर जगतगुरु शंकराचार्य की वह गुफा सुरक्षित है। इस गुफा के भीतर कल्पवृक्ष है। दिव्य ज्योति के दर्शन होने के कारण ही इस स्थान का महत्त्व है। आदि गुरु शंकराचार्य ने यहां पर मठ की स्थापना की थी और उसका नाम ज्योतिर्मठ रखा था जो बिगड़ कर जोशीमठ के रूप में प्रसिद्ध है। शहतूत के पेड़ के नीचे जगतगुरु को ज्ञान ज्योति मिली थी।

जोशीमठ से ऊपर औली बुग्याल का मनोरम क्षेत्र है। गढ़वाल विकास निगम की ओर से यहां पर रज्जु मार्ग बनाया गया है जिससे शीतकालीन खेलों में पहुंचने के लिए सुन्दर व्यवस्था हो जाती है।

जोशीमठ से औली बुग्याल 8 किलोमीटर की दूरी पर है। मखमली घास के मैदान गर्मियों में फूलों से लदे रहते हैं और सर्दियों में बर्फ से ढके रहते हैं। बर्फ के खेल यहां निरन्तर खेले जाते हैं। यहीं से पर्यटक और प्रकृति के प्रेमी क्वारी बुग्याल की ओर जाते हैं। जोशीमठ से क्वारी पास होते हुए पर्यटक घाट होकर नन्द प्रयाग निकल आते हैं। औली गोरसों से त्रिशूल, कामेट, दूनागिरि, नन्दादेवी, नीलकण्ठ, देव स्थान और चंगबंग पर्वत श्रेणियां भी साफ दिखाई देती हैं। पर्यटक इस स्थान पर जाना बहुत ही अच्छा समझते हैं।

जोशीमठ में ज्योतिं महादेव के प्राचीन मन्दिर के पास शंकराचार्य द्वारा स्थापित ज्योतिर्मठ या ज्योतिषपीठ है। यहां नभ गंगा दण्ड धारा में स्नान किया जाता है। यहां नृसिंह मन्दिर, वासुदेव मन्दिर नवदुर्गा मन्दिर आदि अनेक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



छोटे-बड़े मन्दिर हैं। जोशीमठ आज अत्यधिक महत्त्व का नगर बन गया है। यहां एक सुन्दर बाजार है। यात्रियों या पर्यटकों के लिए आवास की सुन्दर व्यवस्था है। कई विश्रामगृह और धर्मशालाएं हैं। संस्कृत पाठशाला व राजकीय इण्टर कॉलेज जैसी शिक्षण संस्थाएं भी हैं।

बदरीनाथ के कपाट जब बन्द हो जाते हैं तो 6 महीने जोशीमठ में ही बदरीनाथ की चल प्रतिमा की पूजा होती है। बदरीनाथ मन्दिर कमेटी के सभी उच्चाधिकारी, सेवक तथा रावल भी जोशी मठ ही रहते हैं। बदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति का कार्यालय भी यहीं हैं।

## जोशीमठ से तपोवन की ओर

जोशीमठ से जैसे ही हम आगे बढ़ते हैं दाएं मिलिटरी कैम्प के पास दाहिने तरफ का रास्ता कैलाश मानसरोवर की ओर चला जाता है, और बाएं तरफ का रास्ता बदरीनाथ की ओर मुड़ जाता है। जोशीमठ से 10 किलोमीटर की दूरी पर तपोवन नाम का एक सुन्दर स्थान है। महाभारत के शान्ति पर्व में जिस तपोवन का वर्णन मिलता है, यह वही स्थान है। तपोवन में एक स्थान पर तीन मन्दिर हैं जिनमें कोई मूर्ति नहीं है। परन्तु इन मन्दिरों का वास्तुविधान बहुत महत्त्वपूर्ण है। यहीं पर एक विशाल मन्दिर हैं जिसमें हर गौरी की दर्शनीय मूर्ति है। इसी के द्वारपट पर विस्मयकारक कलापूर्ण आदिनाथ की मुखाकृति है। आगे नये मन्दिर में बदरीनाथ की तरह एक गरम पानी का सोता है जो बदरीनाथ के गरम पानी से अधिक गरम है।

## भविष्य बदरी

तपोवन से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर सुभाई गांव है। यहां पर जो विष्णु भगवान का मन्दिर है वहीं भविष्य बदरी है। कहते हैं कि विष्णु प्रयाग के पास वाले दोनों पर्वत जब आपस में मिल जायेंगे और बदरीनाथ धाम अगम्य हो जायेगा तब भगवान् बदरीविशाल की पूजा यहीं भविष्य बदरी में हुआ करेगी। प्राचीन काल में इस स्थान पर महर्षि अगस्त्य ने भगवान विष्णु की तपस्या की, तभी से भगवान विष्णु यहां पर निवास करते हैं। यहां एक शिला पर ध्यानपूर्वक देखने से भगवान की आधी आकृति दिखाई देती है। कहा जाता है कि जब यह आकृति स्वयं पूरी हो जायेगी तो यहां की यात्रा प्रारम्भ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



हो जायेगी ।

भविष्य बदरी से आगे लाता ग्राम में भगवती नन्दा का प्राचीन मन्दिर है । इस लाता देवी मन्दिर में भी, कहते हैं, इसके पास आकाश से गिरी खड्ग है । 24वें वर्ष यहां पर बड़ा मेला लगता है । यहां से आगे द्रोणगिरि पर्वत है जहां से हनुमान जी लक्ष्मण की शक्ति के समय संजीवनी बूटी लाये थे । इस क्षेत्र का आखिरी सीमान्त गांव नीति है । इसीलिए इस घाटी का नाम नीति घाटी है । इस घाटी में भोटिया लोग रहते हैं । नीति के समीप तक मोटर मार्ग बन चुका है । आगे बहुत दूर चलकर नीतिद्वार (पास) है जहां से कैलाश मान सरोवार को रास्ता जाता है ।

कई पर्वतारोही पहाड़ों के मध्य चलते हुए नीति से ऊपर ही ऊपर बदरीनाथ की ओर आते हैं ।

## जोशीमठ से बदरीनाथ की ओर

जोशीमठ से जब हम बदरीनाथ की ओर बढ़ते हैं तो रास्ता उतराई का हो जाता है । जोशीमठ से बिलकुल नीचे जब मोटर मार्ग पहुंच जाता है तो शीघ्र ही धौली गंगा और अलकनन्दा का संगम विष्णु प्रयाग मिलता है । यहां पर दोनों नदियों का प्रवाह अत्यन्त तीव्र है । विष्णु प्रयाग में भगवान का प्राचीन मन्दिर और विष्णुकुण्ड है । इस कुण्ड में स्नान करने का बहुत बड़ा माहात्म्य है । कहते हैं कि यहीं पर नारद ने अष्टाक्षर मन्त्र से भगवान विष्णु की पूजा की थी ।

अब हमारा मार्ग विष्णु प्रयाग से अलकनन्दा के किनारे-किनारे संकीर्ण घाटी में गुजरता हुआ आगे बढ़ता है । तंग घाटी के मार्ग में डर-सा लगने लगता है परन्तु पर्वतीय अंचल की वनस्पतियां मन को धैर्य दिलाती रहती हैं ।

## गोविन्द घाट से फूलों की घाटी तथा हेमकुन्ड लोकपाल

विष्णु प्रयाग से लगभग 10 किलोमीटर चलने पर चट्टी घाट पहुंचते हैं । अब इस घाट का नाम सिखों का गुरुद्वारा बन जाने के बाद गोविन्द घाट हो गया है । गोविन्द घाट में सिखों का गुरुद्वारा और अन्य ठहरने के लिए स्थान हैं । यहीं से फूलों की घाटी और हेमकुण्ड लोक पाल को रास्ता जाता है । अलकनन्दा के पुल को पार कर 9 किलोमीटर की दूरी पर भ्यूंडार गांव पड़ता है भ्यूंडार से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



दायीं तरफ 18 किलोमीटर की दूरी पर काक भुशुण्डि पर्वत और काक भुशुण्डि ताल है। भ्यूंडार से 3 किलोमीटर की दूरी पर घंघरिया नामक स्थान है जो घने वृक्षों के मध्य स्थित है। गोविन्द घाट से पैदल यात्री प्रायः घंघरिया एक दिन में पहुंच जाते हैं। घंघरिया में सिखों का गुरुद्वारा, वनविभाग का डाकबंगला और गढ़वाल विकास निगम विश्रामगृह हैं। यहां पर रहने, खाने आदि की उत्तम व्यवस्था है।

## फूलों की घाटी

रामायणकाल में लक्ष्मण का यह प्यारा क्षेत्र बताया गया है। महाभारत काल में यहीं के फूलों को लाने भीम गये थे। इस समय 1931 में ब्रिटिश पर्यटक स्माइल ने इस फूल घाटी को सबसे पहले देखा और इसके विषय में अपनी जानकारी दी और इस फूल घाटी पर 'फ्लावर वेली ऑफ गढ़वाल' नामक पुस्तक लिखकर इसे संसार में प्रसिद्ध कर दिया। मई के महीने में जब बर्फ गलने लगती है तो बर्फ के नीचे फूलों के अंकुर फूटने लगते हैं। अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर तक यह सारा क्षेत्र विभिन्न प्रकार के फूलों से लद जाता है। प्रकृति-प्रेमी और पर्यटक ऋषिकेश, जोशीमठ, गोविन्द घाट होते हुए घंघरिया पहुंचते हैं। घंघरिया से बायीं तरफ पुष्पतोया नदी के किनारे-किनारे 5 किलोमीटर की दूरी पर फूलों की घाटी स्थित है, जिसमें अनेक प्रकार के फूल जुलाई से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक खिले हुए मिलते हैं। अक्टूबर के बाद जैसे-जैसे ठंडी हवा चलती है और बर्फ गिरती है, यह घाटी भी बर्फ से ढंक जाती है। फूलों की घाटी से बायीं तरफ बदरीनाथ का पहाड़ी रास्ता है जिससे पैदल यात्री बदरीनाथ पहुंच जाते हैं।

## हेमकुण्ड लोकपाल

घंघरिया से सीधे पहाड़ी की चोटी पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो एक छोटी-सी जलधारा नीचे की ओर आती हुई दिखाई देती है जहां से जलधारा निकलती है, यह हेमकुण्ड लोकपाल सरोवर है। 4329 मीटर की ऊंचाई पर घंघरिया से 6 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ की चोटी पर हेमकुण्ड का यह सरोवर अत्यन्त स्वच्छ जल से भरा मिलता है। घंघरिया से हेमकुण्ड तक पूरी चढ़ाई का रास्ता है लेकिन सिखों के द्वारा यहां मार्ग बहुत सुन्दर बन गया है। कहते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


हैं कि यहीं पर लक्ष्मणजी ने तपस्या की थी। इस सरोवर का पुराना नाम दण्ड पुष्करणी है। यहां से काक भुशुण्डि शिखर भी दिखाई देता है। इस सरोवर के सामने बदरीनाथ की ओर देखने से नर और सुमेर पर्वत दिखाई देते हैं। यहां पर लक्ष्मणजी (लोकपाल) का मन्दिर है। साथ ही एक देवी का मन्दिर है।

गुरु गोविन्द सिंह ने अपने 'विचित्र नाटक' में उल्लेख किया है कि सप्तशृंग पर्वत पर हेमकुण्ड नामक स्थान पर उन्होंने तपस्या की थी। इसी के आधार पर सिख गुरुद्वारा की ओर से इतनी ऊंचाई पर गुरु गोविन्दसिंह की स्मृति में एक बहुत बड़ा गुरुद्वारा बनाया गया है, जहां पर यात्री और पर्यटकों के लिए ठहरने व खाने आदि की सुन्दर व्यवस्था है। इस सरोवर से निकलने वाली जलधारा आगे चलकर लक्ष्मणगंगा का नाम पा लेती है। आजकल दूर-दूर से पर्यटक फूलों की घाटी और हेमकुण्ड लोकपाल आते हैं।

सिखों की भी यहां हेमकुण्ड लोकपाल से धार्मिक यात्रा प्रारम्भ हो गयी है और प्रत्येक वर्ष यहां अब हजारों सिख यात्री गुरु गोविन्दसिंह की तपस्यास्थली देखने पहुंचते हैं।

गढ़वाल विकास निगम की ओर से फूलों की घाटी और हेमकुण्ड लोकपाल के लिए ऋषिकेश हरिद्वार से 5 दिन की यात्रा का कार्यक्रम चलाया जाता है। पैकेज टुअर में निगम के द्वारा सभी प्रकार की सुविधायें उपलब्ध करवायी जाती हैं।

## गोविन्द घाट से बदरीनाथ की ओर

घाट चट्टी से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर पाडुकेश्वर नाम का प्राचीन स्थान मिलता है। यही वह स्थान है जहां 5 बदरियों में एक बदरी है जिसका नाम योगध्यान बदरी है। यहां पर भगवान् वासुदेव का मन्दिर है जिसमें वासुदेव की भव्य मूर्ति है। योगध्यान बदरी की मूर्ति धातु की बनी हुई है।

पुराणों में कथा आयी है कि इस पाण्डुकेश्वर में राजा पाण्डु अपनी पत्नी कुंती व माद्री के साथ रहते थे। यहीं पाण्डवों का जन्म हुआ था। आज भी पांडुकेश्वर और उसके समीप वाले क्षेत्र में पांडुओं से सम्मन्धित सभी स्थल मिलते हैं। यहां पर एक प्रचीन मन्दिर है जिसमें पाण्डवों से सम्बन्धित मूर्तियां भी मिलती हैं।

श्री बदरीनाथ जी की उत्सव मूर्ति की पूजा शीतकाल में 6 महीने यहीं होती है। यहां पर काली कमली तथा बदरीनाथ मन्दिर की धर्मशालायें हैं मोटर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



मार्ग बन जाने के कारण पाण्डुकेश्वर का मन्दिर सड़क के नीचे पड़ने के कारण उपेक्षित-सा हो गया है। यात्री सीधे बदरीनाथ की ओर चल पड़ते हैं।

## शेषधारा

पाण्डुकेश्वर से दो किलोमीटर की दूरी पर शेषधारा है। यहां पर शेषधारा तीर्थ है, जहां शेष जी का मन्दिर और रामानुज कोट की एक धर्मशाला है जो पूरी तरह से उजड़-सी गयी है। यहां पर एक पुष्प वाटिका थी। आज भी इस वाटिका में फूल हैं जो बदरीनाथ की पूजा में चढ़ाने के लिए यहां से पहुंचाये जाते हैं। यहीं पर भगवान शेष ने तपस्या की थी, तभी से इसका नाम शेषधारा पड़ा।

## लाम बगड़

शेषधारा से 4 किलोमीटर की दूरी पर लाम बगड़ है। यहां पर एक पुरानी बस्ती थी जो सम्वत् 1998 की बाढ़ से नष्ट हो गयी। अब नयी बस्ती बनी है। यहां काली कमली की धर्मशाला है।

## हनुमान चट्टी

हनुमान चट्टी में घृत गंगा और अलकनन्दा का संगम होता है। लाम बगड़ से 5 किलोमीटर की दूरी पर हनुमान चट्टी है जिसके संगम से कुछ ही आगे अलकनंदा के पार से क्षीर गंगा भी आकर अलकनन्दा में मिल जाती है। पुराणों के अनुसार इस तीर्थ को बैखानस तीर्थ के नाम से ख्याति मिली है। यहां पर बैखानस मुनि ने तपस्या की थी। महाभारत के अनुसार राजा मारुत ने भी इसी स्थान पर यज्ञ किया था।

महाभारत के अनुसार जब पाण्डव वनवासकाल में गन्ध-मार्दन पर्वत की ओर जा रहे थे तो मार्ग में एक दुबला-पतला बन्दर मिला जिसने अपनी पूंछ रास्ते में फैला रखी थी। भीम ने अपने बल के घमण्ड में आकर बन्दर से पूंछ हटाने को कहा। बन्दर ने कहा—मैं वृद्ध हूं इसलिए तुम्हीं हमारी पूंछ हटाकर अलग कर दो। महाबली भीम ने पूंछ उठानी चाही परन्तु उससे हिली तक नहीं। अन्त में भेद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


खुल गया और हनुमान जी ने अपना असली रूप दिखाया और अन्तर्धान हो गये। तभी से इस चट्टी का नाम हनुमान चट्टी पड़ा।

## हनुमान चट्टी से बदरीनाथ की ओर

हनुमान चट्टी से बदरीनाथ मोटर मार्ग द्वारा 11 किलोमीटर और पैदल मार्ग से 8 किलोमीटर है। 5 किलोमीटर पर कंचनगंगा पड़ती है। एक किलोमीटर चलकर देवदेखनी अर्थात् देवदर्शनी स्थान आ जाता है। यहीं से बदरीनाथ पुरी के प्रथम दर्शन होते हैं। इसीलिए इस स्थान का नाम देव दर्शनी पड़ गया। यहां पर पहुंचते ही सम्पूर्ण घाटी जय बदरी विशाल के जय-नारों से गुंजायमान हो जाती है। देवदर्शनी में विघ्नविनाशक गजानन गणपति के दर्शन होते हैं। यहां पर चढ़ाई समाप्त हो जाती है और बदरीनाथ मन्दिर तक बिलकुल सीधा मार्ग जाता है। ज्यों-ज्यों यात्री आगे बढ़ते हैं, बदरी विशाल का स्वर्ग शीर्ष दिखाई देने लगता है। अलकनन्दा के उस पार जिस तरफ बदरीनाथ पुरी स्थित है, नीलकण्ठ पर्वत दर्शकों को अपनी ओर खींचने में सक्षम होता है। भगवान बदरी विशाल की जय-जयकार करते हुए बदरीनाथ पुरी में पदार्पण करते हैं।

## बदरी धाम

भारतवर्ष के चार पवित्र धामों में बदरीनाथ धाम का विशेष महत्त्व है। हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार बदरीनाथ की यात्रा को सम्पूर्ण किये बिना तीर्थयात्रा को पूर्ण नहीं समझा जाता।

बदरीनाथ गढ़वाल मण्डल के चमोली जिले में पैन खण्डा क्षेत्र में विष्णुगंगा की 4 किलोमीटर लम्बी और एक किलोमीटर चौड़ी एक उपत्यका में तप्तकुण्ड पर स्थित है। 3110 मीटर की ऊंचाई पर भी अपनी प्राकृतिक छटा के लिए विख्यात है।

बदरीनाथ मूलतः बदरीनाथ पर्वत श्रेणी में आता है। बदरीनाथ पर्वत श्रेणी में 7 मुख्य शिखर हैं—चौखम्भा (7140 मीटर), बदरीनाथ (7138 मीटर), केदारनाथ (6940 मीटर), नीलकण्ठ (6596 मीटर), कुंर्गलिग (6480मीटर), नर पर्वत (5910 मीटर) और नारायण पर्वत (5935 मीटर)। इसी श्रेणी के पीछे कामेथ (गन्ध-मादन, पर्वत श्रेणी है जो गढ़वाल से तिब्बत को अलग करती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


# विशाला पुरी

पुराणों में श्री बदरीनाथ जी को श्री विशालपुरी के नाम से भी पुकारा गया है। स्कन्दपुराण में लिखा है कि देवताओं, ऋषियों व तीर्थों का निवासस्थान यहां होने के कारण इसे विशाला कहा गया।

वाराहपुराण में कल्कि द्वादशी के व्रत के प्रसंग में सूर्यवंश के राजा विशाल की कथा है। उसमें लिखा है कि राजा विशाल युद्ध में शत्रुओं से पराजित होने पर बड़े दुखी हुए और हिमालय के गन्धमादन पर्वत पर जाकर भगवान बदरीनाथ की तपस्या करने लगे। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर नर और नारायण राजा के सामने प्रकट होकर बोले—राजन्, हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हैं, कोई वर मांगो। यह वचन सुनकर राजा ने विनती के साथ कहा कि मैं आप दोनों का परिचय पूछना चाहता हूं। नर बोले—तुम अपनी तपस्या से जिनको प्रसन्न करना चाहते हो हम वे ही विष्णु के पृथक-पृथक अवतार हैं। इसके पश्चात् राजा ने उनकी पूजा-प्रार्थना की और भक्तिभाव से कहा—यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरा छिना हुआ राज्य मुझे वापस दिला दें। भगवान ने उनकी प्रार्थना सुनकर उनका राज्य लौटा दिया। साथ में उनसे यह भी कहा कि तुम्हारा नाम भी हमारे नाम से हमेशा यहां जुड़ा रहेगा। तभी से इस स्थान का नाम विशालापुरी भी कहा जाने लगा।

नर और नारायण का उल्लेख तो कई पुराणों में आया है। वामनपुराण में प्रह्लाद के साथ नर नारायण के युद्ध के पश्चात् उत्तराखण्ड क्षेत्र में जाकर तपस्या करने का वर्णन है। देवी भागवत के चतुर्थ स्कन्ध में भी नर और नारायण का विस्तार से वर्णन हुआ है।

पौराणिक कथा प्रसिद्ध है कि सतयुग के नर और नारायण द्वापर युग में अर्जुन और कृष्ण के रूप में अवतरित हुए क्योंकि कलिकाल में भगवान कलि के दोष के कारण साक्षात् दर्शन नहीं दे सकते थे इसलिए ऋषियों को आदेश दिया कि नारद कुण्ड में मेरी दिव्य मूर्ति है उसे यहां स्थापित करो। नारद कुण्ड से देवताओं द्वारा भगवान की मूर्ति निकालने का वर्णन वृहद् पुराण के 67 अध्याय के 35 से 39 श्लोकों में आया है। इसीलिए इस क्षेत्र का नाम नारदीय क्षेत्र भी है। यही इस क्षेत्र का प्रधान अर्चक माना जाता है। स्कन्द पुराण में बदरी क्षेत्र के चार नाम हैं—सतयुग में मुक्तिप्रदा, त्रेता में योगसिद्धा, द्वापर में विशाला और कलियुग में बदरीकेश्वर। इन सन्दर्भों से स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र को विष्णु क्षेत्र के रूप में विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। इसको सृष्टि के प्रारंभिक युग में दक्ष के परिवार से सम्बन्धित किया गया है।। एक और कथा मिलती है कि दक्ष की तेरहवीं पुत्री का जब धर्म से विवाह हुआ था तब नर और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



नारायण की उत्पत्ति हुई थी। यहां सर्वप्रथम पहुंचने वाले अथवा निवास करने वाले धर्म और मूर्ति सिद्ध होते हैं, जिनके पुत्र नर और नारायण थे। इस सम्बन्ध में एक कथा इस प्रकार आती है कि हिमालय के पांचों खण्डों में पहले शिवजी का आधिपत्य था परन्तु जब नारायण ने बालि का वेश धारण करके छल से पार्वती के वात्सल्य स्नेह का लाभ उठाकर उन्हें यहां से अन्यत्र केदारनाथ चले जाने पर विवश कर दिया तब से यह वैष्णव तीर्थ हो गया।

महाभारत में बदरीकाश्रम का उल्लेख है। पांडवों का विवरण है। यह भी कथा आती है कि शिवजी को भी इसी स्थान पर अमोघ शान्ति मिली थी। पितृ-हत्या के दोष को निपटाने का भी यह पवित्र वैष्णव तीर्थ है।

## बदरीनाथ मन्दिर

बदरीनाथ का मन्दिर उत्तराखण्ड शैली का कटे पत्थरों का बना हुआ है। यह मन्दिर त्रिरथ है। इसमें उरुश्रृंग नहीं है। इसको स्थानीय पत्थरों से बनाया गया है। इसके तीन भाग हैं—गर्भगृह, अर्द्धमण्डप तथा सिंहद्वार। गर्भगृह का निर्माण प्राचीन हिन्दू वास्तुकला के अनुसार है। अर्द्धमण्डप और सिंहद्वार आधुनिकता को लिये हुए हैं। बदरीनाथ मन्दिर में प्रवेश करने से पहले दाहिनी ओर नारद कुण्ड के गरम पानी में नहाना उत्तम समझा गया है। नहाने के बाद मन्दिर में प्रवेश करने के लिए सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। गर्भगृह के बाहर छोटा-सा-सभा मंडप है। उसके बाहर उससे कुछ बड़ा मंडप है। आजकल इस मन्दिर का जीर्णोद्धार किया जा रहा है।

भगवान बदरी विशाल के मन्दिर के दाहिनी ओर परिक्रमा में तथा मंडप के निकट ही एक बिना धड़ वाली मूर्ति दिखाई देती है, यह घंटाकर्ण की मूर्ति है। घंटाकर्ण इस क्षेत्र के द्वारपाल और कोतवाल हैं। मन्दिर की पूजा करने से पहले घंटाकर्ण की पूजा करना आवश्यक समझा जाता है। बदरीनाथ मन्दिर में मुख्य मूर्तियों में भगवान की सालिग्राम सिल द्वारा प्रकट हुआ गृह है। मुख्य मूर्ति के अलावा गरुड़, कुबेर आदि देवताओं की मूर्तियां यहां पर मिलती हैं। मन्दिर से बाहर लक्ष्मी जी का मन्दिर है। मन्दिर के पास ही लक्ष्मण जी का एक छोटा-सा मन्दिर है। इसके साथ ही शंकराचार्य की गद्दी भी मन्दिर के पीछे है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## बदरीनाथ के अन्य तीर्थ

बदरीनाथ मन्दिर के सिंहद्वार से नीचे उतरकर आदिगुरु शंकराचार्य का मन्दिर है। इसमें शिवलिंग स्थापित है। इस मन्दिर के थोड़ा नीचे उतरने पर आदि केदार का मन्दिर है। बदरीनाथ के दर्शन करने से पहले घण्टाकर्ण की तरह आदि केदार के दर्शन करना आवश्यक समझा जाता है। आदि केदार के दर्शन करके कुछ सीढ़ियां नीचे उतरने पर तप्तकुण्ड या अग्नि तीर्थ के दर्शन होते हैं। इस तप्तकुण्ड में स्नान करने का पुराणों में भारी माहात्म्य लिखा है। इस तप्तकुण्ड के नीचे पांच शिलायें हैं—(1) गरुड़ शिला—केदारनाथ मन्दिर और अलकनन्दा के बीच की शिला। इसी के नीचे से उष्णजल तप्तकुण्ड में आता है। (2) नारदशिला—तप्तकुण्ड से अलकनन्दा तक गई शिला जिसके नीचे नारदकुण्ड है। (3) मारकण्डेय शिला—नारदकुण्ड के पास अलकनन्दा की धारा में है। (4) नरसिंह शिला—नारदकुण्ड के ऊपर एक सिंहाकार शिला है, और (5) वाराह-शिला—अलकनन्दा के जल में एक उच्चशिला है। ब्रह्मकपाल (कपाल-मोचन तीर्थ) तप्तकुण्ड से ऊपर सड़क पर लगभग 3 सौ गज दूर अलकनन्दा के तट पर एक शिला है, जिस पर यात्री पिण्डदान करते हैं। इस ब्रह्मकाल तीर्थ के नीचे ब्रह्मकुण्ड है। तप्तकुण्ड से लगभग 2 सौ गज की दूरी पर ब्रह्मकाल है। इसकी महत्ता के पीछे कथानक है कि यहां ब्रह्मा के पांचों कपाल हैं, जिसे शिवजी ने क्रोधवश काट दिया था। इससे शिवजी पर ब्रह्महत्या लग गई थी। ब्रह्महत्या दोष से मुक्ति पाने के लिए शिवजी सभी तीर्थों मे घूमे परन्तु ब्रह्महत्या से मुक्त नहीं हो सके। अन्त में इस क्षेत्र में आकर इस स्थान पर पिण्डदान करने से उन्हें ब्रह्महत्या से छुटकारा मिला था। इसीलिए तीर्थयात्री अपने पितरों की अक्षय मुक्ति के लिए यहां श्राद्ध कर्म अवश्य करते हैं। ऐसा विश्वास है कि ब्रह्मपाल में पिण्डदान देने के बाद पिण्डदान की आवश्यकता नहीं रहती।

## माता मूर्ति

ब्रह्मकुण्ड से आगे गंगातट की ओर जाने पर अलकनन्दा के मोड़ पर अत्रि-अनुसूया तीर्थ है। उससे आगे माणा की सड़क पर चलने से इन्द्रधारा नामक श्वेत झरना इन्द्रपथ तीर्थ कहलाता है। इससे आगे नर और नारायण की माता धर्म की पत्नी मूर्ति देवी का छोटा-सा मन्दिर है। वामन द्वादशी अर्थात् जन्माष्टमी के 18 दिन बाद बदरीनाथ मन्दिर से उद्धव मूर्ति का जुलूस निकाला जाता है और माता-पुत्र का मिलाप कराकर पूजा होती है। उद्धव मूर्ति जिसे कहा जाता है, वह वास्तव में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



चांदी की बनी हुई चतुर्भुज विष्णु मूर्ति है। उसका मूल नाम उत्सव मूर्ति है। इसी के पीछे पूजा भाद्र शुक्ला द्वादशी को होती है और विशाल मेला लगता है। भोटिया लोग भाद्र शुक्ला द्वादशी को अनेक प्रकार के नृत्य करते हैं और नृत्योत्सव मनाते हैं। शीतकाल में इसी चतुर्भुज विष्णु की कपाल मूर्ति की पूजा जोशीमठ में की जाती है।

## शेष नेत्र

अलकनन्दा की धारा के साथ-साथ बदरीनाथ मन्दिर से डेढ़ किलोमीटर चलने पर अलकनन्दा के बाएं तट पर एक विशाल शिला है जिस पर सर्प के नेत्र अंकित हैं। इसको शेष नेत्र नाम दिया गया है। यहां पर भी यात्री लोग पूजा करने पहुंचते हैं। ऐसा कहा जाता है कि यहां पर शेषनाग भगवान विष्णु की आराधना निरन्तर करते रहते हैं।

## चरणपादुका तीर्थ

बदरीनाथ मन्दिर के पीछे सीधे ऊपर नीलकंठ पर्वत पर चढ़ने पर चरणपादुका तीर्थ है। यहां विष्णु के चरणों के चिह्न शिला पर बने हैं। यहां श्रद्धालु व्यक्ति अधिक संख्या में पहुंचते हैं। इस तीर्थ से आगे कूर्म तीर्थ और नर-नारायण आश्रम है।

## उर्वशी मन्दिर

यह मन्दिर बदरीनाथ पुरी के दाहिनी ओर वामणी गांव में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि जब नर और नारायण यहां तपस्या कर रहे थे, इन्द्र ने अत्यन्त रूपवती अप्सरा उर्वशी को नारायण की तपस्या को भंग करने के लिए यहां भेजा। यहीं इन्द्र का घमण्ड नारायण ने चूर किया था। आज उसकी स्मृति में उर्वशी का मन्दिर वामणी गांव में हैं, जहां अत्यन्त भव्य मूर्ति विराजमान है। नारायण की बायीं जांघ पर उर्वशी बैठी हुई है और नारायण भुजाओं में शंख, चक्र और गदा लिये हुए स्थित हैं। यहीं पर एक जलकुण्ड है जिसे उर्वशी के नाम से जाना जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



## नीलकण्ठ पर्वत

बदरीनाथ पर्वत के पीछे शंखाकृति में नीलकण्ठ पर्वत विराजमान है। धार्मिक दृष्टि से लोगों का विश्वास है कि स्वयं शिवजी की आकृति इस पर्वत पर दिखाई देती है। इस पर्वत की सुन्दरता को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं।

## माणा ग्राम

भारत की सीमा का आखिरी माणा गांव बदरीनाथ से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्राचीन पौराणिक कथाओं के आधार पर यही माणा ग्राम मणिभद्र यक्ष का मणिभद्र आश्रम है और इसी को माणा भद्रपुरम कहते हैं। माणा गांव की सभी कार्य पद्धतियां बदरीनाथ से जुड़ी हुई हैं। वर्ष में माता मूर्ति की जो पूजा होती हैं उसके लिए माणा गांव से ही माता को चोली भेंट-स्वरूप भेजी जाती है। यह चोली माणा ग्राम की महिलायें अपने हाथों से बुनकर तैयार करती हैं। माणा गांव में राजपूत जाति के मारछा लोग रहते हैं, जिन्हें भोटिया नाम से भी जाना जाता है।

## केशव प्रयाग

माणा के समीप ही विष्णु गंगा और सरस्वती के संगम को केशव प्रयाग कहते हैं। यहां पर कई ऋषियों ने तपस्या की थी।

## भीम पुल

माणा गांव के पास ही सरस्वती नदी के ऊपर बहुत बड़ी शिला है जो कि पुल का कार्य करती है। ऐसी कथा है कि इस विशाल शिला को शक्तिशाली भीम ने ही सरस्वती नदी को पार करने के लिए यहां रखा था जिससे कि वे नदी को पार करते। स्वर्गारोहण की ओर बढ़ते हुए जब पाण्डव आगे बढ़ रहे थे तब भीम ने इस विशाल शिला को नदी के ऊपर बिछाकर पुल बना लिया था। इसीलिए इस विशाल शिला को भीम पुल के नाम से जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



# गुफाएं

प्राचीन पुराणों के अनुसार बदरीनाथ के समीप वाली गुफाओं का अत्यधिक महत्त्व है। माणा गांव के स्कूल के पास एक छोटी-सी गुफा है जिसे गणेश की गुफा के नाम से जाना जाता है। इस गुफा से लगभग 20 गज ऊपर जाने पर एक बड़ी गुफा मिलती है जिसको व्यास गुफा के नाम से पौराणिक इतिहास में जाना जाता है। पुराणों में लिखा है कि कृष्ण द्वैपायन व्यास ने वेदों का सम्पादन, 18 पुराण महाभारत का लेखन-कार्य गणेश जी के द्वारा यहीं किया था। जनमेजय ने प्रथम हत्या के निवारण के लिए इसी स्थान पर शुकदेव जी से महाभारत की कथा सुनी थी। इसके ऊपर एक और गुफा है जिसे मुचुकुन्द गुफा कहते हैं। यहां दैत्यों को हराने के बाद सूर्यवंशी नरेश मुचुकुन्द ने दीर्घ विश्राम के लिए लम्बी नींद ली थी। इसी गुफा से एक रास्ता थुंजिग मठ होते हुए कैलाश मानसरोवर को जाता है। हिन्दू धर्म के अनुसार चारों धामों की यात्रा के बाद इसी मार्ग को कैलाश मानसरोवर की यात्रा करने का उत्तम मार्ग बताया गया है। यों तो कैलाश मानसरोवर जाने के लिए नीति घाटी और पिथौरागढ़ के नारायण आश्रम से भी रास्ता जाता है परन्तु धार्मिक दृष्टि से बदरीनाथ से होकर ही जाने का उत्तम और फलदायक मार्ग बताया गया है।

बदरीनाथ में प्रातःकाल, दोपहर और सन्ध्या के समय वेदमन्त्रों के साथ मन्दिर के कपाट खुलते हैं। रावल पहले भगवान को स्नान करवाता है और फिर उनका शृंगार करता है। शृंगार करने के पश्चात जो भव्य आरती बदरीनाथ विशाल की होती है वह देखने लायक होती है। भक्तगण विष्णु सहस्रनाम का जप कर भगवान विशाल की आराधना करते हैं। नारद कुण्ड में स्नान करने के बाद ही दर्शन किया जाता है और मन्दिर की परिक्रमा करने के बाद सभी सहायक मन्दिरों में पूजा-अर्चना की जाती है।

आज बदरीनाथ धाम अत्यधिक आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त है। यहां बदरी-केदार की धर्मशालाएं, काली कमली की धर्मशालाएं, परमार्थ निकेतन की धर्मशालाएं तथा बिड़ला, डालमिया आदि धन-कुबेरों की अनेक धर्मशालाएं हैं जिनमें रहने की उत्तम व्यवस्था है। आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त बदरीनाथ धाम अब हर यात्री एवं पर्यटक के लिए सुगम एवं सरल हो रहा है। आजकल दिल्ली से कार द्वारा प्रातः चार बजे चलकर सन्ध्या के समय भगवान विष्णु की शयन आरती के समय तक यात्री पहुंच जाते हैं और दूसरे दिन भगवान की प्रातःकालीन आरती में सम्मिलित होकर रात तक दिल्ली लौट आते हैं। ऋषिकेश कोटद्वार से तो प्रायः प्रतिदिन यात्री आते-जाते हैं। ऋषिकेश से बदरीनाथ जाने वाले लोगों के लिए निम्नलिखित दूरी से स्थिति की जानकारी हो जाती है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



# ऋषिकेश से बदरीनाथ

| स्थान | समुद्र तल से ऊंचाई | दूरी (कि०मी०) एक स्थान से दूसरे स्थान तक | दूरी (कि०मी०) कुल दूरी |
|---|---|---|---|
| ऋषिकेश | 340 | —— | —— |
| देवप्रयाग | 472 | 70 | 70 |
| श्रीनगर | 579 | 35 | 105 |
| रुद्रप्रयाग | 610 | 34 | 139 |
| घोलतिर | 645 | 10 | 149 |
| गोचर | 790 | 10 | 159 |
| कर्णप्रयाग | 795 | 11 | 170 |
| नन्दप्रयाग | 914 | 22 | 192 |
| चमोली | 1069 | 10 | 202 |
| बिरही | 1100 | 8 | 210 |
| पीपलकोटी | 1311 | 9 | 219 |
| गरुड़ गंगा | 1372 | 5 | 224 |
| टंगनी | 1677 | 6 | 230 |
| हेलंग | 1524 | 6 | 236 |
| जोशीमठ | 1890 | 14 | 250 |
| विष्णुप्रयाग | 1372 | 10 | 260 |
| गोविन्द घाट | 1829 | 10 | 270 |
| पाण्डुकेश्वर | 1829 | 4 | 274 |
| हनुमान चट्टी | 2286 | 9 | 283 |
| देवदर्शनी | 3101 | 13 | 296 |
| श्री बदरीनाथ | 3110 | 2 | 298 |

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


# बदरीनाथ के आगे वसुधारा

बदरीनाथ धाम से आगे भी हिन्दुओं के अनेक तीर्थ हैं जहां धार्मिक और पर्यटन की दृष्टि से प्रकृति-प्रेमी व धर्मानुयायी आते-जाते रहते हैं। बदरीनाथ से जब हम माता मूर्ति की ओर जाते हैं तो आगे चलकर हमें केशव प्रयाग मिलता है जहां पर सरस्वती और अलकनन्दा का संगम होता है। सरस्वती माणा ग्राम की ओर से आती है। इसी माणा ग्राम से रास्ता तिब्बत की ओर कैलाश मानसरोवर की ओर गया है। दूसरा रास्ता केशव प्रयाग से बायीं ओर मुड़ता है। बदरी नाथ से 8 किलोमीटर की दूरी पर और माणा गांव से तीन किलोमीटर की दूरी पर गांव से दाहिनी तरफ विश्वविख्यात 'वसुधारा' के दर्शन होते हैं। विश्वप्रसिद्ध वसुधारा 122 मीटर की ऊंचाई से नीचे गिरने वाला जल प्रपात है। इस प्रपात से जल की धाराएं बड़े वेग के साथ नीचे गिरती रहती हैं। ऐसा लगता है कि जैसे श्वेत मोतियों की झड़ी लगी हो। इस धारा के विषय में स्कन्द पुराण में लिखा है कि पापियों के ऊपर इसकी बूंदें नहीं पड़तीं। यह भी कथा है इस अलकनन्दा की जल-धाराओं के समीप अष्ट वसुओं ने तपस्या की थी इसीलिए इसका नाम वसुधारा पड़ गया। बदरीनाथ से बहुत से धार्मिक यात्री अलकनन्दा के इस पवित्र स्थान पर जाना नहीं भूलते।

# वसुधारा से लक्ष्मी वन

माता मूर्ति के मन्दिर से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर और वसुधारा से 4 किलोमीटर की दूरी पर अतिसौन्दर्यपूर्ण लक्ष्मी वन है। लक्ष्मीजी यहां प्रकृति के रूप में निवास करती हैं। कहते हैं कि यहीं पर लक्ष्मीजी ने तप किया था। भोजपत्रों के इस विशाल वन में नाना प्रकार के फूल खिले रहते हैं। जुलाई से अक्टूबर के मध्य तक लक्ष्मी वन में विविध प्रकार के फूलों की बहार रहती है और दूर तक फैले हुए मैदान में फूल ही फूल दृष्टिगोचर होते हैं। सत्यपथ की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए यही रास्ता है। और वे बदरीनाथ से 12 किलोमीटर चल-कर प्रायः वहीं रात्रि-विश्राम करते हैं।

# सहस्रधारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant
लक्ष्मी वन से लगभग 3 किलोमीटर सत्यपथ के मार्ग पर सहस्रधारा तीर्थ मिलता

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



है। यहां पर पहाड़ से निकलने वाली अनेक धाराएं प्रवाहित होती हैं, जो अलकनन्दा में मिल जाती हैं। पुराणों में यह स्थान पंचधारा के नाम से प्रसिद्ध है। पुराणों में कथा इस प्रकार आती है कि भगवान् की आज्ञा के अनुसार प्रयाग, पुष्कर, नैमिष्य, गया और कुरुक्षेत्र ने यहां तप कर तेज प्राप्त किया था, तभी से यह प्रसिद्ध तीर्थ हुआ।

## चक्रतीर्थ

लक्ष्मी वन से 9 किलोमीटर की दूरी पर और बदरीनाथ से 21 किलोमीटर की दूरी पर स्वर्गारोहण के रास्ते पर चक्रतीर्थ अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण स्थान मिलता है। यह वह स्थान है जहां पर नर और नारायण पर्वत मिलते हैं। यह घाटी अत्यन्त सुन्दर और गोलाकार आकार में है। यहां पर अनेक कोणों से पानी की छोटी-छोटी जल-धाराएं आकर बहती हुई मिलती हैं। ऐसी कथा कही जाती है कि अर्जुन ने इसी चक्रतीर्थ नामक स्थान पर कौरवों को पराजित करने के लिए तपस्या की थी और पाशुपत-अस्त्र यहीं प्राप्त किया था। चक्रतीर्थ चक्र के आकार का मैदान है जो तालाब जैसा प्रतीत होता है। चक्र तीर्थ के दूसरी तरफ गौमुख हिम नद है। जहां से भागीरथी निकलती है। यहां से स्वर्गारोहण की चोटी भी साफ दिखाई देती है।

## सतोपन्थ ताल

समुद्र तल से 4402 मीटर की ऊंचाई पर एक किलोमीटर की परिधि में फैला हुआ तीन कोणों में स्थित सतोपन्थ ताल अपनी अद्भुत छटा के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। पापों से मुक्ति दिलाने वाला यह ताल सबसे महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस तालाब की विशेषता यह है कि इसके तीन कोण हैं जिसके विषय में यह कहा जाता है कि इसके तीनों कोणों पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश सदा विराजमान रहते हैं और एक साथ एक स्थान पर यदि तीनों देवताओं का कोई स्थान है तो यही सतोपन्थ ताल है। एकादशी के दिन यहां पर भगवान् विष्णु स्वयं स्नान करने के लिए आते हैं, ऐसा कहा जाता है। इसीलिए एकादशी के दिन यहां भक्तगण अधिक संख्या में आते हैं। वसुधारा से सतोपन्थ तल अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण क्षेत्र से रास्ता जाता है परन्तु आने-जाने के लिए मार्ग इतना अच्छा नहीं, जिसके कारण लोग बड़ी कठिनाई से पहुंचते हैं। प्रकृति इतनी लुभावनी है और दृश्य इतना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


आकर्षक है कि आम रास्ता न होने पर भी प्रकृति-प्रेमी और धार्मिक यात्री यहां बड़े उत्साह के साथ जाते रहते हैं। सतोपन्थ ताल बदरीनाथ से 25 किलोमीटर और चक्र तीर्थ से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

## सोम कुण्ड

सतोपन्थ से लगभग ढाई किलोमीटर आगे सोम कुण्ड है। कहते हैं कि इस कुण्ड का पानी चन्द्रमा की कला के समान घटता-बढ़ता रहता है और अमावस के दिन बिलकुल सूख जाता है। इस स्थान पर चन्द्रमा ने स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए तप किया था। यह वही स्थान है जहां पर भगवान् ने चन्द्रमा को ग्रह-नक्षत्रों का अधिपति बनाकर सम्मानित किया था। तभी से इस कुण्ड की प्रसिद्धि है।

## सूर्य कुण्ड

चन्द्र कुण्ड से डेढ़ किलोमीटर आगे स्वच्छ जल का एक-दूसरा कुण्ड सूर्य कुण्ड है। इस कुण्ड से निर्मल जलधारा निरन्तर बहती रहती है। इस कुण्ड की प्राकृतिक सुन्दरता भी अद्भुत है।

सूर्य कुण्ड से दाहिनी और विष्णु कुण्ड है। यह वही कुण्ड है जहां से अलकनन्दा की मूल जलधारा निकलती है। सूर्य कुण्ड के सामने देखने पर बर्फीले पहाड़ की सीढ़ियां-सी दिखाई देती हैं। इसी स्थान पर नर-नारायण पर्वत भी आपस में मिल गये हैं। यही सीढ़ीनुमा पर्वत स्वर्गारोहिणी है। महाभारत के अनुसार यहीं से पाण्डवों ने स्वर्गारोहण किया था।

ये जितने भी अब तक के तीर्थ हैं ये सब-के-सब नारायण पर्वत पर स्थित है जो भी यात्री या पर्यटक सतोपन्थ, सोमकुण्ड और सूर्य कुण्ड की ओर गये हैं, उनका कहना है कि लक्ष्मी वन से लेकर सूर्य कुण्ड तक का क्षेत्र प्राकृतिक सुन्दरता के लिए अद्भुत है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


## राम गुफा

नर पर्वत की ओर जब सतोपन्थ से लौटते हैं तो एक अद्‌भुत गुफा मिलती है जिसका नाम राम गुफा है। आनन्द रामायण में भगवान् रामचन्द्र जी का सतोपन्थ तक जाना बतलाया गया है। वे इसी गुफा में रहे थे।

## अलकापुरी

अलकापुरी तो हिमनद के किनारे पर बालकुन चोटी पर बदरीनाथ से 15 किलोमीटर की दूरी पर और लक्ष्मी वन से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह वही क्षेत्र है जहां कुबेर की राजधानी थी और यक्ष और गन्धर्व रहते थे। नारायण पर्वत अलकापुरी को दो भागों में विभाजित करता है। एक भाग सतोपन्थ से गोमुख तक और दूसरा भाग अलकापुरी को हिमनद की ओर बांट देता है। अलकापुरी से अलकनन्दा और गोमुख सतोपन्थ हिमनद से भागीरथी निकलती है। यहीं पर नारायण पर्वत की चोटी पर सुमेरु पर्वत है। प्रकृति-प्रेमी यहां पहुंचकर अद्‌भुत प्रकृति का जहां दर्शन करते हैं वहीं गंगा के मूल स्रोत का भी दर्शन कर अपने पापों से मुक्ति पाते हैं। आज भी लोगों का कहना है कि अलकापुरी में यक्ष और गन्धर्व अज्ञात रूप से निवास करते हैं। अलकनन्दा हिमनद से दाहिनी तरफ नीलकण्ठ पर्वत है। यहीं से उत्तर की ओर चौखम्भा श्रेणियां भी चली गयी हैं।

बदरीनाथ की यात्रा करने वाले यात्री जहां सतोपन्थ और स्वर्गारोहण के दर्शन करते हैं वहां वे लौटते समय किसी भी समय पंच बदरियों के दर्शन भी करते हैं।

## पंच बदरी

इसी क्षेत्र में जैसे पंच केदार है उसी तरह से पंच बदरी भी विख्यात है।

## विशाल बदरो

यह विशाल बदरी बदरीनाथ जी में स्थित है और आककल सबसे अधिक आराधना भगवान विष्णु की यहीं होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


## योगध्यान बदरी

जोशीमठ और बदरीनाथ के रास्ते पर जोशीमठ से 20 किलोमीटर की दूरी पर पाण्डुकेश्वर में स्थित है। यहां पाण्डवों के पिता पाण्डु ने तपस्या की थी।

## भविष्य बदरी

भविष्य बदरी जोशीमठ से मलारी के रास्ते पर जोशीमठ से 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो तपोवन के पास है।

## वृद्ध बदरी

वृद्ध बदरी अनी मठ में जोशीमठ से 7 किलोमीटर की दूरी पर पीपल कोटी के रास्ते पर स्थित है।

## आदि बदरी

आदि बदरी कर्णप्रयाग से 16 किलोमीटर की दूरी पर रानी खेत के रास्ते पर स्थित है। इन पांचों की यात्रा करने का भी माहात्म्य है।

यात्री इन सभी स्थानों के दर्शन करने के बाद बदरीनाथ से जोशीमठ होते हुए कर्णप्रयाग से लौट आते हैं। कर्णप्रयाग से कुछ यात्री कुमाऊं के विभिन्न धार्मिक स्थानों के दर्शन करने चले जाते हैं, कुछ लोग बागेश्वर जाते हैं तो कुछ जागेश्वर की ओर। कुछ प्रकृति-प्रेमी नैनीताल, कौसनी की ओर चले जाते हैं।

अधिकांश यात्री कर्ण प्रयाग से ऋषिकेश होकर हरिद्वार लौट आते हैं, अथवा श्रीनगर से कोटद्वार होते हुए नजीबाबाद से गाड़ी पकड़ते हैं।

यात्रा में हम आपके साथ निरन्तर रहे हैं। यों तो यात्रा का मौसम मई से लेकर नवम्बर तक रहता है और यात्री और पर्यटक निरन्तर आते-जाते रहते हैं। फिर भी पर्वतीय अंचल की यात्रा होने के कारण हमारा आग्रह है कि अपने साथ गरम कपड़े व अन्य प्रकार की यात्रा की सामग्री ले जाना श्रेयष्कर है। जो लोग यात्रा में बदरीनाथ से ऊपर जाते हैं, उन्हें अपने साथ स्टोव और खाने आदि की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



चीजें ले जाना चाहिए क्योंकि बदरीनाथ से आगे मार्ग कठिन है और यात्रियों को अपने साथ ही खाने की वस्तुओं को ले जाना पड़ता है। पर्वतीय यात्रा के लिए अगस्त से सितम्बर-अक्तूबर तक का समय विशेष उपयुक्त रहता है।

केदार-बदरी की यात्रा में हम आपके साथ-साथ रहे हैं। विश्वास है, आपको तपोभूमि बदरीकाश्रम की धरती ने अपनी ओर अवश्य आकर्षित किया होगा। तो अन्य मित्रों के साथ स्वर्गभूमि (उत्तराखंड (गढ़वाल) के अन्य क्षेत्रों के दर्शन के लिए भी आइए।

□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant